Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

दान

समचें दान में धर्म कहें तो,
नांइ जिण धर्म सेली।
आक नें गाय रो दूध अग्यांनी,
कर दीयो भेल सभेली।।

जो दानमात्र में धर्म कहता है वह जैनधर्म की शैली को नहीं समझ पाया। वह अज्ञानी मनुष्य गाय और आक के दूध को एक साथ मिला रहा है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 52 • 29 सितम्बर - 05 अक्टूबर, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 27-09-2025 • पेज 20 ₹ 10 रुपये

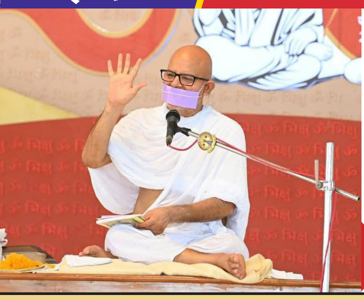

किसी कार्य को बीच में छोड़ देना है कायरता का प्रतीक : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

मोह की मूढ़ता से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 18

Address Here

जिनेश्वर देव द्वारा प्रवेदित सत्य पर हो आस्था : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
21 सितम्बर, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में कुछ चीजें स्पष्ट होती हैं और कुछ चीजें अदृश्य होती हैं, जो सामान्य व्यक्ति के लिए स्पष्टतया अभिव्यक्त नहीं होतीं। जैसे जैन दर्शन में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और जीवास्तिकाय अमूर्त होते हैं। आकाश को तो हम फिर भी जानते हैं, पर धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय आम आदमी के लिए अज्ञात और अस्पष्ट हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश और जीव – इन चारों के समान तुल्य असंख्य प्रदेश होते हैं, ऐसा शास्त्रों में बताया गया है; परन्तु ये बातें हम प्रत्यक्षतः नहीं जानते। यदि सामान्य व्यक्ति ये सारी बातें जान ले तो फिर सामान्य और सर्वज्ञ में कोई अंतर नहीं रहेगा। 'आयारो' में कहा गया है कि वही सत्य है, वही निःशंक है, जो जिनेश्वरों द्वारा प्रवेदित है। परन्तु पुस्तकों में जो कुछ लिखा हुआ है, वह सत्य ही है – यह कहा नहीं जा सकता, क्योंकि उनके लेखन, संपादन, प्रकाशन में त्रुटियां भी हो सकती हैं। जिनेश्वर भगवान द्वारा जो प्रवेदित है, वही सत्य है। उनमें से कई बातें लुप्त और अज्ञात भी हो सकती हैं, परन्तु जो सत्य है, उसे मेरा समर्थन है। मेरी आस्था सच्चाई के प्रति है और उसकी अनुमोदना है।

शास्त्रों में कई बातें वर्णित हैं। उनके आधार पर हम उन्हें मानते हैं और अपनी धारणा बनाते हैं, प्रत्यक्षतः हम उन्हें नहीं जानते। मानने और जानने में बहुत अंतर होता है। ग्रंथों आदि में आई हुई बातों के आधार पर धारणा बनाना 'मानना' है और स्वयं के प्रत्यक्ष ज्ञान को 'जानना' कहा जा सकता है। हमें शास्त्रों का अनुगमन और अनुश्रवण करने का प्रयास करना चाहिए।

परम पूज्य आचार्यश्री के प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आगम में मानव जीवन को दुर्लभ और मूल्यवान बताया गया है। इस मानव जीवन की मूल्यवत्ता बनी रहे, हमें इस पर ध्यान देना चाहिए।

(शेष पेज 16 पर)

ऊनोदरी के अभ्यास से जीवन रह सकता है संयमित : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
19 सितम्बर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए कहा कि हमारे शास्त्र साधना मार्ग के पथप्रदर्शक हैं। शास्त्र न केवल हमें त्राण देते हैं, बल्कि अनुशासन और मर्यादा में जीने की दिशा भी प्रदान करते हैं।

आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आयारो में ऊनोदरी का विशेष महत्व बताया गया है। ऊनोदरी का अर्थ है पेट में आवश्यकता से कम भोजन डालना। यह साधना, तपस्या और संयम की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

उपवास की क्षमता न होने पर भी यदि मन नियंत्रित है, तो ऊनोदरी का अभ्यास सहजता से किया जा सकता है। यह द्रव्य, समय और आहार की सीमा के आधार पर कई प्रकार से अपनाई जा सकती है। आचार्यश्री ने कहा ऊनोदरी स्वास्थ्य के लिए भी हितकारी है। महीने में कुछ दिन विगय वर्जन (छः प्रकार के खाद्य पदार्थों का त्याग) किया जा सकता है। रात्रि भोजन विरमण, सूर्यास्त से सूर्योदय तक भोजन-पानी का त्याग, महान संयम साधना है। वर्षीतप करने वालों का चौविहार त्याग अत्यंत प्रशंसनीय है। आचार्य प्रवर ने प्रेरणा दी कि गृहस्थ जीवन में भी आंशिक रूप से साधु जीवन के संयम को अपनाया जा सकता है। भोजन, वस्त्र और उपकरणों की अल्पता रखना ऊनोदरी का ही स्वरूप है। साधु जीवन का मूलमंत्र अल्पोपधि है, जिसे गृहस्थ भी सीमित रूप में साध सकते हैं।

पूज्य प्रवर की अमृत देशना के पश्चात् मुनि मदन कुमारजी ने तप और त्याग की महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर धर्मचन्द जैन ने अपनी पुस्तक 'भारतीय जनता पार्टी से मोदी तक' का लोकार्पण आचार्यश्री की पावन सन्निधि में किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हार्दिक शुभकामना

श्रीमती सुमन नाहटा
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की नव मनोनीत अध्यक्षा

राष्ट्र की प्रगति ही जिसका स्वाभिमान है, जो स्वयं को एक सेविका मानती हैं वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महिला मोर्चा की सामाजिक व धार्मिक संगठन की राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती सुमन नाहटा ने आचार्य प्रवर के आशीर्वाद से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के अध्यक्ष के रूप में अहमदाबाद में शपथ ग्रहण की। आप पूर्व में तेरापंथ महिला मंडल दिल्ली की अध्यक्ष, अमृत सांसद, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में सेवा दे चुकी हैं। अणुव्रत महासमिति, जैन विश्व भारती, भाजपा की दिल्ली महिला मोर्चा, तेरापंथ सभा दिल्ली, तेरापंथ महासभा जैसी महनीय संस्थाओं में भी आपने समय समय पर सेवाएं प्रदान की हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार आपके यशस्वी कार्यकाल की मंगल कामना करता है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 सितम्बर - 05 अक्टूबर, 2025

इंद्रियों की गुलामी न करते हुए आत्मदर्शन करने का रहे प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के नव मनोनीत नेतृत्व ने किया शपथ ग्रहण

कोबा, गांधीनगर।
20 सितम्बर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के देदीप्यमान महासूर्य, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि कहीं-कहीं पहले दंड मिलता है और पीछे स्पर्श यानी इंद्रिय सुख मिलते हैं, कहीं-कहीं पहले स्पर्श (इंद्रिय सुख) मिलते हैं और बाद में दंड मिलता है।

हमारी दुनिया में आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनों हैं। आध्यात्मिकता का संबंध आत्मा से है, जबकि भौतिकता का संबंध बाह्य जगत-पौद्गालिक जगत के साथ है। दो विचारधाराएं हैं - एक आस्तिक जगत की और दूसरी नास्तिक जगत की। आस्तिक दर्शन की विचारधारा में आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक, पूर्वजन्म-पुनर्जन्म, पुण्य-पाप का फल आदि विषयों को स्वीकार किया गया है। आत्मा शाश्वत है, जैसा करोगे वैसा पाओगे, कर्मों का फल भोगना पड़ता है आदि बातें आस्तिक दर्शन में प्राप्त होती हैं। अर्थात् आस्तिक दर्शन आत्मा पर आधारित है।

दूसरी विचारधारा नास्तिक दर्शन की है, जिसमें चार्वाक दर्शन है, जहां कहा गया है कि यह दुनिया उतनी ही है जितनी इंद्रियों द्वारा देखी जा रही है, जानी जा रही है। परलोक, स्वर्ग-नरक आदि कुछ भी नहीं है। इसलिए नास्तिक दर्शन का संदेश है कि आगे-पीछे कुछ नहीं है। जब तक यह जीवन है, खूब वैषयिक सुख भोगो। इस शरीर के भस्मीभूत होने के बाद आत्मा आदि कुछ भी नहीं है। इस प्रकार, एक दृष्टि से भौतिकता का आधार नास्तिक दर्शन बन जाता है और आध्यात्मिकता का आधार आस्तिक विचारधारा बन जाती है।

आस्तिक दर्शन में पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को स्वीकार किया गया है, परंतु बहुलतया व्यक्ति को याद नहीं रहता कि मैं कहां से आया हूं। कुछ-कुछ मनुष्यों को अपने पूर्वजन्म की स्मृति हो जाती है, बहुतों को नहीं होती। पिछले जन्म में जब मृत्यु होती है तो एक आवरण-सा आ जाता है और पिछली स्मृति का लोप हो जाता है। स्मृति नहीं होने से अस्तित्व नहीं है, यह सिद्धांत सही नहीं है, क्योंकि इस जन्म में भी जब मनुष्य को दो दिन या दो घंटे के आयु के समय की स्मृति नहीं रहती है तो पूर्वजन्म की स्मृति तो बहुत दूर की बात है।

आयारो में कहा गया है कि जो व्यक्ति इंद्रियों का गुलाम है, वह व्यक्ति धर्म, समाज या राजनीति के क्षेत्रों में ज्यादा कार्य नहीं कर सकता। समाज और राजनीति के क्षेत्र में भी व्यक्ति को कुछ अंशों में त्यागी होना आवश्यक है, इसलिए शासक में भी कुछ इंद्रिय संयम होना चाहिए। कार्यकर्ताओं में भी संयम और सहिष्णुता होती है तो वे सफलता के एक आयाम को प्राप्त कर लेते हैं। कार्यकर्ता सुख-दुख की परवाह नहीं करता है। उसे कैसी भी परिस्थिति मिले, वह सहनशीलता रखता है। निंदा-आलोचना से दुखी नहीं बनता, बल्कि यदि निंदा-आलोचना में कोई सार है तो उससे अपेक्षानुसार अपना परिष्कार करने की भावना रखता है।

चतुर्दशी को हाजरी के संदर्भ में मर्यादाओं की जानकारी देते हुए आचार्य प्रवर ने कहा कि साधु का जीवन साधना का जीवन होता है। संविधान महत्त्वपूर्ण होता है, उसके अनुसार साधुचर्या चलनी चाहिए। संविधान के नियमों के प्रति जागरूकता रखनी चाहिए।

कई बार भौतिक सुखों को पाने के लिए व्यक्ति को पहले दंड पाना पड़ सकता है। इंद्रिय सुख मिलने के बाद भी कभी तकलीफ-दंड मिल सकता है, अतृप्ति हो सकती है। किसी वस्तु के प्रति आसक्ति हो जाए तो उसके जाने पर दंड भी मिल सकता है। इसलिए इंद्रियों का संयम रखने का प्रयास करना चाहिए। साधु-साध्वियों, समणियों को इंद्रिय संयम रखना चाहिए। गृहस्थों को भी पांच बातों पर ध्यान देना चाहिए - बुरा देखना नहीं, बुरा सुनना नहीं, बुरा बोलना नहीं, बुरा सोचना नहीं और बुरा किसी का करना नहीं। सब अच्छा करने का प्रयास करें तो हमारा जीवन अच्छा रह सकता है।

आचार्यश्री तुलसी प्राकृत पुरस्कार - जैन विश्व भारती व के.बी.डी. फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में आचार्यश्री तुलसी-प्राकृत समारोह का आयोजन किया गया। इस संदर्भ में के.बी.डी. फाउंडेशन की मधु दूगड़ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। वर्ष 2024 का आचार्यश्री तुलसी प्राकृत पुरस्कार डॉ. सुषमा सिंघवी को प्रदान किया गया। डॉ. सुषमा सिंघवी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह का संचालन जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में कार्यक्रम समायोजित हुए। तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद ने गीत का संगान किया। अभातेममं की निवर्तमान अध्यक्ष सरिता डागा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस दौरान अभातेममं द्वारा आचार्यश्री तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार 2025 राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष विजया रहाटकर को प्रदान किया गया। उनके प्रशस्ति पत्र का वाचन राष्ट्रीय निर्देशिका सूरज बरडिया ने किया। विजया रहाटकर ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

(शेष पेज 17 पर)

किसी कार्य को बीच में छोड़ देना है कायरता का प्रतीक : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
17 सितम्बर, 2025

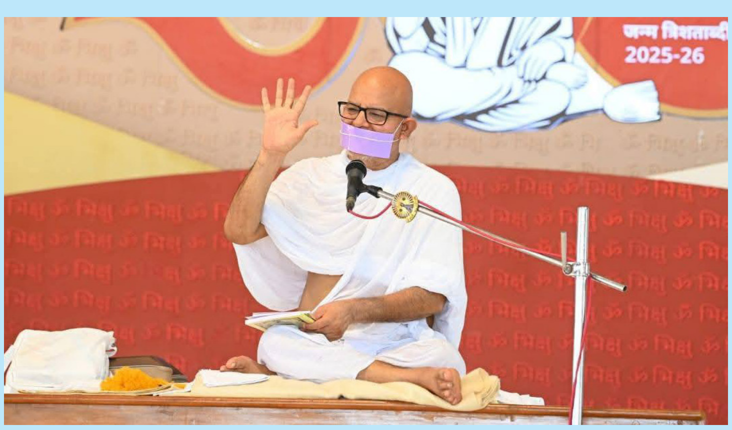

अद्भुत पराक्रम के स्रोत शान्तिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि एक व्यक्ति जो अदृष्टा होता है, वह अपने जीवन में आने वाली बाधाओं को लांघ नहीं सकता, उनका पार नहीं पा सकता। जीवन में कई कठिनाइयाँ, समस्याएँ, संघर्ष, विघ्न-बाधाएँ आ सकती हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो विघ्न-बाधाओं के भय के कारण कोई काम शुरू ही नहीं करते। दूसरे कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो कार्य शुरू तो कर देते हैं, परन्तु बाद में बाधाएँ आने पर कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं। तीसरी श्रेणी के कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे कार्य का प्रारंभ भी करते हैं और बाधाएँ बार-बार आती हैं, फिर भी वे झटपट काम को छोड़ते नहीं हैं, बल्कि बाधाओं का समाधान करते हुए आगे बढ़ते हैं और कार्य को निष्ठा तक पहुँचाकर मंजिल प्राप्त कर लेते हैं।

हम अध्ययन प्रारंभ करते हैं तो उसमें भी बाधाएँ आ सकती हैं। ज्ञान अनंत है। इतने ग्रन्थ हैं कि जीवन में सारे ग्रन्थ पढ़े भी नहीं जा सकते। जीवन स्वल्प है और विघ्न-बाधाएँ भी बार-बार आ सकती हैं। ऐसे में सारभूत ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए, जिससे जीवन अच्छा चल सकेगा। जिस विषय का ज्ञान उपयोगी हो, उसे प्राप्त करना चाहिए।

साधु के सम्मुख भी अनेक कठिनाइयाँ आ सकती हैं। साधु जीवन में आने वाले उपसर्ग और परीषहों के कारण साधुपन बीच में नहीं छोड़ना चाहिए। समता, शान्ति और धैर्य रखना चाहिए। गृहस्थ जीवन में भी धर्म-साधना में जो नियम, व्रत आदि ग्रहण किए हुए हैं, उन्हें निभाने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में बाधाएँ आ सकती हैं, पर उनका पार पाना और धार्मिक-आध्यात्मिक मजबूती बनाए रखना आवश्यक है। देव, गुरु, धर्म की श्रद्धा को किसी प्रलोभन में आकर नहीं छोड़ना चाहिए। अपना सम्यक्त्व वर्तमान जीवन और भावी जीवन में भी सुरक्षित रहे, धर्म के प्रति निष्ठा बनी रहे। धर्म के प्रति आस्था दृढ़ होती है तो व्यक्ति भवसागर से पार हो सकता है। ऐसा मनोबल और साहस व्यक्ति के भीतर जागृत हो जाए तो वह कठिनाइयों और बाधाओं को भी पार कर सकता है। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त तनसुखलाल बैद ने अपनी स्वरचित पुस्तकें 'नश्वर भाव', 'गीतधारा' और 'आपणा बडेरा' का आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पण किया। परम पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि अनित्य भावना और धर्म का अच्छा विकास होता रहे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पार्किंसन रोगियों के लिए 30-दिवसीय विशेष शिविर

प्राकृतिक चिकित्सा और योग से मिलेगी राहत

नई दिल्ली।

अध्यात्म साधना केन्द्र, छतरपुर, दिल्ली में पार्किंसन रोगियों के लिए 30 दिवसीय विशेष आवासीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर 1 नवंबर से 30 नवंबर 2025 तक चलेगा। पार्किंसन एक प्रगतिशील न्यूरोलॉजिकल विकार है, जो शरीर की गति नियंत्रित करने की क्षमता को प्रभावित करता है और इसके कारण रोगियों को हाथों का कांपना, मांसपेशियों की जकड़न, गतिहीनता और भावनात्मक असंतुलन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अध्यात्म साधना केन्द्र के निदेशक के.सी. जैन ने बताया कि इस रोग का इलाज केवल दवाइयों से करना एक जटिल प्रक्रिया है, जबकि प्राकृतिक चिकित्सा, योग, ध्यान और विशेष आहार जैसी विधियाँ रोगियों को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्तर पर राहत प्रदान करती हैं। इस शिविर का उद्देश्य रोगियों को दवाइयों पर निर्भरता कम करने के साथ-साथ रोग के मूल कारणों पर भी कार्य करना है। शिविर में भाग लेने वाले रोगियों को योग, प्राणायाम, शिरोधारा, नस्यम चिकित्सा, मालिश, हर्बल पोटली, मिट्टी पट्टी, जल चिकित्सा और ध्यान जैसी पद्धतियों का अनुभव कराया जाएगा। इन विधियों से डोपामिन उत्पादन में सुधार, मांसपेशियों की जकड़न में कमी, मानसिक शांति, बेहतर पाचन और रक्तसंचार जैसी कई लाभकारी परिणाम सामने आते हैं। अध्यात्म साधना केन्द्र में पूर्व में आयोजित शिविरों से जुड़े अनुभव बेहद सकारात्मक रहे हैं। कई रोगियों ने कंपन में कमी, बेहतर गतिशीलता, मानसिक शांति और पाचन की स्थिति में सुधार महसूस किया है। सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि कई लोगों ने दवाइयों पर अपनी निर्भरता कम करने में सफलता प्राप्त की है। अध्यात्म साधना केन्द्र का यह शिविर प्राकृतिक और समग्र दृष्टिकोण से उपचार की दिशा में एक अनूठा प्रयास है। कार्यक्रम की अवधि 30 दिन होगी और इसमें योग, ध्यान तथा विशेष आहार योजना की विशेषताएँ शामिल रहेंगी। पंजीकरण के लिए 9643300652 पर संपर्क किया जा सकता है।

तप से आत्मा बनती है कुंदन

सिद्धि तप, 28, 30, 40 व 89 की तपस्या का हुआ अभिनन्दन

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मासखमण तप एवं सिद्धि तप अनुमोदना का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। आशा गोलेच्छा ने 89 दिन, दरिया देवी माली ने 40 दिन, पारस गोलेच्छा ने 30 दिन, संतोष भंडारी ने 28 दिन एवं नम्रता श्रीश्रीमाल ने सिद्धि तप का प्रत्याख्यान विशाल उपस्थिति में किया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा तपस्या वह पावक है, जिसमें तपकर आत्मा कुंदन सम उज्ज्वल पवित्र बन जाती है। तपस्या वह हवा का झौंका है, जो आत्मा पर लगे कर्म-बादलों को छिन्न-भिन्न कर सकता है। तपस्या जीवन का श्रृंगार है। चातुर्मास काल में जैन-समाज के हजारों भाई बहन तपस्या कर अपनी आत्मा का श्रृंगार करते हैं। बालोतरा में भी तप रुपी आभूषण से भाई-बहनों नेअपनी आत्मा को सजाया है और भी सजाना है। मासखमण सबसे बड़ा गहना है। यहां उस गहने को पहनने वाले भाई बहनों के तप की अनुमोदना करते हैं। साध्वीश्री ने कहा- तपोनिष्ठ श्राविका आशाबाई ने एक साथ तीन मासखमण जितनी तपस्या की है। इनके जीवन की यह सबसे बड़ी तपस्या है एवं मेरे 52 वर्षों की संयम पर्याय में भी यह सबसे बड़ी तपस्या है। जैनेतर समाज की बहन दरिया बाई माली ने चालीस दिन का प्रत्याख्यान कर सबके लिए प्रेरणा प्रदीप बनी है। संतोष भंडारी ने तेले-तेले के एकान्तर करने के बाद यानि तेरह तेलों के बाद यह मासखमण किया है। सचमुच दृढ़ संकल्पी श्राविका है। पारस गोलेछा ने स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के बावजूद तीस की तपस्या कर हिम्मत दिखलाई है। नम्रता श्रीश्रीमाल ने छोटी वय में सिद्धितप कर तप के गौरव को अभिवर्धित किया है। साध्वी कर्णिका श्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साधी मैत्री प्रभाजी ने प्रेरक गीत के माध्यम से तपस्वियों के तप की अनुमोदना करते हुए परिषद को तप से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

सभाध्यक्ष महेन्द्र वेदमुथा, सहमंत्री राजेश बाफना, कोषाध्यक्ष देवलाल ओस्तवाल ने साध्वीप्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन किया। तपस्वियों के पारिवारिक जन ने अपने-अपने भावों को गीत व वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुति दी। सभा द्वारा तपस्वियों का तप अभिनंदन पत्र एवं साहित्य से सम्मान किया गया। साध्वी कर्णिकाश्रीजी व साध्वी समत्वयशा जी ने संचालन किया।

जीवन में गुरु और मां का होता है अनंत उपकार

जयपुर।

सोडाला श्यामनगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र में को तेरापंथ धर्म संघ के आठवें गुरु आचार्य कालूराम जी का 90 वां निर्वाण उत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने कहा - कि हर व्यक्ति को अपने सदगुरु और मां-बाप के ऋण से उऋण होने की भावना रखनी चाहिए। क्योंकि जीवन में गुरु और मां का अनंत उपकार होता है।

मुनिश्री ने आगम शास्त्र के आधार पर बताया कि शिष्य चाहे अनंत ज्ञानी भी बन जाए तो भी अपने गुरु के उपकार के प्रति आभारी रहे। भगवान महावीर इसके आदर्श पुरुष थे। आचार्य कालूगणी के जीवन से भी हमें यही प्रेरणा मिलती है। मौके पर मुनिश्री ने आचार्य तुलसी जी द्वारा अपने गुरु की स्तुति में लिखे गये गीत का मधुर संगान भी किया। मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि आचार्य कालूगणी करुणा की प्रतिमूर्ति थे। प्रेम और वात्सल्य के अथाह सागर थे।

सरलता, विनम्रता-कोमलता उनके स्वाभाविक गुण थे। मुनि श्री जी ने कहा - आज उनकी पुण्यतिथि पर उनके इन गुणों को स्वयं के जीवन में अपनाने का प्रयास करना ही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर तपस्वी शांतिलाल भंसाली ने 10 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ महिला मंडल (सी-स्कीम) की अध्यक्षा कनक आंचलिया व मंत्री राजकुमारी बाफना ने साहित्य भेंट कर तप की अनुमोदना की।

> ❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
>
> – आचार्य श्री महाश्रमण

सप्त दिवसीय साधना शिविर का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणा श्रीजी के सान्निध्य एवं तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में सप्त दिवसीय साधना शिविर का आयोजन राजा राजेश्वरी गार्डन में किया गया।

इस शिविर में प्रतिदिन जप, योग और प्रेक्षाध्यान के साथ विविध विषयों पर विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के दौरान विशेष कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें माइंडफुलनेस लिविंग सरला भूतोड़िया द्वारा, न्यूमैरोलॉजी डिंपल श्रीश्रीमाल द्वारा, सुजोक थैरेपी मनीषा गांधी द्वारा, हस्ताक्षर व लिखावट विश्लेषण मोनिका खटेड़ द्वारा, जैन जोयफुल जंक्शन आरती चोरड़िया द्वारा तथा वर्किंग वुमन एंड फैमिली विषय पर टॉक शो नमिता सिंघी और निशा सेठिया द्वारा प्रस्तुत किया गया।

माइंडफुलनेस सेशन में विचारों, भावनाओं और परिवेश के प्रति जागरूक रहकर तनाव कम करने, एकाग्रता बढ़ाने और भावनात्मक मजबूती विकसित करने के उपाय बताए गए। सुजोक थैरेपी के माध्यम से हाथ-पैरों के विशेष बिंदुओं पर दबाव डालकर रोग निवारण की कोरियाई पद्धति समझाई गई। न्यूमैरोलॉजी में अंकों के आधार पर व्यक्तित्व, स्वभाव और भविष्य का विश्लेषण करने की विधि बताई गई।

हस्ताक्षर व लिखावट विश्लेषण कार्यशाला में लिखावट की शैली से व्यक्ति की ताकत, कमजोरी और व्यक्तित्व पहचानने की जानकारी दी गई। जैन जोयफुल जंक्शन कार्यक्रम में खेल-खेल में जैन धर्म की रोचक जानकारी प्रदान की गई।

वर्किंग वुमन एंड फैमिली टॉक शो में समाज और परिवार से जुड़े ज्वलंत मुद्दों जैसे बेटी और बहू के समान अधिकार, महिला शिक्षा और करियर आदि विषयों पर चर्चा हुई। इसमें साध्वीश्री ने मार्गदर्शन प्रदान करते हुए सार्थक समाधान प्रस्तुत किया।

शिविर संयोजिका चांद बैद और प्रियदर्शनी जैन का श्रम विशेष रूप से सराहनीय रहा।

तप के द्वारा होता है आत्मा का शुद्धिकरण

नोखा।

भाई-बहनों, युवकों और कन्याओं में तप के प्रति गहरा उत्साह देखने को मिल रहा है। कहा जाता है कि तपस्या से पूर्व संचित कर्म कटते हैं और आत्मा निर्मल, पावन तथा कंचन की भाँति पवित्र हो जाती है। इसी कड़ी में दुबली-पतली अनिता गोलछा ने मासखमण करके कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके साथ ही अठाई, नौ, ग्यारह और पखवाड़ा जैसे विविध तप भी प्रवर्धमान हैं। तपाभिनंदन समारोह में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी ने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि तप के द्वारा आत्मा का शुद्धिकरण होता है। साध्वीप्रमुखाश्री का मंगल संदेश साध्वी समताश्री जी ने वाचन किया तथा अभिनंदन पत्र का वाचन तेयुप मंत्री सुरेश बोथरा ने किया। साध्वी पुलकितयशा जी ने कहा कि दृढ़ मनोबल और आत्मशक्ति से ही तप संभव है, जिसके द्वारा कर्मों का क्षय होता है। तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, युवक परिषद और दुगड़, गोलछा, मरोठी परिवारों द्वारा गीतिका और भावपूर्ण प्रस्तुतियों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। साध्विवृंद ने 'तप है मोक्ष रो द्वार' गीत के माध्यम से अनुमोदना की भावना प्रकट की। कवि इंदरचंद बैद ने कहा कि तेरापंथ भवन में तपस्वियों की बहार आ गई है और वातावरण तपमय बन गया है।

तपस्वियों में अनिता गोलछा ने 30 दिन का तप कर विशेष कीर्तिमान बनाया। अन्य तपस्वियों ने भी अट्ठाई और ऊपर की तपस्या की। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्षा प्रीति मराठी, मंत्री मोनिका बैद, तेरापंथ सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, मंत्री मनोज घीया, तेयुप अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, मंत्री सुरेश बोथरा, प्रकाशचंद भूरा, इंदरचंद बैद, अनुराग बैद, प्रदीप मालू, सूरजमल मालू, शारदा संचेती, रोशनी गोलछा, ओमप्रकाश गोलछा, श्रीरामलाल सेठिया, मांगीलाल संचेती और दीपक मरोठी सहित अनेक वक्ताओं ने तपस्वियों के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित कर बधाई दी। तेरापंथी सभा, महिला मंडल और युवक परिषद द्वारा अभिनंदन पत्र, मोमेंटो और तस्वीर भेंटकर सभी तपस्वियों का सम्मान किया गया। कुशल संचालन मंजू बैद ने किया।

राज्य स्तरीय अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 का आयोजन

नई दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में तथा अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन अणुव्रत भवन, नई दिल्ली में डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ समिति सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर. सी. जैन, अध्यक्ष दिल्ली पब्लिक स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि उन्हें खुशी है कि अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के माध्यम से स्कूलों को जोड़ा है और आज राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है। इससे बच्चों के साथ-साथ समाज को भी संगठित किया जा सकेगा। अध्यक्षीय वक्तव्य में बाबूलाल गोलछा ने सभी स्कूलों के प्रति आभार प्रकट किया और आशा जताई कि आगामी वर्षों में और अधिक स्कूल इसमें भाग लेंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि वर्षभर समय-समय पर स्कूलों में प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। उन्होंने मुनि श्री के प्रति कृतज्ञता और समारोह में उपस्थित सभी के प्रति आभार प्रकट किया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की उपाध्यक्षा एवं एसीसी की राष्ट्रीय पर्यवेक्षक डॉ. कुसुम लूनिया ने कहा – 'हम जिस लक्ष्य को लेकर चले थे, उसमें हमने काफी हद तक सफलता हासिल की है और मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि 2026 में हम और अधिक स्कूलों को इस क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में शामिल कर सकेंगे।' उन्होंने संयोजक, प्रभारी और सभी कार्यकर्ताओं को बधाई दी कि उन्होंने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का सफल आयोजन करने में योगदान दिया।

मुनि जागृत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा – 'मैं समझता हूं कि अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट उन्हीं लोगों को याद रखता है, जिनमें कुछ कर दिखाने की क्षमता होती है। चाहे भाषण प्रतियोगिता हो, चित्रकला प्रतियोगिता हो या निबंध प्रतियोगिता – यदि आपमें क्षमता है, तो आप उसे अच्छी तरह से करने में सक्षम होंगे। विश्व उन्हीं लोगों को याद करता है, जो सृजनात्मकता से जुड़े रहे हैं। आज जब डिजिटल रूप में एआई जैसे टूल आ गए हैं, ऐसे में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि इसमें व्यक्ति किसी विषय पर फोकस करता है और उसे पूरी लगन से करने का प्रयास करता है।' मुनि डॉ. अभिजीत कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा – 'आज यहां सम्मिलित सभी विशिष्ट जन क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के महत्वपूर्ण आयामों का हिस्सा बने हैं। पूरे भारतवर्ष में 3200 स्कूल सृजनात्मकता की धारा में प्रवाहित हो रहे हैं, उसका केंद्र बिंदु दिल्ली और अणुव्रत भवन है। स्तुति के साथ प्रस्तुति भी जरूरी है और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के माध्यम से यह नए रूप में सामने आया है।' उन्होंने डिजिटल डिटॉक्स और नशा मुक्ति के प्रति जागरूक करते हुए सभी को शपथ दिलाई कि – 'हम आजीवन स्वयं नशा नहीं करेंगे और दूसरों को भी नशा न करने की प्रेरणा देंगे। साथ ही डिजिटल वस्तुओं, विशेषकर मोबाइल के प्रयोग को भी सीमित करेंगे।'

प्रतियोगिताएं कक्षा 5 से 8 एवं कक्षा 9 से 12 – इन दो वर्गों में आयोजित की गईं। विद्यार्थियों ने पांच विधाओं – भाषण, कविता, चित्रकला, एकल एवं सामूहिक गीत तथा निबंध – में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजेता विद्यार्थियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा अन्य सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में सहभागी स्कूलों तथा निर्णायकों को अणुव्रत पटका और उपहार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के कार्य समिति सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष अणुव्रत समिति दिल्ली बाबूलाल दुगड़, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा मनोनीत एसीसी राज्य प्रभारी सौरभ जैन, संयोजक मनीष मनोत, निवर्तमान अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक मनोज बरमेचा, अनेकों पूर्व एवं वर्तमान पदाधिकारी तथा सदस्य, एसीसी टीम सदस्य एवं अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। स्वेक्षा, राजीव बैंगानी एवं अन्य सदस्यों के साथ अणुव्रत भवन के स्टाफ का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 के दिल्ली पर्यवेक्षक चंद्रकांत कोठारी ने किया।

तप अनुमोदना का सामूहिक कार्यक्रम

जसोल।

तप अनुमोदना का सामूहिक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि तपस्या हमारी आत्मा का श्रृंगार और तेज है। तप के सामने राजा-बादशाह भी शीश झुकाते हैं। बारह प्रकार की निर्जरा में तप बाह्य तप है। जब तप के साथ गहरा उत्साह, जप, स्वाध्याय हो और आडंबर का प्रयोग न किया जाए तो तप सोने पर सुहागा है। दशवैकालिक में कहा गया है कि तप क्यों करें? न इहलोक के लिए, न परलोक के लिए, केवल निर्जरा के लिए हमारा तप होना चाहिए। हमारा तप आगे से आगे बढ़ता रहे, यह प्रयास होना चाहिए। तप ऐसे कर्मों को तोड़ देता है जो गहरे बंधे हुए हों। बारह प्रकारों में से यथाशक्ति तप का प्रयोग चलता रहना चाहिए।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि जसोल तप के मामले में आगे रहता है। इस बार भिक्षु चेतना वर्ष में यहाँ तप की बहुत ही अच्छी खेती निपजी है। एक साथ इतनी तपस्या होना अत्यंत सराहनीय है। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि तप के कारण मानो जसोल में बहार आ गई है। गुरु-सन्निधि में भी जसोल की तपस्या अत्यंत सराहनीय रही और साध्वीश्री की सन्निधि में भी अनूठा रंग खिला है। तप का बल इतना है कि एक चक्रवर्ती भी विजययात्रा से पहले तेले का अनुष्ठान करने जाता है। साध्वी पावनयशा जी ने कहा कि जसोल मेरी जन्मभूमि है और मैंने चातुर्मास प्रवेश पर मांग की थी कि मेरी खोल अच्छी भरे। सबसे पहले मेरी संसार पक्षीय मां ने अठाई का उपहार दिया और बाद में सभी ने बहुत अच्छी भेंट दी। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, मंत्री धनपत संखलेचा, महिला मंडल मंत्री जयश्री सालेचा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल आदि अनेक भाई-बहनों ने गीत, भाषण और कविताओं से तप की अनुमोदना की। कई भाई-बहनों ने इस अनुमोदना में तेला, चोला, पंचोला आदि करने का संकल्प लिया।कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

अप्रमत्त व्यक्तित्व के धनी थे आचार्य कालूगणी

जसोल।

साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ के अष्टम आचार्य श्री कालूगणी का महाप्रयाण दिवस पुराणा ओसवाल भवन के सभागार में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा मंत्रोच्चार के साथ हुआ।

साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि कालूगणी, जिनका शासनकाल तेरापंथ के लिए स्वर्णिम काल कहा जा सकता है, उन्होंने शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। संस्कृत के विकास के प्रति उनके मन में गहरी उत्कंठा थी और उन्होंने अपने उत्तराधिकारी आचार्य श्री तुलसी को इस दिशा में कार्य आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी, जिसके परिणामस्वरूप उल्लेखनीय विकास हुआ और आज भी हो रहा है। कालूगणी ने अप्रमत्त जीवन जिया। संपूर्ण मुनिकाल में उन्हें कभी किसी का उपालंभ सहन नहीं करना पड़ा। उनके सामने अनेक विरोध आए, परंतु उनके आभामंडल से धीरे-धीरे सब विरोध शांत हो गए।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि कालूगणी पुण्यशाली व्यक्तित्व थे, जिनके कारण तेरापंथ का अपूर्व विकास हुआ। उनके समय में पुस्तकों से संघ समृद्ध हुआ तथा साधु-साध्वियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि कालूगणी उस महान व्यक्तित्व का नाम है, जिन्होंने अपनी सूझबूझ से मुनि तुलसी जैसे विलक्षण व्यक्तित्व को छोटी उम्र में ही युवाचार्य पद पर आसीन करा दिया। आपने अपनी मां छोगाजी के साथ संयम ग्रहण किया और संघ का उत्तरदायित्व संभालने के बाद सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया। साध्वी पावनयशा जी ने मधुर गीत द्वारा अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। इस अवसर पर आठ भाई-बहनों के तप की अनुमोदना भी की गई। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। इसके अतिरिक्त कन्या मंडल, माणकचंद संकलेचा, प्रवीण भंसाली, पुष्पादेवी बुरड़, संतोषदेवी वडेरा आदि ने गीत, कविता और मुक्तक प्रस्तुत कर तपस्वियों की अनुमोदना की।

शपथ ग्रहण समारोह

पीतमपुरा। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, उत्तर दिल्ली का शपथ ग्रहण समारोह (सत्र 2025-27) खिलौनी देवी धर्मशाला पीतमपुरा में 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी के सान्निध्य में सफलता के साथ संपन्न हुआ। साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। निवर्तमान अध्यक्ष मधु सेठिया ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया व नव नियुक्त अध्यक्ष इंदिरा सुराणा को शपथ दिलाई। इंदिरा सुराणा ने अपनी नवगठित टीम की घोषणा की और उन्हें शपथ दिलाई। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी ने मंडल को उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए अच्छा कार्य करने की प्रेरणा दी। साध्वी कार्तिकप्रभा जी व साध्वी चिंतनप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। अभातेममं की प्रधान न्यासी पुष्पा बैंगानी, महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली पूर्वाध्यक्ष मनफूल बोथरा, सरोज जैन, पश्चिम दिल्ली की अध्यक्ष चंदा डूंगरवाल आदि ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। तत्वज्ञान, तेरापंथ-दर्शन की राष्ट्रीय संयोजिका कुसुम बैंगानी ने शुभकामनाएं देते हुए ने सभी को तत्त्व ज्ञान और तेरापंथ दर्शन पाठ्यक्रम से जुड़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन सहमंत्री विनीता डागा ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रवीणा सिंघी ने किया।

डोंबिवली। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद डोंबिवली का शपथ ग्रहण समारोह स्थानीय तेरापंथ भवन में उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा एवं उपासक अनुराग बैद की उपस्थिति में जैन संस्कार विधि से संपन्न किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया। तत्पश्चात विजय गीत का संगान ललित पुनमिया ने किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनोज मादरेचा ने अध्यक्षीय उद्गार प्रस्तुत करते हुए सेवा, संस्कार, संगठन के साथ हमें हर आयाम को सबके साथ सहयोग से पूर्ण करना है। निवर्तमान अध्यक्ष भगवती कच्छारा ने नवनिर्वाचित टीम को बधाई देते हुए नवनियुक्त टिम को शपथ दिलायी। उपासक अनुराग बैद ने तेयुप टीम को मंगलकामना देते हुए कहा कि आप सामाजिक कार्यों के साथ-साथ आध्यात्मिक गतिविधियों पर भी जोर दें। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सुधा सियाल ने उपासकद्वय का स्वागत किया, साथ ही तेयुप टीम को बधाई देते हुए अपने विचार रखे। उपासक सूर्यप्रकाश सामसुखा ने तेयुप टीम को मंगलकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का कुशल संचालन अभूतपूर्व अध्यक्ष सुरेश बैद ने व आभार ज्ञापन नवनिर्वाचित मंत्री राजेन्द्र कच्छारा ने किया।

राजसमंद। तेरापंथ युवक परिषद राजसमंद द्वारा नव मनोनीत अध्यक्ष पंकज मादरेचा एवं नई कार्य समिति टीम का शपथ ग्रहण समारोह संस्कारक भूपेश धोका द्वारा जैन संस्कार विधि से आयोजित किया गया। अध्यक्ष पंकज मादरेचा ने सभी का स्वागत करते हुऐ जैन संस्कार विधि की सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के राष्ट्रीय सह मंत्री लक्की कोठारी ने राजसमंद तेयुप के गौरवशाली इतिहास को याद किया व यहाँ के कार्यकर्त्ताओं के समर्पण भाव की प्रशंसा की। तेरापंथ सभा अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, निवर्तमान अध्यक्ष विकास मादरेचा, महिला मण्डल अध्यक्ष रितु धोका आदि ने भी अपने विचार रखे। आभार तेयुप मंत्री प्रमोद कावड़िया ने ज्ञापित किया।

तप समाचार

नोखा। 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में लाभचंद छाजेड़ ने 7 दिन, महावीर नाहटा, अनिता विनायकिया, हर्षिता मालू, नम्रता संचेती और संदीप चौरडिया ने 8 दिन, गोपाल लुणावत ने 9 दिन, अल्का मरोठी और शारदा दुगड़ और हिमानी पारख ने 10 दिन, नरेंद्र संचेती ने 11 दिन तथा गायत्री बरड़िया ने 12 दिन का तप पूर्ण किया। चेतना लोढ़ा ने 6 दिन की तपस्या की। नीतू नाहटा ने आयम्बिल अठाई तप किया, जबकि भावना मरोठी ने मौन अठाई तप किया। इसी प्रकार सुमन भूरा ने 9 दिन आयम्बिल तप कर अपनी साधना को सफल बनाया।

आमेट। साध्वी सम्यकप्रभा जी के सान्निध्य में शकुंतला देवी भंडारी ने 8 की तपस्या व हेमलता भंडारी ने 11 की तपस्या की।

मैसूर। साध्वी सिद्धप्रभा जी के सान्निध्य में के. आर. नगर से जुड़वा भाई लक्ष्य-लक्षित, के. आर. पेट से बहन खुशबू दक, टी नरसीपुर से बहन सपना दक, मैसूर से काका-भतीजा विपिन-नींव भंडारी आदि तपस्वियों ने आठ से ऊपर के प्रत्याख्यान किये।

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान

पूर्वांचल-कोलकाता। सुजानगढ़ निवासी - लेकटाउन पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी दीपक बोकाडिया के नूतन प्रतिष्ठान (स्वास्थ्य वेधा, लेकटाउन) का शुभारंभ जैन संस्कारक बीरेंद्र सेठिया ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा संपादित करवाया।

विशेष परामर्श मंच का आयोजन

जोधपुर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) जोधपुर शाखा द्वारा पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में समाजोपयोगी गतिविधियों की श्रृंखला में 'विशेष निशुल्क परामर्श मंच' का आयोजन किया गया। साध्वी सत्यवती जी एवं साध्वी कुन्दनप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, अमर नगर और मोटर मर्चेंट एसोसिएशन हॉल, सरदारपुरा में आयोजित इस दो दिवसीय आयोजन में 200 से अधिक लोगों ने विभिन्न विशेषज्ञों से निःशुल्क परामर्श लिया।

इस मंच पर मेडिकल, लीगल और टैक्सेशन तीनों क्षेत्रों में मार्गदर्शन की व्यवस्था की गई थी। डॉ. अरविंद जैन ने विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का निदान कर मरीजों को जीवनशैली सुधार की प्रेरणा दी। डॉ. दिव्या कोठारी ने महिला स्वास्थ्य संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान कर महत्वपूर्ण परामर्श दिया। डॉ. नमिता भंडारी ने संतुलित आहार और पोषण पर मार्गदर्शन प्रदान किया। डॉ. दिव्यानी श्रीमाल ने मुख एवं दंत स्वास्थ्य की ओर जागरूकता बढ़ाई। सारथी फाउंडेशन की ओर से डॉ. सुरभि चौधरी और उनकी टीम ने अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। आचार्य महाश्रमण फिज़ियोथेरेपी सेंटर की टीम ने फिज़ियोथेरेपी की विशेष सेवाएँ दीं तथा अपना नेत्रालय और ए.एस.जी. हॉस्पिटल ने नेत्र-जाँच शिविर आयोजित कर सैकड़ों लोगों को लाभान्वित किया। लोगों में खानपान संबंधी जागरूकता लाने और स्वस्थ जीवनशैली बनाने के लिए अभिषेक भंडारी द्वारा भी स्वास्थ्य जांच का आयोजन किया गया।

समाज के लिए विधिक विषयों पर मार्गदर्शन देने हेतु अधिवक्ताओं का मजबूत दल मंच पर उपस्थित रहा। एडवोकेट अरविंद समदड़िया, एडवोकेट दिलीप कावड़िया, एडवोकेट डॉ. एकलव्य भंसाली, एडवोकेट डॉ. मिलाप चोपड़ा, एडवोकेट अभिनव जैन एवं एडवोकेट निधि सिंघवी ने उत्तराधिकार, संपत्ति विवाद, अनुबंध और अन्य कानूनी पहलुओं पर परामर्श देकर लोगों को सशक्त बनाया। वित्त एवं कर संबंधी जटिलताओं का समाधान प्रदान करने के लिए टैक्सेशन टीम ने विशेष योगदान दिया। सीए विनोद संचेती, सीए पूर्णिमा जैन और सीए अनंत मेहता ने आयकर, जीएसटी एवं निवेश से जुड़ी जटिलताओं को सरल भाषा में स्पष्ट कर प्रतिभागियों को वित्तीय प्रबंधन की दिशा में सशक्त किया।

आयोजन में टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिलीप कावड़िया, टीपीएफ जोधपुर अध्यक्ष महेंद्र मेहता, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, तेयुप अध्यक्ष मनसुख संचेती, महिला मंडल अध्यक्षा अर्चना बुरड़ सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। मंत्री निखिल मेहता ने बताया कि यह आयोजन समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक अभिनव पहल है। वरिष्ठजनों ने मंच की उपयोगिता की सराहना करते हुए ऐसे आयोजन समय-समय पर करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में टीपीएफ जोधपुर टीम—डॉ. प्रियंका बैद, अनंत मेहता, अभिषेक भंडारी, पूर्णिमा जैन आदि सभी सदस्यों ने तन, मन और धन से पूर्ण योगदान दिया।

सामूहिक तप अनुमोदन एवं प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

गोरेगांव, मुंबई।

तेरापंथ महिला मंडल गोरेगांव द्वारा गोरेगांव के समस्त तपस्वियों की अनुमोदना हेतु सामूहिक धम्म जागरण का आयोजन तेरापंथ भवन प्रांगण में किया गया, जिसमें गोरेगांव सभा एवं युवक परिषद के पदाधिकारीगण ने भी सहभागिता की। इस अवसर पर गोरेगांव क्षेत्र के 28 तेले, 12 बड़ी तपस्याएँ, 2 महीने का एकांतर सहित अन्य तपस्या करने वाले तपस्वी भाई-बहन समाहित थे। सभी तपस्वियों को मंच पर आसीन कर नमस्कार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। तत्पश्चात महिला मंडल, सभा एवं युवक परिषद द्वारा तप अनुमोदना गीतों और धार्मिक गीतों का संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष डिम्पल हिरण एवं मंत्री कल्पना चोरड़िया ने सभी तपस्वियों, पदाधिकारियों और बहनों का स्वागत-अभिनंदन किया। सभा की ओर से अध्यक्ष अशोक चौधरी एवं मंत्री सुरेश ओस्तवाल तथा युवक परिषद से अध्यक्ष सुमित चोरड़िया एवं मंत्री हितेश राठौड़ ने तपस्वियों के प्रति आभार एवं अनुमोदना व्यक्त की। महिला मंडल कार्यकारिणी टीम द्वारा सभी तपस्वियों का सम्मान किया गया।

इसके पश्चात प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक सरोज चंडालिया ने बहनों को ताड़ासन, कोणासन, त्रिकोणासन, मंडूकासन, शशांकासन आदि लाभकारी आसनों का अभ्यास करवाया तथा ज्योति केंद्र पर सफेद रंग का ध्यान कराया। उन्होंने बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। कार्यक्रम में 30 बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

संक्षिप्त खबर

आओ नींद को अपनी ताकत बनाएं कार्यशाला आयोजित

कोयंबतूर। अभातेममं एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में, प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अंतर्गत 'आओ, नींद को अपनी ताकत बनाएं' कार्यशाला का पहला सत्र कोयंबतूर तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। सूरत से पधारे उपासक कांतिलाल कावड़िया और फूलचंद छत्रावत की गरिमामयी उपस्थिति में, बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने सहभागिता की। कार्यशाला का शुभारंभ मंगल गीत द्वारा मधु चौरडिया और ज्योति बुरड़ ने किया। कोयंबतूर तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा रूपकला भंडारी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया। प्रेक्षा ध्यान विशेषज्ञ मंजू घोषल ने विशुद्धि केंद्र पर ध्यान का प्रयोग करवाया। डॉ. उर्वशी लुणिया ने 'खानपान का हो ध्यान तो नींद हो आसान' विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संतुलित आहार और उचित दिनचर्या नींद की गुणवत्ता को बेहतर बना सकते हैं। वंदना पारख ने 'Secrets of Sleep – नींद के रहस्य' विषय पर विस्तार से समझाते हुए बताया कि किन शारीरिक रसायनों से नींद आती है और उन्हें दैनिक जीवन में किस प्रकार स्वाभाविक रूप से उत्पन्न किया जा सकता है। उपासक कांतिलाल कावड़िया ने इस विषय पर आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन स्थानीय महिला मंडल मंत्री रेखा मरोठी ने किया। कार्यक्रम का रोचक संचालन वंदना पारख ने किया।

दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

हुबली। तेरापंथ भवन हुबली में आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि विनीत कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म आपस में मिलजुल कर रहने की शिक्षा देता है। मुनिश्री ने आगे कहा— 'आज परम प्रसन्नता का दिन है, क्योंकि दो समुदाय की चारित्रात्माएँ एकत्रित हुई हैं। इससे जैन धर्म की एकजुटता का परिचय मिलता है। भगवान महावीर के शासन में अनेक चारित्रात्माएँ साधना कर रही हैं और साथ ही श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा और प्रशिक्षण दे रही हैं।' श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ दादाबाड़ी, हुबली में चातुर्मासरत साध्वी चंपाश्रीजी सहित अन्य साध्वियों ने तेरापंथ भवन में पधारकर मुनि विनीत कुमार जी एवं मुनि पुनीत कुमार जी से क्षमायाचना की। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में संपूर्ण जैन समाज को आपस में एकजुट रहकर कार्य करने की प्रेरणा दी।

कालूगणी महाप्रयाण दिवस मनाया

आमेट। साध्वी सम्यकप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ के अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का 90वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। जेटीऐन प्रतिनिधि पवन कच्छारा ने सुंदर गीतिका का संगान किया। साध्वी सम्यकप्रभा जी ने कहा कि भाद्रव शुक्ला षष्ठी के दिन विक्रम संवत 1993 को आचार्य कालूगणी ने सायं सूर्यास्त के आस-पास गंगापुर में मुनि मगनलाल स्वामी से अनशन ग्रहण कर देवलोक गमन हुऐ। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य श्री कालूगणी का काल तेरापंथ धर्म संघ के लिए स्वर्णिम काल माना जाता है। जिसमें उन्होंने तेरापंथ का विस्तार मध्यप्रदेश, गुजरात व महाराष्ट्र जैसे सुदूर प्रांत में किया। विद्या व संस्कृत क्षेत्र में प्रगति लाई और बड़ी संख्या में दीक्षाएं करवाई। साध्वी सौम्यप्रभाजी, साध्वी मलयप्रभाजी, साध्वी दीक्षितप्रभाजी ने आचार्य कालूगणी के महाप्रयाण दिवस पर अपने विचारों व गीतिका के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर महेंद्र कुमार बोहरा, जीवन ज्योति बापना, गजरा देवी बापना ने गीतिका व संभाषण द्वारा भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

- जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।
- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

– आचार्य श्री महाश्रमण

भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान एवं हीलिंग कार्यशाला का आगाज

महरौली, नई दिल्ली।

साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथ सभा दिल्ली के तत्वावधान में भक्तामर अनुष्ठान का कार्यक्रम हर्षोल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। लगभग तीन सौ भाई-बहनों ने इस अनुष्ठान में भाग लिया।

इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा कि आचार्य मानतुंग ने भक्तामर स्तोत्र की रचना कर जैन धर्म की कीर्ति को शिखर पर पहुँचाया था। भक्तामर स्तोत्र को चमत्कारी मंत्र मानकर स्मरण किया जाता है। 24 तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर की स्तुति में रचित यह स्तोत्र शुद्धि का प्रेरक है। यह स्तोत्र मन, वचन और काया की चंचलता को रोकता है। आद्य प्रवर्तक भगवान ऋषभ ने जहाँ लोगों को असि-मसि-कृषि का ज्ञान दिया, वहीं आत्मोपलब्धि का मार्ग भी प्रशस्त किया। तीसरे आरे में भगवान ऋषभ ने मोक्ष का वरण किया और उनके 100 पुत्रों व पुत्रियों ने भी संसार का अन्त किया। आज प्रथम भगवान ऋषभ की स्तुति हेतु भाव-धाराएँ हिलोरे खा रही हैं। आचार्य मानतुंग द्वारा रचित भक्तामर स्तोत्र का नित्य स्वाध्याय आध्यात्मिक प्रगति का सोपान कहा जा सकता है।

इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी, साध्वी सौभाग्ययशा जीऔर साध्वी कल्याणयशा जी द्वारा भक्ताभर स्तोत्र का उच्चारण किया गया।

तत्पश्चात कीर्ति बैगाणी द्वारा सभी को शक्तिपात किया गया और हीलिंग के उद्देश्य, स्थान एवं इसके प्रयोग द्वारा मनुष्य को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्राप्त करने की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई। साध्वियों द्वारा बीजाक्षरों का भी उच्चारण करवाया गया।

संदीप डूंगरवाल एवं मुकेश सेठिया द्वारा आगंतुक महानुभावों का स्वागत किया गया और कार्यशाला की सफलता हेतु शुभकामनाएँ प्रकट की गईं। साध्वी सौभाग्ययशा जी द्वारा 'ऋषभाय नमः' गीत का संगान किया गया। तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली एवं तेरापंथ सभा दिल्ली द्वारा भक्तामर स्तोत्र की पुस्तक वितरित की गई।

अनेक भाई-बहनों, जैसे मुक्ति भंडारी, कमल सेठिया, विमला सुराणा आदि ने अपने-अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यशाला की प्रशंसा की। आभार ज्ञापन मुकेश सेठिया ने किया।

आत्मा को कुंदन बनाती है तपस्या

पाली।

साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में एक साथ 45 अट्ठाई का प्रत्याख्यान सम्पन्न हुआ। अपने उद्बोधन में साध्वी काव्यलता जी ने कहा— 'भगवान ने मोक्ष के चार मार्ग बताए हैं—ज्ञान, दर्शन, श्रद्धा और तप।

हर व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति के अनुसार किसी न किसी मार्ग का चयन करता है। आज मेरे सामने छोटे-छोटे तपस्वी भाई-बहन उपस्थित हैं, यह दृश्य अत्यंत प्रेरणादायी है। हर धर्म-संप्रदाय ने तप के महत्व को स्वीकार किया है। जैन शासन में तप का बहुत बड़ा महत्व है। तप जीवन का श्रृंगार है, जीवन की सफलता का आधार है। तपस्या वह ज्योति है, जो आत्मा को शुद्ध कर कुंदन के समान उज्ज्वल बना देती है।' उन्होंने तपस्वी साधु-संतों के ऐतिहासिक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि 'हर तपस्वी की शक्ति का मूल आधार गुरु का आशीर्वाद होता है। गुरुशक्ति से तपस्वी का मनोबल बढ़ता है और तप साधना में निखार आता है।' तत्पश्चात उन्होंने कविता 'कल-कल करती तप सरिता आई' के माध्यम से तपस्वियों का मनोबल बढ़ाया। सभा में साध्वी ज्योतियशा जी ने आचार्य भिक्षु के तपस्वी जीवन का उल्लेख करते हुए बताया कि 'आचार्य भिक्षु ने पाली में सात-सात चातुर्मास किए थे। यह वर्ष आचार्य भिक्षु का त्रिशताब्दी वर्ष है। इस पुण्य वर्ष में पाली की भूमि पर नया तप इतिहास रचा जा रहा है।' साध्वी सुरभिप्रभा जी एवं साध्वी राहतप्रभा जी ने भी तप की महिमा पर अपने विचार व्यक्त किए। सभा में साध्वी मधुस्मिता जी द्वारा रचित गीत का सामूहिक संगान किया गया। अनुमोदना में तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष पीयूष चौपड़ा, मंत्री राजेश मरलेचा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल पर्वत पाटिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई, तत्पश्चात मंडल की बहनों ने प्रेक्षा गीत के साथ मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

मंडल की अध्यक्षा सुमन जैन ने दोनों मोटिवेटर एवं सभी उपस्थितजनों का स्वागत करते हुए कहा कि ध्यान और योग का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। उन्होंने 'आओ, बनाएँ नींद को अपनी ताकत' विषय पर अपने विचार रखे। पूर्व अध्यक्षा ललिता पारख ने दोनों प्रशिक्षकों का परिचय प्रस्तुत किया।

प्रेक्षा ध्यान प्रशिक्षिका नैना बहन ने ताड़ासन, पश्चिमोत्तानासन, शशांकासन आदि आसनों का अभ्यास करवाया तथा उन्हें दैनिक जीवन में शामिल करने की प्रेरणा दी।

उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि वे पिछले 7 वर्षों से नियमित ध्यान और योग कर रही हैं और इससे उन्हें पूर्ण स्वास्थ्य लाभ मिला है। मुख्य प्रशिक्षिका नीलम मेहता ने कार्यशाला के मुख्य विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वास्थ्य के लिए सही नींद अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने नींद न आने या अधिक सोने के कारणों को स्पष्ट किया और बताया कि यदि व्यक्ति अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखे, तो नींद उसकी ताकत बन सकती है। कार्यक्रम में जीव-अजीव प्रश्नोत्तरी के विजेता सुमित्रा श्यामसुखा, पिंकी महनोत और रीना पगारिया को पुरस्कृत किया गया तथा प्रश्नोत्तरी की संयोजक कनक बुच्चा को भी सम्मानित किया गया।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष पर विशेष आलेख

प्रेक्षाध्यान : प्राणशक्ति और चक्रों के माध्यम से आंतरिक संतुलन की साधना

● के. सी. जैन ●

कल्पना कीजिए कि आपके पास एक वायर (तार) है, जिस पर विद्युत धारा प्रवाहित हो रही है। जैसे उस वायर में धारा के प्रवाह से बल और ऊर्जा उत्पन्न होती है, वैसे ही हमारे शरीर में भी एक अदृश्य ऊर्जा प्रवाहित होती है, जिसे प्राणशक्ति कहा जाता है। जब यह प्राणशक्ति ठीक से प्रवाहित होती है, तो हमारे शरीर और मस्तिष्क में संतुलन बना रहता है, और हम मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ रहते हैं। जैसे एक वायर के माध्यम से विद्युत धारा अपने उद्देश्य को पूरा करती है, वैसे ही हमारे शरीर में प्राणशक्ति सही प्रवाह में होने पर हमारी जीवनशक्ति को संजीवनी मिलती है।

अब, यदि हम उस विद्युत वायर का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें और इसे ठीक से जोड़ें, तो धारा का प्रवाह बहने लगता है और वह ऊर्जा हमें विभिन्न उपकरणों को संचालित करने में मदद करती है। ठीक उसी प्रकार, प्रेक्षाध्यान एक साधना है, जो हमें हमारी आंतरिक प्राणशक्ति को जागृत और सही दिशा में प्रवाहित करने की कला सिखाती है। जब यह प्राणशक्ति सही मार्ग पर प्रवाहित होती है, तो हमारा जीवन संतुलित और समृद्ध बनता है।

प्रेक्षाध्यानः आत्मा की गहरी यात्रा

प्रेक्षाध्यान, जैन परंपरा में ध्यान की एक प्राचीन और शक्तिशाली विधि है, जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन को स्थापित करने का एक प्रभावी तरीका है। इस साधना का उद्देश्य केवल मानसिक शांति और ध्यान की स्थिति तक पहुंचना नहीं है, बल्कि यह हमें अपनी प्राणशक्ति, यानी जीवन की ऊर्जा को पहचानने और नियंत्रित करने की कला सिखाती है।

हमारे शरीर में सात प्रमुख चक्र होते हैं, जिनका संबंध हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति से होता है। जब इन चक्रों में असंतुलन होता है, तो हम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करते हैं। प्रेक्षाध्यान की विधि इन चक्रों को सक्रिय करने और संतुलित करने में मदद करती है, जिससे हमारी ऊर्जा का प्रवाह सही दिशा में होता है और हम आंतरिक रूप से अधिक संतुलित और स्वस्थ बनते हैं।

प्राणशक्ति और चक्रों का महत्व

प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करते समय, हम अपनी प्राणशक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं। प्राणशक्ति वह अदृश्य ऊर्जा है, जो हमारे शरीर और मस्तिष्क को जीवंत रखती है। भारतीय योग और तंत्रशास्त्र में इसे 'प्राण' कहा जाता है, जो हमारे अस्तित्व का मूल स्रोत है। जब इस ऊर्जा का संतुलन और समन्वय ठीक होता है, तो हम न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी अधिक स्थिर होते हैं।

प्रेक्षाध्यान के माध्यम से, हम इन सात चक्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और इन चक्रों को संतुलित करते हैं, जिससे हमारी प्राणशक्ति सही दिशा में प्रवाहित होती है। इन चक्रों में संतुलन स्थापित होते ही, हमारा जीवन भी समृद्ध और संतुलित बनता है।

प्रेक्षाध्यान और चक्रों का संबंध

प्रेक्षाध्यान के अभ्यास में, हम सात मुख्य चक्रों का ध्यान करते हैं। प्रत्येक चक्र हमारे जीवन के अलग-अलग पहलुओं से जुड़ा होता है। आइए जानते हैं इन चक्रों के बारे में:

1. मूलाधार चक्र (Root Chakra)

यह चक्र रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से में स्थित होता है और हमारी सुरक्षा, अस्तित्व और स्थिरता से जुड़ा होता है। इस चक्र को जागृत कर हम जीवन में स्थिरता और सुरक्षा का अनुभव कर सकते हैं।

2. स्वाधिष्ठान चक्र (Sacral Chakra)

यह चक्र नाभि के निचले हिस्से में स्थित है और रचनात्मकता, भावनाओं और यौन ऊर्जा से जुड़ा है। इस चक्र को सक्रिय कर हम अपनी रचनात्मक क्षमता और भावनात्मक संतुलन को जागृत कर सकते हैं।

3.मणिपुर चक्र (Solar Plexus Chakra)

यह चक्र पेट के ऊपरी हिस्से में स्थित है और आत्म-विश्वास, शक्ति और उद्देश्य से जुड़ा है। इस चक्र पर ध्यान केंद्रित कर हम अपनी आंतरिक शक्ति को महसूस कर सकते हैं और अपने जीवन को उद्देश्यपूर्ण बना सकते हैं।

4. अनाहत चक्र (Heart Chakra)

यह चक्र हृदय के पास स्थित है और प्रेम, करुणा और भावनाओं से जुड़ा है। इस चक्र के जागरण से हम अपने जीवन में प्रेम और करुणा का प्रवाह बढ़ा सकते हैं और आत्मा को गहरी शांति का अनुभव करा सकते हैं।

5. विशुद्धि चक्र (Throat Chakra)

यह चक्र गले के पास स्थित है और संचार, सत्य और आत्म-अभिव्यक्ति से जुड़ा है। इस चक्र को सक्रिय कर हम अपनी आवाज़ में स्पष्टता और सत्य को व्यक्त कर सकते हैं।

6. आज्ञा चक्र (Third Eye Chakra)

यह चक्र भौंहों के बीच में स्थित होता है और मानसिक स्पष्टता, अंतर्दृष्टि और उच्च चेतना से जुड़ा होता है। इस चक्र को जागृत कर हम अपनी मानसिक क्षमता और स्पष्टता में वृद्धि कर सकते हैं।

7. सहस्रार चक्र (Crown Chakra)

यह चक्र सिर के शीर्ष पर स्थित होता है और दिव्य चेतना और ब्रह्मा के साथ जुड़ा होता है। इस चक्र के जागरण से हम अपनी आध्यात्मिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ सकते हैं।

प्रेक्षाध्यान का लाभः प्राणशक्ति का जागरण

प्रेक्षाध्यान का मुख्य उद्देश्य प्राणशक्ति को संतुलित करना है। जब यह प्राणशक्ति संतुलित और नियंत्रित होती है, तो हमारे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में सुधार होता है। हम स्वयं के प्रति जागरूक होते हैं और जीवन के प्रत्येक पहलू को अधिक समझदारी से जीने लगते हैं। जब हम अपनी प्राणशक्ति पर नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं, तो हमारी ऊर्जा चक्रों के माध्यम से बहती है, जिससे हमारी इच्छाएं पूरी होती हैं और हम जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ते हैं। इसके अभ्यास से न केवल शारीरिक स्वस्थता मिलती है, बल्कि मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन भी मिलता है।

प्रेक्षाध्यानः जागरूकता और अभ्यास से आत्म-शक्ति का संवर्धन

प्रेक्षाध्यान का अभ्यास केवल शांति और ध्यान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह हमें अपनी प्राणशक्ति को पहचानने, उसे संतुलित करने और उसे सकारात्मक दिशा में प्रवाहित करने का अवसर प्रदान करता है। जब हम अपनी सांस की गति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम अपनी प्राणशक्ति को नियंत्रित कर सकते हैं और इस ऊर्जा का सही उपयोग कर सकते हैं।

एक सरल प्रयोग

आपको बस गहरी श्वास लेनी है, अपनी श्वास को स्थिर करना है, और फिर धीरे-धीरे छोड़ना है। इसे कुछ समय तक करते हुए महसूस करें कि आपकी प्राणशक्ति सक्रिय हो रही है और आपकी आंतरिक ऊर्जा जागृत हो रही है। प्रेक्षाध्यान में समाहित दीर्घ श्वास प्रेक्षा, समताल श्वास प्रेक्षा तथा सम वृत्ति श्वास प्रेक्षा का निरंतर अभ्यास आपके चक्रों को खोलता है और आपको शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से संतुलित बनाता है।

निष्कर्ष

प्रेक्षाध्यान हमें न केवल मानसिक शांति देता है, बल्कि हमारे भीतर छिपी असीम शक्तियों को जागृत करता है। जब हम अपनी प्राणशक्ति को सही तरीके से नियंत्रित और संतुलित करते हैं, तो हम जीवन के हर पहलू में सशक्त और संतुलित होते हैं। तो, क्या आप अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानने और उसे जागृत करने के लिए तैयार हैं? प्रेक्षाध्यान के अभ्यास से आप न केवल अपने जीवन को संतुलित कर सकते हैं, बल्कि अपनी आत्मा की गहराई में जाकर एक नई ऊर्जा का अनुभव कर सकते हैं।

(लेखक अध्यात्म साधना केंद्र छतरपुर दिल्ली के निदेशक हैं।)

निस्पृह कर्मयोगी आचार्य कालूगणी

हैदराबाद। डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा- जैन तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य कालूगणी एक सफल अनुशास्ता, निःस्पृह कर्मयोगी, कुशल मनोवैज्ञानिक, न्याय के पक्षधर और बहुमुखी विकास के प्रेरणास्त्रोत आचार्य थे। जैन धर्म की प्रभावना में उनका अवदान विविध रूपों में रहा है। शिशु अवस्था में ही उनके जीवन में धार्मिक संस्कारों की नींव गहरी हो गई। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा- दीक्षा जीवन से आचार्य पद पर आरूढ़ होने तक का बाईस वर्ष का काल उनके लिए व्यक्तित्व निर्माण का सर्वोत्तम काल था।

इस प्रलंब अवधि में शिक्षा साधना के अनेक अनुभवों का संबल उन्हें प्राप्त हुआ। उनके अंतरंग व्यक्तित्व में मघवागणी का वात्सल्य, माणकगणी की उपासना और डालगणी के कठोर अनुशासन के निकष पर उत्तीर्ण निर्दोष कनक था।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा- आचार्य कालूगणी के शासनकाल में अभूतपूर्व प्रगति हुई। साधना, शिक्षा, कला साहित्य आदि में उन्होंने नये कीर्तिमान स्थापित किए। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत करते हुए अपने विचारों की प्रस्तुत दी।

भाव, भाषा और क्रिया से जुड़ी है हिंसा

राजराजेश्वरी नगर। जैन धर्म की आचार्य परम्परा में आचार्य भिक्षु का नाम एक क्रांतिकारी, प्रभावक एवं सत्याग्रही आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित है। उन्होंने साधना की पवित्रता, संघ की सुदृढ़ता, सामुदायिक व्यवस्था व संविभागिता पर बहुत बल दिया। उक्त विचार व्यक्त करते हुए साध्वी पुण्ययशाजी ने कहा- आचार्य भिक्षु का 223 वां चरम महोत्सव हम त्रिदिवसीय कार्यक्रम के रूप में मना रहे हैं। आचार्य भिक्षु के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा– हिंसा भाव, भाषा और क्रिया से जुड़ी है। किसी का मात्र प्राण वियोजन कर देना ही हिंसा नहीं निषेधात्मक भावों के साथ जीना भी हिंसा है। हिंसा में तलवार के लिए हाथ भले न भी उठे पर किसी को मारने का संकल्प भी मानस भूमि पर उतर गया तो वह व्यक्ति हिंसा का भागीदार बन जायेगा। व्यक्ति स्वयं अपराध न करे पर अपराध में दिया गया सहयोग अपराध की स्वीकृति ही होगी इसलिए कृत, कारित और अनुमोदित हिंसा हिंसा है। मन का संयम निषेधात्मक भावों का शोधन करेगा, भाषा का संयम वैचारिक संघर्षों को विराम देगा और क्रिया का संयम इच्छाओं और अपेक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करेगा। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों के द्वारा भिक्षु अष्टकम से किया गया। साध्वी विनीतयशाजी ने कविता के माध्यम से अपने आराध्य को अपनी श्रद्धा समर्पित करते हुए कुशलता से मंच का संचालन किया। साध्वी वर्धमानयशा जी ने आगमवाणी पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

विजयादशमी पर विशेष आलेख

कितना महनीय है श्री राम का जीवन चरित्र

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

जैन, बौद्ध, सिख, सनातन सभी धर्म सम्प्रदायों में जिनका नाम गौरव के साथ लिया जाता है, वह नाम है - श्रीराम। न केवल भारतीय परम्परा बल्कि विदेशी धरती पर भी श्रीराम का नाम गौरव के साथ आदर्श के रूप में लिया जाता है। श्रीराम का नाम वैश्विक स्तर पर विश्रुत है। रामायण एक महाग्रन्थ है। तुलसी और वाल्मीकी रामायण एक महनीय ग्रंथ है जिसमें श्रीराम के जीवन चरित्र को विशद् रूप में व्याख्यायित किया गया है। श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है क्योंकि उनका कार्य मर्यादा-सहित था। श्रीराम के जीवन के अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं, जिनमें उन्होंने मर्यादा को सर्वोपरि स्थान दिया। और तो क्या, जब राम और रावण का युद्ध चल रहा था, उस समय बाण के एक प्रहार से लक्ष्मण बेहोश कर गिर पड़ते हैं। भ्रातृप्रेम से विह्वल होकर राम भी उदासीन होकर बैठे हैं। उस समय राम के उदासीन चेहरे को देखकर नील, अंगद आदि सुभट परस्पर में बात करते हुए बोलते हैं—देखो, प्रभु राम भी आज कितने दुःखी हैं क्योंकि भाई लक्ष्मण बेहोश पड़े हैं। माता कौशल्या अयोध्या में हैं और माता सीता रावण की अशोक वाटिका में हैं। ये शब्द सुनकर श्रीराम ने कहा—मुझे इस बात का कोई गम नहीं कि मेरा प्यारा भाई लक्ष्मण बेहोश पड़ा है, न ही मेरे मन में इस बात का दुःख है कि मेरी माता कौशल्या अयोध्या में हैं। मुझे इस बात का अफसोस भी नहीं कि मेरी चरण-चंचलिका सीता रावण की अशोक वाटिका में विलाप कर रही है। मुझे कोई दुःख है तो सिर्फ इस बात का कि जब विभीषण मेरे पास आया था, तब मैंने उसे लंकेश शब्द से संबोधित किया था। अब अगर शक्ति के प्रहार से लक्ष्मण नहीं रहेगा तो मैं भी जीवित नहीं रह सकूँगा और मैं विभीषण को लंका का अधिपति नहीं बना सका तो मेरा वचन भंग हो जाएगा। आज मुझे दुःख है सिर्फ इस बात का कि मेरा वचन निष्फल हो जाएगा। उस रणभूमि में राम को अपने वचन भंग होने का दुःख सता रहा था। यह था श्रीराम के जीवन का आदर्श कि मेरा वचन भंग नहीं होना चाहिए। इसीलिए कहा जाता है— रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाए।

आज के युग में राम का नाम जपने वाले बहुत हैं, पर श्रीराम के आदर्शों पर चलने वाले कहाँ मिलते हैं। रामायण का नित्य पाठ करने वाले बहुत मिलते हैं। संत वाल्मीकी द्वारा रचित अद्भुत रामायण को संत वाल्मीकी ने देवता, दानवों और मानवों में बाँटने के बाद शेष बचे दो अक्षर 'राम' को अपने पास रख लिया। तब सबने कहा—जब रामायण में से राम को अपने पास में रख लिया, फिर हमको क्या मिला? जब रामायण का सारभूत तत्त्व राम है, उसी प्रकार धर्म का सार है—सत्य। आज धर्म की उपासना करने वाले तो बहुत मिलते हैं, पर सत्य पर अडिग रहने वाले कोई विरले ही होते हैं।

जब एक बार श्रीराम नदी के किनारे पहुँचे तो देखा, एक बगुला धीमे-धीमे कदमों से चल रहा था। तब राम ने लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहा—'देखो लक्ष्मण, पश्य लक्ष्मण पम्पायां बकः परम धार्मिकः। मन्दं मन्दं पदं धते, जीवानां वध शंकया।' हे लक्ष्मण—यह बगुला कितना धार्मिक है, जो धीमे-धीमे पैरों से चल रहा है, कि इसमें कितना करूणा का भाव है। यह सोच रहा है—मेरे पैर से कोई जीव मर न जाए। यह सुनकर मछलियों ने कहा—हे राम! आप जिस बगुले की प्रशंसा कर रहे हैं, लगता है आप भी इस बगुले की मनोवृत्ति को नहीं जानते। यह तो हम जानते हैं कि यह बगुला कैसा है। अरे! इसने हमारे वंश को ही समाप्त कर दिया क्योंकि हम इसके चरित्र को जानती हैं। रात-दिन हमारे आस-पास यह रहता है।

आवश्यकता है—व्यक्ति का चरित्र श्रेष्ठ होना चाहिए। उसकी कथनी-करनी में समानता होनी चाहिए। राम के आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता है। केवल नाम जपना ही सार्थक नहीं होता।

एक कवि ने बहुत सुन्दर पंक्तियाँ लिखी हैं—

'तुम पुण्य कार्य मत करो भले ही,
किन्तु करो मत पाप;
पुण्य के फल को पा लोगे।
तुम राम नाम मत जपो भले ही,
किन्तु करो सत्काम;
राम के बल को पा लोगे।'

आवश्यकता है विजयादशमी के इस अवसर पर यह संकल्प हो कि हम जीवन में कथनी-करनी की एकरूपता को अपनाकर सदैव सत्य को सुरक्षित रखेंगे। तभी पर्व मनाने की सार्थकता हो सकेगी। तभी जीवन में विजयश्री को हासिल कर पाएँगे।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर भिक्षु स्तुति

तेरापंथ के आद्य प्रणेता

● डॉ. सारिका दुगड़, गुवाहाटी ●

तुम ही नैया, तुम ही खेवैया, तुम ही तारणहार।
तेरापंथ के आद्य प्रणेता वंदन बारंबार।
बनकर माझी पार लगाते, नैया फंसे ना बीच मझधार।
जो भी मन से भिक्षु को ध्याता,
हो जाता भवसागर से पार।

आत्मसमर के अमर वीर की, महिमा अपरंपार।
त्याग तपोबल, प्रबल मनोबल से पाया जीवन का सच्चा सार।
तेरापंथ की ज्योति से ज्योतिर्मय सारा संसार।

भिक्षु का अवदान अलौकिक पाकर जीवन है गुलजार।
सत्यशोध कर, रूढ़िवाद पर किया प्रबल प्रहार।
शासन में अनुशासन का, किया अलबेला समाहार।

भिक्षु नाम स्मरण से खुल जाते हैं अंतर द्वार।
रोग शोक भय दूर होते, होते सपने साकार।
पंख टूटे परिंदे भी, उड़ान भरते पंख पसार।

शूलों को चुन, फूल खिलाते, देते संयममय जीवन का उपहार।
भिक्षु स्वामी अंतर्यामी, मेरे मन के सुन लो यह उद्‌गार,
सिरियारी के संत अनोखे, कर दो बेड़ा पार।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
❖ सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।

— आचार्य श्री महाश्रमण

'अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स व एलिवेट - एक्सपीरियंस द रियल हाई' शिविर का आयोजन

नई दिल्ली।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित 'अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स व एलिवेट एक्सपीरियंसः द रियल हाई' शिविर में जिला शैक्षणिक शिक्षण संस्थान (डीआईईटी), दरियागंज, नई दिल्ली के 150 से अधिक शिक्षकों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान शिष्य डॉ. मुनि अभिजित कुमार जी ने कहा कि शिक्षा ही जीवन की अधिष्ठात्री है।

शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान का माध्यम नहीं है, बल्कि श्रेष्ठ संस्कारों के जागरण का भी माध्यम है। शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव के लिए अणुव्रत एक महत्वपूर्ण अवदान है। इसके प्रयोगों से अच्छे चरित्र सम्पन्न व्यक्तित्व के विकास की कमी दूर की जा सकती है। चरित्र निर्माण के लिए ध्यान और योग नितांत आवश्यक हैं। आज की जीवन शैली पर भौतिकता हावी हो रही है, जिसके कारण व्यक्ति भटकन का जीवन जी रहा है। व्यक्तित्व निर्माण के लिए सही लक्ष्य का चयन और उसके अनुरूप कार्य करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जो संस्कारवान होता है, वह अपने जीवन में हर कदम पर सफलता को प्राप्त करता है, जबकि जो मूढ़ता का जीवन जीता है, उसके जीवन में सम्यक् संस्कारों का सिंचन नहीं हो सकता। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुशल डॉक्टर, वकील, इंजीनियर बन रहे हैं, किंतु अच्छे व्यक्ति का निर्माण नहीं हो पा रहा है। प्रत्येक विद्यार्थी जीवन में नशे से मुक्त रहे, यह सदा प्रयास किया जाना चाहिए। इस अवसर पर मुनि श्री ने सभी शिक्षकों को आजीवन नशा मुक्त रहने का संकल्प दिलाया। सभी विद्यार्थियों ने भी आजीवन नशा न करने का संकल्प लिया।

मुनि जागृत कुमार जी ने कहा कि डिजिटल डिटॉक्स वह समयावधि है, जब कोई व्यक्ति स्वेच्छा से स्मार्टफोन, कंप्यूटर और सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग करने से परहेज करता है। डिजिटल उपकरणों का अत्यधिक उपयोग हमारे मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है। इसके माध्यम से बेहतर नींद पैटर्न, स्मृति और एकाग्रता में सुधार किया जा सकता है। साथ ही शारीरिक गतिविधियों जैसे व्यायाम, योग और ध्यान के लिए अधिक समय मिल सकता है। यह व्यक्तिगत रूप से लोगों से जुड़ने और तनाव मुक्त होने का भी एक तरीका है।

मुनि जी ने कहा कि अणुव्रत विधायक भावों के निर्माता हैं। इनके प्रयोग से व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन और बुरी आदतों का परिष्कार होता है। उन्होंने ध्यान को जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बताते हुए कहा कि इसे सभी शिक्षा केंद्रों में लागू किया जाना चाहिए।

प्रत्येक शिक्षक आभा सम्पन्न, तेजस्वी और ओजस्वी बने, इसके लिए आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रतिपादित प्रेक्षाध्यान पद्धति के प्रयोग कारगर सिद्ध हुए हैं। डीआईईटी की प्रधानाचार्या अंजुल शर्मा ने मुनिवृन्द सहित सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम अपने आप में अति महत्वपूर्ण है। इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर आवश्यक है। इस अवसर पर अणुव्रत न्यास के न्यासी शांति कुमार जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम को शिक्षक वर्ग के लिए महत्वपूर्ण माना। अणुव्रत न्यास के पूर्व न्यासी विजयवर्धन डागा, अणुव्रत समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष बाबूलाल गोल्छा ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन आचार्य श्री तुलसी का महान अवदान है, जिसके माध्यम से व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है। कार्यक्रम के संयोजक, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के वरिष्ठ प्रशिक्षक रमेश काण्डपाल ने शिक्षकों को जीवन में संस्कारों के साथ-साथ अहिंसा और जीवन विज्ञान योग के प्रयोग कराए।

पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

जयपुर

सोडाला, श्यामनगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र में मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में संवत्सरी महापर्व मनाया गया। कार्यक्रम में संतों ने उपस्थित लोगों को सहज और सरल बन अपने आप को देखने, स्वयं को सुधारने की बात कही। उन्होंने बताया कि संवत्सरी का पर्व आत्मालोचन, आत्मशोधन और ग्रन्थि विमोचन का महापर्व है। संतों ने कहा - सम्यक्त्व अनमोल रतन है इसकी सुरक्षा के लिए भीतर की गांठें खोलना जरूरी है। जीवन में कभी किसी के प्रति कलुष भाव आया हो अथवा अनुचित व्यवहार हो गया हो तो सरल हृदय से खमतखामणा करना स्वयं को तनाव और भार मुक्त करने का मार्ग है। मुनिश्री ने भगवान महावीर के जीवन को सरल और सरस ढंग से व्याख्यायित किया। संवत्सरी के पावन अवसर पर लगभग 131 से अधिक व्यक्तियों ने उपवास एवं पोषध व्रत की उपासना की। 12 श्रावक-श्राविकाओं ने अठ्ठाई तप का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ महिला मंडल (सी-स्कीम) की बहिनों ने संवत्सरी गीत का संगान किया। कार्यक्रम में मारवाड़ जंक्शन के विधायक केसाराम चौधरी सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

मैत्री दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने कहा - मैत्री का अर्थ है किसी से वैर-विरोध का भाव नहीं रखना। सब प्राणियों को क्षमा करना और सब प्राणी मुझे क्षमा करें यही है मैत्री की भावना। वास्तव में क्षमा उत्तम धर्म है। मुनि श्री ने आगे कहा - क्षमा वीरों का भूषण है। इससे मन का प्रदूषण भी मिटता है। बाह्य और आंतरिक वातावरण स्वच्छ और पवित्र बन जाता है। क्षमा देना और क्षमा मांगना कायरों का नहीं, वीरों का काम है। महान वे होते हैं जो अपने अहंकार को छोड़ झुकना जानते हैं। मुनि संभव कुमार जी ने कहा - क्षमापना का पर्व पर्युषण पर्व का हृदय है। इसमें व्यक्ति अपनी गलतियों की क्षमा मांगता है और दूसरों की भूलों को भूल कर उसे क्षमा करता है। क्षमापना की शुरुआत हमेशा अपनों से होनी चाहिए। कार्यक्रम के प्रारंभ में आचार्य तुलसी द्वारा रचित मैत्री गीत का संगान किया गया। इस अवसर पर समाज की सभी सभा संस्थाओं द्वारा सामूहिक खमतखामणा का कार्यक्रम भी रखा गया। खमतखामणा परिपत्र का वाचन सभा के उपाध्यक्ष सुरेंद्र सेठिया ने किया। सभा के मंत्री सुरेंद्र सेखानी व सुशीला नखत ने भी विचार रखे।

नाथद्वारा

नाथद्वारा। साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। पर्युषण महापर्व के आठों दिनों में तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवती मंडल, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ तथा तेरापंथ युवक परिषद द्वारा क्रमशः प्रतिदिन कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। प्रत्येक दिन का शुभारंभ मंगलाचरण के साथ हुआ।

प्रथम दिवस – खाद्य संयम दिवस पर साध्वी श्री जी ने कहा— 'भोजन करना सीखें। तेज रफ्तार की जिंदगी में आजकल चबा-चबा कर नहीं, दबा-दबा कर खाया जा रहा है, जिससे असद्विचार बढ़ रहे हैं। खाद्य संयम से तन-मन और चिंतन स्वस्थ रहता है।' उन्होंने बताया कि पर्युषण की यह द्वादशी चतुर्थ आचार्य जयाचार्य से जुडी हुई है। आचार्य जयाचार्य का व्यक्तित्व ओजस्वी रहा और अनुशासन प्रवर्तक के रूप में प्रकट हुआ। इस विषय पर साध्वी गीतार्थ प्रभा जी ने भी अपने विचार रखे। साध्वी श्री ने आगे भगवान महावीर के 27 भवों का विवरण प्रारंभ किया।

द्वितीय दिवस साध्वी श्री ने कहा— 'चिड़िया अपने पंखों को फड़फड़ाकर धूल को विसर्जित करती है, ठीक वैसे ही स्वाध्याय करते-करते कर्मरज का विसर्जन किया जा सकता है। सलक्ष्य किया गया स्वाध्याय व्यक्ति के लिए विशेष और महत्वपूर्ण हो जाता है।' भगवान महावीर के जीवन-वर्णन में उन्होंने नयसार के भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति का उल्लेख किया। इस विषय पर साध्वी प्राज्ञप्रभा जी ने प्रस्तुति दी।

सामायिक दिवस पर साध्वी श्री जी ने कहा— 'सामायिक समता की साधना है। जैसे असली सिक्का मूल्यवान होता है, नकली नहीं; वैसे ही शुद्ध और निर्मल सामायिक ही मूल्यवान है।' भगवान महावीर की आध्यात्मिक यात्रा में उन्होंने सम्यक्त्व के महत्व को स्पष्ट किया। इस दिन साध्वी गीतार्थ प्रभा जी ने विषय पर प्रस्तुति दी तथा अभिनव सामायिक का प्रयोग व्यवस्थित और सुंदर रूप में आयोजित किया गया।

वाणी संयम दिवस पर साध्वी श्री जी ने कहा— 'वाणी का प्रयोग किसी के घर में आग लगाने के लिए नहीं, बल्कि आग शांत करने के लिए होना चाहिए।'

उन्होंने एक कवि की पंक्तियाँ उद्धृत कीं—

'शब्द संभाले बोलिए, शब्द के हाथ न पांव।

एक शब्द औषधि करे, एक करे है घाव।।'

साध्वीश्री ने भगवान महावीर की आध्यात्मिक यात्रा में सुपात्र दान के महत्व को भी उजागर किया। इस विषय पर साध्वी नमन प्रभा जी ने प्रस्तुति दी।

पंचम दिवस प्रवचन में साध्वी श्री जी ने कहा— 'व्रत को स्वीकार वही करता है जिसका हृदय संयम के प्रति आकृष्ट होता है। व्रत चेतना का जागरण, बुराई रूपी परावैगनी किरणों को पास आने से रोकता है। व्रत हेय और आदेय की चेतना को जागृत कर संयम के महत्व को बढ़ाता है।' भगवान महावीर की आध्यात्मिक यात्रा में उन्होंने तीसरे भव मरीचि के जीवन को सरस शैली में प्रस्तुत किया। विषय प्रस्तुति साध्वी गीतार्थ प्रभा जी ने दी।

जप दिवस पर साध्वी श्री ने परिषद को संबोधित करते हुए कहा— 'जप मात्र दो अक्षरों का छोटा सा शब्द है, किंतु इसके भीतर महान लाभ निहित है। जप हस्ताक्षर है किंतु अत्यंत शक्तिशाली। जप आत्मा को पुष्ट करता है। जब जप करने वाला एकाग्र होकर तल्लीन हो जाता है, तब सफलता स्वयं उसके द्वार पर दस्तक देती है।' भगवान महावीर के 17वें भव विश्वभूति और 19वें भव वासुदेव त्रिपृष्ठ का वर्णन साध्वी श्री ने किया। विषय प्रस्तुति साध्वी प्राज्ञ प्रभा जी ने दी।

सप्तम दिवस साध्वी श्री ने कहा— 'ध्यान वह साधन है जिसमें व्यक्ति स्वयं को साध सकता है, स्वयं का साक्षात्कार कर सकता है। ध्यान ऐसा सीसीटीवी कैमरा है जिससे भीतर की तस्वीर ली जा सकती है। यह कर्मों को मांजने की श्रेष्ठ प्रवृत्ति है।' भगवान महावीर का जीव 25वें भव में तप और अर्हत-भक्ति द्वारा तीर्थंकर नामकरण का उपार्जन कर देव बने। विषय प्रस्तुति साध्वी प्राज्ञ प्रभा जी ने दी।

अष्टम दिवस – संवत्सरी महापर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। साध्वी रचनाश्रीजी ने विशाल धर्मपरिषद को संबोधित करते हुए कहा— 'संवत्सरी पर्व एक अनूठा पर्व है, जिसमें सदिया, भदिया और कदिया श्रावक भी मिल-जुलकर इस पर्व की आराधना करते हैं। यह पर्व चेतना के ऊर्ध्वारोहण का विशिष्ट पर्व है और आत्मशुद्धि का महान अनुष्ठान है। यह हमें अपने घर में रहने की जानकारी देता है।' प्रभावक आचार्य परंपरा में साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने आचार्य व्रजस्वामी और आचार्य श्याम का जीवन वर्णन प्रस्तुत किया तथा साध्वी नमन प्रभा जी ने आचार्य स्थूलिभद्र के जीवन का वर्णन किया। साध्वी रचनाश्री जी ने भगवान महावीर के पश्चात जैन धर्म के विभाजन से लेकर तेरापंथ के उद्भव और उसकी यशस्वी आचार्य परंपरा का विस्तृत वर्णन किया तथा वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी तक के आचार्यों के अनेक रोचक प्रसंग प्रस्तुत किए। तत्पश्चात साध्वी प्रज्ञाप्रभा जी ने साध्वी प्रमुखाओं के जीवन प्रसंगों का सुंदर वर्णन किया। सभा में उपस्थित विशाल जन-समूह ने सामूहिक रूप से उपवास का प्रत्याख्यान किया। अनेक श्रद्धालुओं ने अष्टप्रहरी, षट्प्रहरी और चतु:प्रहरी पौषध का भी प्रत्याख्यान किया।

आठों दिनों के विषयों पर आधारित गीत साध्वी गीतार्थ प्रभा जी, साध्वी प्राज्ञ प्रभा जी और साध्वी नमन प्रभा जी द्वारा प्रस्तुत किए गए। रात्रिकालीन कार्यक्रम में प्रतिक्रमण और अर्हत वंदना के पश्चात साध्वी श्री जी ने 'तेरापंथ को जानिए इतिहास के आईने में' विषय पर अश्रुत घटनाओं के रोचक संस्मरण प्रस्तुत किए, जिससे श्रावक समाज लाभान्वित हुआ।

इंदौर

पर्युषण महापर्व के अवसर पर मुनि अर्हत कुमार जी ने जनसैलाब को संबोधित करते हुए कहा कि खाद्य संयम अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति का शरीर ही उसका मुख्य साधन होता है और उसके लिए भोजन आवश्यक है। हमारा आहार सात्विक होना चाहिए। हम स्वाद के लिए नहीं, बल्कि साधना के लिए खाएं। खाने के लिए जीने वाला संसारी होता है, जबकि जीने के लिए खाने वाला साधक कहलाता है। स्वाध्याय दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि स्व का अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय वह दर्पण है जिसमें मनुष्य अपने रूप को देखकर उसे संवार सकता है। इसकी प्रतिदिन साधना करने से व्यक्ति ज्ञानरूपी अमृत से स्वयं को आप्लावित कर सकता है। सामायिक दिवस पर मुनिश्री ने बताया कि जिस क्रिया से समता की प्राप्ति और ममता की समाप्ति होती है, उसे सामायिक कहते हैं। सामायिक आध्यात्मिक चेतना के जागरण का प्रयोग है और आत्मशुद्धि की विलक्षण प्रक्रिया है।

वाणी संयम दिवस पर कहा गया कि वाणी में मिठास हो तो स्थान अपने आप मिल जाता है। वाणी में हर समस्या का समाधान छिपा है। अपनी वाणी को इष्ट, शिष्ट और मिष्ट बनाएं। अणुव्रत दिवस के अवसर पर बताया गया कि अणुव्रत प्रदर्शन का नहीं, आत्मदर्शन का मार्ग है। भ्रष्टाचार की बढ़ती धारा को रोकने के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का शंखनाद किया। इसे अपनाकर व्यक्ति अशांत जगत में भी शांति प्राप्त कर सकता है। जप दिवस पर मुनिश्री ने कहा कि जप विघ्न-विनाशक, शांतिदायक और मंगलकारक है। इसके लिए एकाग्रता, तल्लीनता और उच्चारण की शुद्धता अत्यंत आवश्यक है। यदि हम पवित्र भाव से जप करेंगे तो हमारे मन की निर्मलता हमें अद्भुत सिद्धियां प्रदान करेगी।

ध्यान दिवस पर ध्यान के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया गया कि जैन दर्शन में ध्यान की अत्यंत महत्ता है। अध्यात्म में ध्यान की प्रमुख भूमिका है। मेडिटेशन ही सर्वोत्तम मेडिसिन है। ध्यान तन को निरोग, मन को निश्चल और चेतना को निर्मल बनाता है। भगवती संवत्सरी महापर्व का महत्व स्पष्ट करते हुए कहा गया कि यह दिन स्वयं को निहारने, आत्मा से मुलाकात करने और स्वयं को स्वयं से जोड़ने का दिन है। पर्व तो बहुत आते हैं, पर महापर्व केवल एक ही है, क्योंकि यह हमें खुद से जोड़ता है और फिर हमें खुदा बना देता है। आज के दिन हमें सोचना चाहिए कि क्या हमने अपने मन को बुहारा, उसमें पड़ी गांठों को खोला और आत्मा को पूर्ण रूप से निर्मल बनाने का प्रयास किया या नहीं।

मुनि भरतकुमारजी ने कालचक्र, तीर्थंकर जीवन और भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश डाला। मुनि जयदीपकुमारजी ने अंतगढ़ सूत्र का वाचन किया। रात्रिकालीन प्रवचनों में विविध विषयों पर उद्बोधन हुआ। सातों दिन अखंड जप भी गतिमान रहा।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
29 सितम्बर - 05 अक्टूबर, 2025

पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

रायसिंहनगर

पर्युषण पर्व का सर्वोच्च दिन संवत्सरी महापर्व उल्लास पूर्वक तेरापंथ भवन में मनाया गया। उपासिका विनोद सुराणा ने संवत्सरी को मानव जीवन को निखारने व संवारने तथा असंयम से संयम की ओर जाने का दिन बताते हुए कहा कि आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत संवत्सरी पर्व त्याग, तपस्या, सत्य, अहिंसा, क्षमा, समता व मैत्री की प्रतिष्ठा का दिन है। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष, ईर्ष्या आदि कषायों से जकड़ी हुई हमारी आत्मा पर छाए इन आवरणों को हटाने के लिए आत्म दर्शन बहुत जरूरी है।

भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत, सत्य ,मैत्री के सिद्धांत व उनकी शिक्षाएं तथा उपदेश हजारों वर्ष बीतने के बाद आज भी प्रासंगिक हैं। उपासिका बहन ने 12 व्रतों की व्याख्या करते हुए संकल्प ग्रहण करवाए। उपासिका मोनिका नौलखा ने कहा कि करुणा, प्रमोद, मैत्री व आत्म-शोधन का पर्व संवत्सरी हमारे वर्ष भर में किए गए कार्यों की समीक्षा का दिन है। इस छोटी सी जिंदगी में हमें मनमुटाव, बोलचाल, वैर-विरोध व वैमनस्य को भूलकर शुद्ध हृदय से परस्पर क्षमा मांगनी चाहिए। मंजू बोथरा के मंगलाचरण गीत के बाद गजसिंहपुर की बहनों ने 'वंदना महावीर सौ-सौ वंदना' गीत प्रस्तुत किया। उन्होंने तेरापंथ धर्म संघ के आचार्यों के जीवन पर भी प्रकाश डाला। भाई बहनों ने उपवास व पौषध के द्वारा धर्माराधना की।

क्षमापना दिवस पर बोलते हुए उपासिका विनोद सुराणा ने कहा कि क्षमा का अर्थ केवल क्षमा मांगना या प्रदान करना ही नहीं है, अपितु मन के कलुषित विचारों का त्याग करना भी है। क्षमा मांगने से कोई नीचा नहीं होता। क्षमा का आदान-प्रदान करने से व्यक्ति महान और ऊंचा बनता है। उन्होंने प्रवास के दौरान अपने प्रवचनों, विचारों, व्यवहार एवं बर्ताव से किसी को ठेस लगने पर सभी श्रावक-श्राविकाओं से क्षमा याचना की। भाई-बहनों ने भी उपासिकाओं से क्षमा याचना की। उपासिका मोनिका नौलखा ने भी अपने विचार रखे। डॉ. संजय बोथरा, गौतम जैन, हिमांशु बोथरा एवं अरिहंत बोरड ने गीतिका गाई। सभा के प्रवक्ता जयदेव गोयल ने उपासिकाओं के प्रवास को अत्यंत लाभकारी बताते हुए कहा कि किसी प्रकार के अविनय के लिए श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष रविंद्र जैन की तरफ से क्षमा याचना की और पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। जुगराज पींचा ने भी अपने विचार रखें। संयोजक प्रदीप बोथरा ने उपासिका बहनों का आभार जताया। सभा की ओर से उपासिका बहनों को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। गजसिंहपुर की विजयलक्ष्मी बोथरा एवं सरोज पिंचा की तपस्या की अनुमोदना करते हुए तेरापंथ महिला मंडल ने साहित्य भेंट कर उन्हें सम्मानित किया।

सिटीलाइट, सूरत

तेरापंथ भवन में पर्युषण पर्वाराधना का आयोजन साध्वी प्रोफेसर डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। खाद्य संयम दिवस पर प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा—'हम जिस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे, वह आज हमारे समक्ष है। प्रत्येक सम्प्रदाय भाद्रपद माह में उत्सव मनाता है। इस माह में स्वतः ही अध्यात्म के विकिरण प्रकट होते हैं। पर्युषण आत्मजागरण और आत्माराधना की प्रेरणा देता है। हम उन महापुरुषों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने इस महापर्व को आठ दिनों तक मनाने का विचार किया। प्रदर्शन से आत्मदर्शन की दिशा में प्रस्थान ही पर्युषण है। इसका अर्थ है—चारों दिशाओं से हटकर आत्मा में निवास करना।'

साध्वीश्री ने निर्धारित अष्टदिवसीय साधना से आत्मा को पुष्ट बनाने, उपशान्त कषाय की साधना करने और महावीर वाणी के सार—आसक्ति व मूर्च्छा का त्याग करने का संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने आहार संयम के संदर्भ में जैन जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ सिंवाची मालाणी, बालोतरा, पचपदरा, असाडा, कानाना और आसोतरा के सूरत प्रवासी श्रावक-श्राविकाओं के मंगल संगान से हुआ। साध्वीवृन्द ने सहगान प्रस्तुत किया तथा 'पर्युषण आया गाइड्स के साथ' की रोचक प्रस्तुति दी।

साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभाजी ने नए अंदाज़ में आहार संयम के टिप्स बताए। तेरापंथ सभा सिटीलाइट अध्यक्ष हजारीमल भोगर ने स्वागत भाषण दिया। रात्रिकालीन कार्यक्रम 'इतिहास के बोलते पृष्ठ' में प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने 'दिव्य ज्योति साध्वी दीपां जी' का प्रेरक जीवनवृत्त सुनाया। संचालन साध्वी डॉ. राजुलप्रभाजी ने किया।

स्वाध्याय दिवस पर प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा—'स्वाध्याय आत्महित की प्रेरणा देता है। इससे भीतर का आनन्द प्रकट होता है और समस्याओं का समाधान मिलता है। आज पद, प्रतिष्ठा और पैसे के मोह में मनुष्य अपना विवेक खो रहा है, जिससे परिवार और समाज में अशान्ति फैल रही है।' साध्वीश्री ने जैन दर्शन, आगम, तेरापंथ दर्शन और आचार्यों द्वारा रचित व सम्पादित ग्रंथों के अध्ययन की प्रेरणा दी। महावीर जीवन दर्शन के संदर्भ में उन्होंने 'नयसार भाव' का विस्तृत विवेचन किया।

इस अवसर पर वाव, कच्छ, भुज और हरियाणा निवासी सूरत प्रवासी भाई-बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। डॉ. साध्वी राजुलप्रभा और डॉ. साध्वी शौर्यप्रभाजी ने 'आत्मा-कषाय' विषय पर प्रेरक संवाद प्रस्तुत किया। साध्वी अतुलयशाजी ने कहा—'ज्ञान का प्रकाश जीवन पथ को सहज और निर्बाध बनाता है।' साध्वीवृन्द ने स्वाध्याय पर गीतमय सेमिनार प्रस्तुत किया। संचालन साध्वी शौर्यप्रभाजी ने किया। रात्रि में प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने विजय सिंह पटवा की गौरव गाथा सुनाई।

तृतीय दिवस तेरापंथ युवक परिषद, सिटीलाइट द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा—'समता की आय ही सामायिक है। केवल बाहरी परिवेश ही नहीं, आंतरिक जागरूकता और मोह-माया का क्षय ही वास्तविक सामायिक है।' चतुर्दशी के अवसर पर साध्वीश्री ने श्रावक समाज से आग्रह किया कि वे चिंतन करें—हमारा सम्यक्त्व और तेरापंथ के सिद्धांत कैसे सुरक्षित रहें? संघ संवर्धन हेतु नियोजित चिन्तन आवश्यक है। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर ने निष्ठा पत्र वाचन किया। साध्वी राजुलप्रभाजी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया। मारवाड़ क्षेत्र (जसोल, समदड़ी, टापरा, पारलू, बायतू, बाड़मेर आदि) के सूरत प्रवासी श्रावक-श्राविकाओं ने मंगलाचरण किया।

साध्वीवृन्द ने 'कर्मों का प्रहार, उज्ज्वल आत्मा का अवतार' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। महास्ती चंदनबाला के तेले करने वाले साधकों का प्रत्याख्यान कराया गया, अश्विनी मेहता ने 25 का प्रत्याख्यान किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने 'वचनसिद्ध संत गुलहजारी' का जीवन दर्शन सुनाया।

वाणी संयम दिवस पर राजसमंद, भीलवाड़ा, चितौड़गढ़ और उदयपुर निवासी सूरत प्रवासी श्रावकों ने मेवाड़ी अंदाज़ में मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा—'शब्द शक्ति के बिना व्यवहार नहीं चलता, पर विवेक आवश्यक है। समाज की अधिकांश समस्याएँ वाणी से उत्पन्न होती हैं।' उन्होंने कहा —कब बोलना है? क्यों बोलना है? कहाँ बोलना है? और क्या बोलना है?—जीवन व्यवहार में इन प्रश्नों को आधार बनाना चाहिए। साध्वी वृन्द द्वारा 'पाषाण बना भगवान' की प्रस्तुति ने वाणी की महत्ता उजागर की। साध्वी शौर्यप्रभाजी ने कहा—'वाणी रूपी आभूषण की सुरक्षा करनी चाहिए।' साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने महावीर के पूर्व भव—मरीचि से विश्वभूति तक की जीवन यात्रा करवाई। रात्रिकाल में उन्होंने 'विदेश यात्रा अनुभव—जिनशासन वैभव' विषय पर प्रेरक प्रवचन दिया।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा—'भोगवादी संस्कृति बढ़ रही है। इस स्थिति में व्रतों का अंकुश आवश्यक है। सामाजिक कुरीतियों को अपने घर से हटाने की शुरुआत करें। विवाह जैसे अवसरों पर शराब का प्रयोग समाज को गर्त में ले जा रहा है। ऐसी प्रवृत्तियों पर रोक लगनी चाहिए।' इस अवसर पर सरदारशहर, गंगाशहर आदि क्षेत्र के सूरत प्रवासी श्रावक-श्राविकाओं ने थली क्षेत्र का इतिहास दर्शाते हुए मंगलसंगान प्रस्तुत किया। साध्वीवृन्द द्वारा 'अणुव्रत हॉस्पिटल' की प्रेरक प्रस्तुति दी गई। रात्रि में किशोर-कन्या मंडल द्वारा 'ओपन टॉक शो विद साध्वीश्री' का आयोजन हुआ।

पर्युषण के छठे दिन जप दिवस के अवसर पर सेराप्रांत के सूरत प्रवासी श्रावकों ने मंगलसंगान किया। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा—'मंत्र शक्ति को हर परम्परा स्वीकार करती है। यह समस्याओं के समाधान और आत्मशक्ति प्राप्ति का अमोघ उपाय है।' उन्होंने करमाला, मणिमाला, वर्णमाला, ओमवर्त, शंखावर्त और नन्दावर्त की साधनाओं का उल्लेख करते हुए परिषद को मंत्र जप की प्रेरणा दी। साध्वीवृन्द ने 'सम्यक्त्व लाइन्स' और साध्वी मंगलप्रज्ञाजी रचित गीत की प्रस्तुति दी। रात्रि में 'मंत्र शक्ति का चमत्कार—गुरु का उपहार' शीर्षक कार्यक्रम में श्रावक समाज बड़ी संख्या में उपस्थित रहा।

ध्यान दिवस पर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने महावीर के त्रिपृष्ठ भव का वर्णन करते हुए कहा—'महावीर ने साढ़े बारह वर्षों तक ध्यान साधना की।' आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने विलुप्त ध्यान पद्धति को पुनर्जीवित किया। साध्वीश्री ने कहा—'इस साधना से अनेक लोगों ने शांति, शक्ति और आनंद की प्राप्ति की है।' लाडनू, सुजानगढ़, छापर, बीदासर, मांडवा, रतनगढ़ आदि क्षेत्रों के सूरत प्रवासी श्रावकों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वीवृन्द द्वारा 'मोक्ष अपार्टमेंट' कार्यक्रम और 'भक्ति संध्या' का आयोजन हुआ।

संवत्सरी की आराधना में लगभग 225 से अधिक बालक-बालिका, किशोर-किशोरी एवं युवाओं ने अठाई से मासखमण तक के विविध तपों का प्रत्याख्यान किया। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा—'संवत्सरी जैनों का सिरमौर पर्व है। आज क्षमा के पथ को अपनाने की सबसे अधिक आवश्यकता है। इस पर्व के आलोक में साधक आत्मनिरीक्षण कर पवित्रता के मार्ग पर अग्रसर हों।'

इस अवसर पर साध्वीवृन्द ने महासती चंदनबाला का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया। साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी, साध्वी शौर्यप्रभाजी और साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने गणधर परंपरा, आचार्यों और साध्वीप्रमुखाओं के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वीवृन्द ने आचार्य महाप्रज्ञ रचित 'आत्मा की पोथी' गीत का संगान किया।

तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद सहित सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने खमतखामणा निवेदन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री महेन्द्र गांधी मेहता ने किया। हजारों लोगों ने पौषध आराधना और अखंड जप के साथ महापर्व की साधना की। समस्त पर्युषण काल की रात्रियों में साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने 'उपसग्गहर स्तोत्र' की साधना करवाई।

पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

टोहाना

समणी कुसुमप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण एवं भगवती संवत्सरी का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ एवं आध्यात्मिक आराधना द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि संवत्सरी महापर्व आत्मलोचन, आत्म विश्लेषण एवं आत्म निरीक्षण का पर्व है। यह आत्मा को निर्मल बनाने का पर्व है। हमें साल भर की गलतियां एवं भूलों का लेखा-जोखा करते हुए उसकी क्षमा मांगनी चाहिए एवं भविष्य में गलती ना करें ऐसा संकल्प करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर ने कहा है कि आत्मा ही स्वयं की मित्र है और आत्मा ही स्वयं की शत्रु है, आत्मा ही सुख है और आत्मा ही दुःख है। भगवान महावीर ने कहा है कि हमें छोटे से छोटे जीव को भी नही सताना चाहिए क्योंकि उनमें भी हमारे समान आत्मा का वास है। उन्होंने भगवान महावीर के जीवन चरित्र के बारे में विस्तार पूर्वक विवेचन किया। समणी कुसुम प्रज्ञा जी ने महासाध्वी चंदन बाला जी एवं जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों तथा विशेष आचार्यों के बारे में जानकारी दी। समणी जिज्ञासा प्रज्ञा जी ने भगवान ऋषभदेव की स्तुति भक्तामर स्तोत्र के माध्यम से की तथा अपनी भावना व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। इस अवसर पर शानू जैन तथा कंचन जैन ने गीत का संगान किया। सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने अष्ट प्रहरी पौषध, 6 प्रहरी पौषध, चार प्रहरी पौषध, उपवास, एकासन एवं सामायिक की आराधना कर संवत्सरी महापर्व को मनाया एवं धर्म आराधना की ।

आमेट

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व पर आठों दिन अखंड नवकार महामंत्र का जप अनुष्ठान में श्रावक समाज ने हर्ष उल्लास से सहभागी बने। साध्वीश्री जी द्वारा पर्युषण महापर्व पर भगवान महावीर के आध्यात्म यात्रा पर विशेष प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। साध्वीश्री जी ने खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, जप दिवस, सामयिक दिवस, वाणी संयम दिवस, अणुव्रत दिवस, ध्यान दिवस, भगवती संवत्सरी आठों दिन ज्ञान की गंगा बहाते हुए संबंधित विषयों पर अपना उद्बोधन प्रदान किया। भगवती संवत्सरी पर्व पर तेरापंथ सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल, कल्प हिरण ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। साध्वीश्री की प्रेरणा से पर्युषण पर्व पर जप, स्वाध्याय, तप, सामायिक, तेले की तपस्या, पौषध आदि का सुंदर क्रम चला। श्रावक समाज द्वारा क्षमा के इस महापर्व पर ज्ञानेश्वर मेहता ने सर्वप्रथम गुरुदेव से, भवन में विराजित साध्वीश्री व श्रावक-श्राविकाओ ने एक दूसरे से हाथ जोड़कर बारंबार खमत-खामणा किया। इस अवसर पर सभी संस्था के पदाधिकारी यशवंत कुमार चोरड़िया, मनसुख लाल बम्ब, पवन कच्छारा, मंजू देवी हिरण, सज्जन देवी मेहता, रेणु छाजेड़ ने संपूर्ण श्रावक समाज से क्षमा याचना की। सामूहिक पारणे के प्रायोजक भेरूलाल, दिलीप कुमार, नरेश कुमार हिरण का तेरापंथ समाज द्वारा प्रशस्ति-पत्र द्वारा सम्मान किया गया। साध्वीश्री की प्रेरणा से अष्ट पहरी, छः पहरी, चार पहरी 151 पौषध हुए। आस-पास के चोखले मोखुंदा, जिलौला, दिवेर, अगरिया से भी श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों ने द्रव्य सीमा, पौषध व मोबाइल का त्याग करने पर शांतिलाल गजरा देवी बाफना द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। आभार व कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री मनोहर लाल पीतलिया ने किया।

महरौली, दिल्ली

साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की मंगल आराधना त्याग, तप, जप, ध्यान, स्वाध्याय एवं समाधि आदि आध्यात्मिक अनुष्ठानों के द्वारा उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। केंद्र द्वारा निर्धारित विषयों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया।

महापर्व के प्रथम दिवस साध्वी कुंदन रेखा जी ने कहा— 'साधना का प्रारंभिक द्वार है संयम। संयम की चेतना से साधक आधि-व्याधि और उपाधि से मुक्त होकर समाधि में प्रवेश कर सकता है। पर्युषण महापर्व पर हमें इंद्रियों और मन की चंचलता को रोककर समतामय जीवन का अनुसरण करना चाहिए। खाद्य संयम जीवन के लिए अनिवार्य है। जीभ की लोलुपता न केवल आसक्ति और रोगों को निमंत्रण देती है, बल्कि भवभ्रमण भी बढ़ाती है।' साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा— 'भोजन हितकर और मितकर होना चाहिए, ताकि वह शरीर को पुष्ट करे, मन को स्वस्थ बनाए और भावधाराओं को पवित्र करे। इस अवसर पर खाद्य संयम गीत का संगान भी किया गया।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा— 'आत्मा के द्वारा आत्मा की पहचान का प्रवेशद्वार है स्वाध्याय। 'मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ'—यह संज्ञान स्वाध्याय से संभव है। स्वाध्याय मोक्ष तक पहुँचने का साधन है, यह भवभ्रमण मिटाता है और कर्मों को तोड़ गिराता है।' साध्वी कल्याण यशा जी ने कहा— स्वाध्याय ऐसी औषधि है जो सभी रोगों का शमन कर पूर्ण समाधि प्रदान करती है।

वाणी संयम दिवस पर साध्वी कुंदन रेखा जी ने कहा— 'वाणी का संयम अनेक समस्याओं को समाप्त कर देता है। व्यक्ति की पहचान उसकी भाषा से होती है। बहुत बोलने वाले यह विवेक खो बैठते हैं कि कैसे, क्या, कितना और क्यों बोलना है। पर्युषण की प्रेरणा है— कम बोलें, मधुर बोलें, विचारपूर्वक बोलें या मौन रहें।'

साध्वी कल्याण यशा जी ने कहा— 'धीरे बोलने वाला स्वस्थ, शांत, सबको प्रिय और वाणी के माधुर्य से संपन्न होता है।' इस अवसर पर 'मधुर बोलें' गीत का संगान हुआ।

साध्वी कुंदन रेखा जी ने कहा— 'सामायिक समताभाव में जीना सिखाती है। यह कषायों की अग्नि बुझाती है और योगों की चंचलता मिटाती है। सामायिक अनमोल है—इसे श्रेणिक राजा भी खरीद न सका और नरकगति से बच न सका। सामायिक आत्मा की खरी कमाई है।' साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा— 'सामायिक युग की समस्याओं—ईर्ष्या, हीनता और संकीर्णता—का एकमात्र समाधान है। भगवान महावीर ने 'पूणिया की सामायिक' की प्रशंसा की थी।' इस अवसर पर सामायिक गीत का संगान हुआ।

जप दिवस पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा— 'आत्मशक्ति, मंत्रशक्ति और इष्टशक्ति साधक को साधना के मार्ग पर अग्रसर करती हैं। नवकार महामंत्र आत्मबल को जागृत करता है और अनेक लब्धियों की प्राप्ति कर कर्मों को क्षीण करता है। इसे पूर्ण एकाग्रता से जपना चाहिए।' साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा— नवकार मंत्र चौदह पूर्व का सार है। यह आत्मपवित्रता का आधार और संसार-सागर से पार करने का मंगलमय साधन है।

अणुव्रत दिवस पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा— 'गुरुदेव तुलसी का अवदान लाखों लोगों तक पहुँचा। छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार कर समाज में जीना अणुव्रत का संदेश है। 75 वर्ष पूर्व गुरुदेव ने अणुव्रत का सिंहनाद किया, जिसकी आवाज राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक पहुँची।' साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा— 'अणुव्रत आत्मा को शुद्ध करने का सर्वोत्तम उपाय है। यह वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान देता है।' इस अवसर पर अणुव्रत गीत का संगान हुआ।

ध्यान दिवस पर साध्वी कुंदन रेखा जी ने कहा— 'ध्यान आत्मा की स्पंदनाओं को पहचानकर उन्हें निरस्त करने का उपाय है। यह निर्विचार अवस्था का जागरण है। प्रेक्षाध्यान शरीर के चैतन्य केंद्रों को जगाकर आत्मा को निर्मल करता है।' साध्वी सौभाग्य यशा जी ने कहा— 'ध्यान अंतर्चेतना को जगाने वाला साधन है। यह उपशांत कषाय और राग-द्वेष का शमन कर कर्मों की निर्जरा करता है।'

सातों दिनों में आचारांग और कल्पसूत्र के आधार पर भगवान महावीर के 27 भवों का विस्तार से वर्णन किया गया। गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा रचित समता से समंदर का वाचन हुआ।

संवत्सरी महापर्व पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा— 'जैनों का महाकुंभ संवत्सरी भोग से अभोग, राग से विराग और अत्याग से त्याग की ओर ले जाने वाला महापर्व है। यह अनसुनी चेतना के जागरण का आह्वान करता है।' उन्होंने विस्तार से बताया— संवत्सरी कब, क्यों और किसके द्वारा मनाई जाती है; आरे का वर्णन; तथा भगवान महावीर का जन्म, विवाह, दीक्षा, केवलज्ञान और चंदनबाला प्रसंग। साथ ही ग्यारह गणधर और प्रभावक आचार्यों की जीवन-गाथाएँ भी प्रस्तुत कीं।

इस अवसर पर लगभग 404 भाई-बहनों ने पौषध अनुष्ठान में भाग लिया और सैकड़ों ने उपवास किया। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने भगवान ऋषभदेव का जीवन-वर्णन किया। साध्वी कल्याणयशा जी ने उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन तथा आध्यात्मिक गीतों का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल साउथ दिल्ली और गुरुग्राम महिला मंडल ने मंगलाचरण स्वरूप गीत प्रस्तुत किए।

राउरकेला

राउरकेला। जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद द्वारा उपासक प्रकाश सिंघवी और उपासक सुरेंद्र बोथरा के निर्देशन में पर्युषण महापर्व हर्षोल्लास और भक्ति भाव के साथ मनाया गया। इस आठ दिवसीय महापर्व में प्रत्येक दिन विशेष आध्यात्मिक विषयों पर केंद्रित कार्यक्रम आयोजित किए गए।

प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस में उपासकद्वय ने श्रावकों को समझाया कि भोजन में संयम रखने से कर्मों की निर्जरा संभव होती है। द्वितीय दिवस स्वाध्याय दिवस पर उन्होंने आध्यात्मिक स्वाध्याय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आत्म-जागरूकता और मोक्ष की ओर प्रेरित किया। तृतीय दिवस सामायिक दिवस में पचरंगी सामायिक का आयोजन किया गया, जिसमें संपूर्ण समाज ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चतुर्थ दिवस वाणी संयम दिवस में उपासक जी ने वाणी के संयम और मधुर बोलने के महत्व को बताया। इस अवसर पर बहनों ने 24 से 30 घंटे तक मौन का पालन किया। पंचम दिवस अणुव्रत चेतना दिवस में छोटे-छोटे व्रतों के माध्यम से जीवन सुधार और कल्याण की शिक्षा दी गई। षष्ठम दिवस जप दिवस में नवकार मंत्र के जप और जप की महिमा को समझाया गया।

सप्तम दिवस ध्यान दिवस में ध्यान और प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें योग और कायोत्सर्ग द्वारा मानसिक शांति प्राप्त करने की विधि बताई गई। अष्टम दिवस संवत्सरी महापर्व पर उपासक द्वय ने महावीर की वाणी और उपवास की महत्ता समझाई और भिक्षु जीवन-दर्शन पर चर्चा की। पर्युषण महापर्व का संचालन उपाध्यक्ष विनीता जैन और तारा बैद ने किया। अध्यक्ष संगीता दूगड़ और मंत्री नीतू कोठारी ने तेरापंथ सभा, महिला मंडल और युवक परिषद का आभार व्यक्त किया। सैकड़ों उपासकों ने उपवास और पौषध अनुष्ठान में भाग लेकर महापर्व को सफल और प्रेरणादायक बनाया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
29 सितम्बर - 05 अक्टूबर, 2025

पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

चंडीगढ़

संवत्सरी आत्मोत्थान का एक महान महापर्व है। यह पर्व आत्म-अनुशासन, आंतरिक शांति, क्षमायाचना और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है। संवत्सरी पर्व ऐसा अवसर है जिसमें मैत्री, वात्सल्य और आत्मीयता के संबंध जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। यह दिन स्वयं का आत्मविश्लेषण करने और अपनी आंतरिक स्थिति को समझने का भी अवसर प्रदान करता है। जब हम अपने आत्म गुणों को विकसित करते हैं, तो जीवन में स्वतः ही सुख और संतोष का संचार होने लगता है। उपरोक्त विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने संवत्सरी के पावन अवसर पर व्यक्त किये। मुनि श्री ने आगे कहा कि इस दिन साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविकाएं अधिक से अधिक धर्म-ध्यान, त्याग और तपस्या में लीन होती हैं। एक-दूसरे से क्षमा मांगते हैं और दूसरों को क्षमा करते हुए मैत्रीभाव की ओर कदम बढ़ाते हैं। संवत्सरी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संदेश क्षमापना है। इसका अर्थ है कि यदि किसी ने आपके प्रति गलती की है, तो उसे माफ कर दें, और यदि आपने किसी के प्रति दुर्व्यवहार किया है, तो उनसे क्षमा मांगें। क्षमा देने के लिए क्रोध का त्याग करना और क्षमा मांगने के लिए अहंकार का त्याग करना आवश्यक है। आज के दिन प्रतिक्रमण का भी विशेष महत्व है। प्रतिक्रमण का अर्थ है अपने द्वारा किए गए अतिक्रमणों से पीछे हटना।

नागपुर

उपासक प्रवक्ता राहुल खोखावत एवं उपासक भौमिक शाह के मार्गदर्शन में जैन धर्म का अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व पर्युषण नागपुर स्थित अणुव्रत भवन प्रांगण में सानंद संपन्न हुआ। 8 दिवसीय कार्यक्रम में उपासक राहुल खोखावत एवं उपासक भौमिक शाह ने भगवान महावीर के जीवन चरित्र का विवेचन किया तथा आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष की जानकारी दी। प्रतिदिन विशेष विषयों के साथ आयोजन हुआ — खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, वाणी संयम दिवस, अणुव्रत चेतना दिवस, जप दिवस, ध्यान दिवस, संवत्सरी महापर्व और मैत्री दिवस। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। उपासकगण ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा दिए गए अणुव्रत अवदान और बारह व्रतों के महत्व को सरल शब्दों में समझाते हुए सभी को बारहव्रती बनने की प्रेरणा दी। साथ ही, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान की उपयोगिता बताते हुए जीवन में शांति स्थापित करने का मार्ग सुझाया।

संवत्सरी महापर्व पर समाज को अष्टप्रहरी पौषध की प्रेरणा दी गई। उपासकद्वय ने भगवान महावीर के भव और बाल्यावस्था का भी वर्णन किया। छोटे-छोटे बच्चों ने भी उपवास रखकर प्रवचन का लाभ लिया। द्रव्य सीमा, स्वाध्याय पचरंगी, सामायिक पचरंगी, मौन पचरंगी एवं जप दिवस पर नमस्कार महामंत्र का अखंड जाप हुआ। अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में हुआ, जिसमें उपासक द्वारा वंदना, मंत्र-जप और ध्यान योग करवाया गया। महिला मंडल की बहनों ने मैत्री गीतिका प्रस्तुत की। क्षमापना दिवस पर श्रावक-श्राविकाओं ने पूज्य गुरुदेव एवं सभी चारित्र आत्माओं से क्षमा याचना की और आपस में खमत-खामणा किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय रांका, महासभा कार्यकारिणी सदस्य शांतिलाल पारख, महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू, युवक परिषद अध्यक्ष नितेश छाजेड़, प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राहुल कोठारी, वरिष्ठ श्रावक निर्मल नखत, महिला मंडल वरिष्ठ श्राविका शोभा देवी नाहटा एवं ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका सुषमा डागा ने भी अपने विचार रखे और क्षमायाचना की। कार्यक्रम का कुशल संचालन विकास बुच्चा ने किया।

पूर्वांचल कोलकत्ता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में भिक्षु विहार में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कोलकाता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा क्षमापना दिवस पर सामूहिक खमतखामणा कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर बृहत्तर कोलकाता के गणमान्य व्यक्ति और श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मुनि जिनेश कुमार जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पर्वों की दुनिया में पर्युषण पर्व एक विशिष्ट पर्व है और इसका शिखर दिन संवत्सरी है। यह मैत्री का महान पर्व है। मैत्री वह सेतु है जो टूटे हुए दिलों को जोड़ता है, वह मंत्र है जो जन-जन के मन को पावन कर देता है और वह रसायन है जो तनावपूर्ण माहौल में मिठास घोल देता है। मुनिश्री ने कहा कि जैन धर्म में खमतखामणा का विशेष महत्व है। क्षमा सरोवर में स्नान करने के समान, खमतखामणा से मन की शुद्धि होती है। यह तनाव मुक्ति का मार्ग है और मन के सकल तनाव और संतापों को धोकर हल्केपन का अनुभव कराता है। मुनि ने आगे कहा कि खमतखामणा एक प्रकार की चिकित्सा है और दिल में आई दीवारों को जोड़ने का नाम है। संवत्सरी पर राग-द्वेष और गलतियों को भूलकर सभी से खमतखामणा करनी चाहिए। इसमें क्षमा मांगना और क्षमा देना दोनों समाहित हैं। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि क्षमा जीवन का बसंत है और खमतखामणा करने से जीवन खिल उठता है। मुनि कुणाल कुमार जी ने बताया कि खमतखामणा के छींटे राग-द्वेष की अग्नि को शमित कर देते हैं और संवत्सरी पर्व की सार्थकता इसी से जुड़ी हुई है। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मैत्री गीत के संगान से हुआ। खमतखामणा कार्यक्रम में महासभा के महामंत्री विनोद बैद, अणुव्रत विश्वभारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़, दीक्षार्थी अर्हम सिंघी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की संगठन मंत्री रमण पटावरी, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कोलकाता के मंत्री उम्मेद नाहटा, ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय सिंघी, मुख्य न्यासी बाबू लाल गंध आदि विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे। महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल ने भी सभी श्रावक-श्राविकाओं को खमतखामणा करवाया। आभार ज्ञापन पूर्वांचल सभा के मंत्री पंकज दोसी ने किया, और कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री हसमुख मुथा ने किया।

पल्लावरम

तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में उत्साहपूर्ण वातावरण में पर्वाधिराज पर्युषण का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ ट्रस्ट सभा पल्लावरम द्वारा किया गया। आठों ही दिन मुनि दीप कुमार जी के प्रवचन भगवान महावीर की आध्यात्मिक यात्रा और निर्धारित विषयों पर हुए। संवत्सरी के दिन लगभग 4 घंटे मुनिश्री का प्रवचन हुआ। मुनि काव्य कुमार जी ने भी निर्धारित विषयों पर अपने वक्तव्य दिए तथा पर्युषण में प्रतिदिन आधा घंटा अंतगडदसाओ सूत्र का वाचन किया।

रात्रि में विविधमुखी कार्यक्रम आयोजित हुए। पर्युषण में अखंड नवकार मंत्र का जप चला। सायंकालीन सामूहिक प्रतिक्रमण हुए, पचरंगी तप भी हुआ तथा 8, 9, 11 की कुल 17 तपस्याएँ हुईं। संवत्सरी पर अष्टप्रहरी, षट्प्रहरी, चतुःप्रहरी करीब 82 पौषध हुए। खमतखामणा के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

विजयनगर, बैंगलोर

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व अत्यंत श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। महापर्व का शुभारंभ 'खाद्य संयम दिवस' से हुआ। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि आहार जीवन के लिए आवश्यक है, किंतु क्या, कितना और कैसे खाना है, यह और भी महत्वपूर्ण है। अति भोजन हानिकारक है। यह पर्व हमें आहार में संयम और सीमाकरण की प्रेरणा देता है। साध्वीजी ने सभी को रात्रि भोजन वर्जन और नवरंगी से जुड़ने का संदेश दिया। साध्वी रौनकप्रभा जी ने कहा कि तप शरीर के विकारों को बाहर निकालने का साधन है, वहीं साध्वी मनीषाप्रभा जी ने ध्यान प्रयोग करवाते हुए पर्युषण को आत्मजागरण का महापर्व बताया। दूसरे दिन साध्वी संयमलता जी ने कहा कि स्वाध्याय का अर्थ है — स्वयं का अध्ययन। भगवान महावीर ने स्वाध्याय को आत्मशुद्धि और संसार सागर से पार उतरने का साधन बताया। उन्होंने मरीचि कुमार के भव का उल्लेख करते हुए अहंकार के परिणामस्वरूप हुए कर्म बंध का विशद वर्णन किया। साध्वी रौनकप्रभा जी ने कहा कि केवल पढ़ना या सुनना ही नहीं, बल्कि उसके अर्थ का चिंतन करना भी आवश्यक है। तीसरे दिन 'सामायिक दिवस' पर अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि सामायिक समता की साधना है और यह मन की अशांति व तनाव को दूर करने का श्रेष्ठ उपाय है। उन्होंने कहा कि कई बार जो कर्म तप से क्षीण नहीं होते, वे एक शुद्ध सामायिक से क्षीण हो जाते हैं।

चतुर्थ दिन साध्वी संयमलता जी ने कहा कि वाणी व्यक्तित्व का आईना है। असंयमित वाणी रिश्तों और समाज को तोड़ती है, जबकि मधुर वाणी शांति और सौहार्द का आधार है। महाभारत युद्ध को उन्होंने असंयमित वाणी का परिणाम बताया। साध्वी रौनकप्रभा जी ने मार्दव धर्म का विवेचन किया और साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि वाणी संयम का अर्थ मौन नहीं, बल्कि मधुर और नियंत्रित बोल है। इस अवसर पर महिला मंडल ने 'पर्युषण संयम एक्सप्रेस' की मनोरंजक प्रस्तुति दी और 175 श्रद्धालुओं ने चंदनबाला तेला तपो महायज्ञ में सहभागिता की। पांचवें दिन साध्वी संयमलता जी ने कहा कि अणुव्रत जीवन में नैतिकता और प्रामाणिकता का विकास करता है। उन्होंने भगवान महावीर के 'विश्वभूति' भव का वर्णन किया। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन से नए मानव का निर्माण किया। साध्वी रौनकप्रभा जी ने जीवन में नियम पालन को आवश्यक बताया, जबकि साध्वी मनीषाप्रभा जी ने दान को बारहवां व्रत बताते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला। छठे दिन साध्वी संयमलता जी ने कहा कि जप मानसिक शांति, एकाग्रता और संकल्प शक्ति का साधन है। उन्होंने कहा कि मंत्रों की ध्वनि तरंगें सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती हैं। साध्वी रौनकप्रभा जी ने सत्य धर्म का विवेचन किया और साध्वी मनीषाप्रभा जी ने ध्यान प्रयोग के साथ 63 शलाका पुरुषों की जानकारी दी। कन्या मंडल की कन्याओं ने 'ओम भिक्षु' के सवा लाख जप का अनुष्ठान किया। सातवें दिन 'ध्यान दिवस' पर साध्वी संयमलता जी ने कहा कि ध्यान आत्मा को जागृत करने का सर्वोत्तम उपाय है। उन्होंने भगवान महावीर की भव यात्रा के 26वें भव का वर्णन करते हुए बताया कि तपस्या से उन्होंने तीर्थंकर गोत्र का बंध किया। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि ध्यान मन के विकारों से मुक्ति का सरल मार्ग है, जबकि साध्वी रौनकप्रभा जी ने तप धर्म और साध्वी मनीषाप्रभा जी ने मोक्ष मार्ग के चार आधार — दान, शील, तप और भावना — पर प्रकाश डाला।

अंतिम दिन 'भगवती संवत्सरी' का आयोजन हुआ। साध्वी संयमलता जी ने भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन करते हुए इसे आत्मावलोकन और आत्मशुद्धि का दिन बताया। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि बाहरी पदार्थ क्षणिक सुख देते हैं, किंतु आत्मज्ञान ही स्थायी सुख का स्रोत है। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने आगम वाणी का श्रवण कराया और साध्वी रौनकप्रभा जी ने गणधर वाद का विवेचन किया। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उपवास, पौषध और तप का प्रत्याख्यान किया। क्षमापना दिवस पर साध्वी संयमलता जी ने कहा कि क्षमा ही ज्ञान है, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। उन्होंने कहा कि गलती होना स्वाभाविक है, किंतु उसे सुधारना और दिल की ठेस को भरना ही क्षमा का वास्तविक रूप है। साध्वी मार्दवश्री जी ने प्रमोद भावना के विकास पर बल दिया और साध्वी मनीषाप्रभा जी ने कहा कि क्षमा याचना शब्दों से नहीं, बल्कि अंतरमन से होनी चाहिए। इस पूरे महापर्व में साध्वी वृंद के सान्निध्य में सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, कन्या मंडल सहित समाज की विभिन्न संस्थाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई।

उपलब्धियों की समीक्षा और भविष्य की योजनाओं के साथ संपन्न हुआ टीपीएफ का 18वां राष्ट्रीय अधिवेशन

कोबा, अहमदाबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) का 18वां राष्ट्रीय अधिवेशन अत्यंत गरिमामयी एवं भव्य वातावरण में आयोजित हुआ। देशभर की लगभग 95 शाखाओं से आए करीब 1000 से अधिक प्रोफेशनल्स ने इस त्रिदिवसीय अधिवेशन में सक्रिय भागीदारी निभाई। अधिवेशन का शुभारंभ पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन मंगलपाठ से हुआ। इसके पश्चात वार्षिक साधारण सभा का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें संगठन की वार्षिक उपलब्धियों की समीक्षा के साथ-साथ भविष्य की योजनाओं और कार्यप्रणाली पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक में संगठनात्मक ढांचे को और सुदृढ़ बनाने हेतु कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किए गए। शाम को ज़ोनल प्रेजेंटेशन और अवॉर्ड सेरेमनी का आयोजन हुआ, जिसमें विभिन्न शाखाओं की उपलब्धियों को सराहा गया। दूसरे दिन की शुरुआत उत्साहपूर्ण रैली से हुई, जिसमें देशभर से आए टीपीएफ सदस्य नारों, बैनर और संदेशों के साथ सम्मेलन स्थल तक पहुंचे। इसके बाद उद्घाटन सत्र में पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगलपाठ एवं प्रेरणाप्रद पाथेय प्रदान किया।

आचार्य श्री ने अपने आशीर्वचन में कहा – 'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का उद्देश्य केवल व्यावसायिक उन्नति नहीं, बल्कि सदस्यों का आध्यात्मिक विकास भी है। जीवन का संतुलन तभी संभव है जब साधना और सेवा दोनों का संगम हो। 'Involve to Evolve' केवल थीम नहीं, बल्कि जीवन का पथ-प्रदर्शक है।' उन्होंने धर्म, संयम और साधना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रोफेशनल्स को अपने कार्यक्षेत्र में नैतिकता और सत्यनिष्ठा का पालन करते हुए समाज में प्रेरक भूमिका निभानी चाहिए।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने अपने प्रवचन में कहा – 'आध्यात्मिकता और प्रोफेशनलिज्म का

संगम ही स्थायी सफलता का मार्ग है। आज का युग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है, किंतु टीपीएफ को Devotional Intelligence पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।' मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी ने अनुशासन और सेवा भाव की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि संगठन तभी आगे बढ़ता है जब प्रत्येक सदस्य अपनी जिम्मेदारी आत्मीयता से निभाए।

अधिवेशन के द्वितीय दिवस में टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक डॉ. मुनि रजनीश कुमार जी ने 'टीपीएफ संगठन' विषय पर उद्बोधन दिया और संगठन की गतिविधियों पर भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। इस अवसर पर वर्ष 2025 के लिए 'टीपीएफ गौरव' पुरस्कार ऋतु चोरडिया को प्रदान किया गया। उन्होंने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए कहा – 'यह सम्मान मेरे जीवन की प्रेरणा है और गुरुदेव के आशीर्वाद का ही परिणाम है।' वरिष्ठ पत्रकार पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ ने राष्ट्र निर्माण में प्रोफेशनल्स की भूमिका पर विचार व्यक्त करते हुए कहा – 'किसी भी राष्ट्र की मजबूती केवल आर्थिक शक्ति से नहीं, बल्कि नागरिकों की जागरूकता और जिम्मेदारी से होती है।'

विशेष आकर्षण के रूप में भारत-पे के संस्थापक और चर्चित उद्यमी अशनीर ग्रोवर ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने उद्यमिता की चुनौतियों, जोखिम उठाने और नवाचार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। पैनल चर्चा के दौरान उन्होंने श्रोताओं के प्रश्नों का सहज समाधान किया और कहा – 'टीपीएफ जैसे मंच प्रोफेशनल्स को जोड़ने और प्रेरित करने का अद्भुत माध्यम हैं।' इसी दिन आचार्य महाप्रज्ञ कॉलेज – सिलीगुड़ी के सहयोगियों की घोषणा भी की गई।

संध्या सत्र में 'भिक्षु स्वामी क्विज़' का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने आधुनिक तकनीक के माध्यम से ऑनलाइन उत्साहपूर्वक भाग लिया। अधिवेशन के तीसरे दिन वन टू वन कॉन्क्लेव का आयोजन हुआ जिसकी शुरुआत 'नेटवर्किंग बिंगो' गतिविधि से हुई। इस अभ्यास ने प्रोफेशनल्स को एक-दूसरे से सहज परिचय और संवाद का अवसर दिया। इसके पश्चात ऑनलाइन क्विज़ प्रतियोगिता ने अधिवेशन को और अधिक जीवंत और ज्ञानवर्धक बनाया। भुवनेश कुमार (सीईओ, आधार) ने 'आधार और समाज में तकनीकी परिवर्तन' विषय पर प्रेरक वक्तव्य दिया। उन्होंने आधार की सामाजिक उपयोगिता, डिजिटल पहचान की सुरक्षा और JAM Trinity (जनधन-आधार-मोबाइल) की सफलता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा – 'आधार केवल डिजिटल आईडी नहीं, बल्कि नागरिक सशक्तिकरण और सुशासन का मजबूत आधार है।'

इसके बाद 'मंथन-TPF' सत्र हुआ जिसमें डॉ. मुनि रजनीश कुमार जी ने संगठन की नीतियों और भविष्य की कार्यप्रणाली पर गहन विचार रखे। इस अवसर पर नए ब्रांच प्रेसिडेंट्स की घोषणा और शपथ ग्रहण भी सम्पन्न हुआ। साध्वी समताप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित प्रेक्षा ध्यान सत्र ने उपस्थितजनों को आत्मचिंतन और मानसिक शांति का अनोखा अनुभव प्रदान किया।

अंतिम सत्र में मुनि कुमारश्रमण जी ने मार्गदर्शन देते हुए कहा – 'सफलता का आधार सत्य, संयम और सेवा है। यही स्थायी विकास का मार्ग है।' उन्होंने अधिवेशन की थीम 'Involve to Evolve' को विस्तार से समझाया और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने के सूत्र बताए। इसके उपरांत पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी ने समापन सत्र में प्रेरक संवाद किया। श्रावकों और श्राविकाओं ने अनेक प्रश्न रखे जिनका उन्होंने सहज और स्पष्ट समाधान दिया। उन्होंने विशेष रूप से कहा – 'यदि प्रतिदिन एक सामायिक हो जाए तो यह आत्मकल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। संवत्सरी के दिन उपवास, साधना और आत्मचिंतन अवश्य करना चाहिए।' आचार्य श्री का यह संदेश सभी के लिए साधना, संयम और धर्म की गहराई को जीवन में अपनाने की प्रेरणा लेकर आया। समापन सत्र में वर्षभर में उत्कृष्ट कार्य करने वाली शाखाओं का मूल्यांकन किया गया तथा दानदाताओं का सम्मान राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर चीफ ट्रस्टी एस. के. सिंघी, राष्ट्रीय निवर्तमान अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन चोरड़िया, विजय नाहटा, मनोज नाहटा, दिलीप कावड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश कठौतिया, राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद, अखिल मारू, राकेश सुतरिया सहित वेस्ट जोन अध्यक्ष दिनेश चोपड़ा, अहमदाबाद अध्यक्ष जागृत संकलेचा और अनेक ज़ोनल अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

संयोजक विमल शाह ने अधिवेशन को सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सहसंयोजक अभिषेक बुरड़ और श्रेयांश बाफना ने आयोजन की संपूर्ण रूपरेखा और व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में मिले 5 पदक

गंगाशहर।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति बीदासर के द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन ज्ञान ज्योति उच्च शिक्षण संस्थान एवम आ टी आई कालेज बीदासर में किया गया।

अणुव्रत समिति गंगाशहर के अध्यक्ष करणीदान रांका ने बताया कि तेरापंथ भवन गंगाशहर मे विराजित उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार से पाथेय प्राप्त कर कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 5 से 8) वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 9 से 12) के प्रतिभागी समिति प्रभारी व उपाध्यक्ष मनोज सेठिया व मनीष बाफना के नेतृत्व मे समिति अध्यक्ष करणीदान रांका, मंत्री कन्हैयालाल बोथरा एवं कोषाध्यक्ष विजय बोथरा की उपस्थित में रवाना हुए। मंत्री कन्हैयालाल बोथरा ने बताया कि चित्रकला, निबंध, कविता, भाषण, एकल गायन, समूह गायन इन छः विधाओं में विषयांतर्गत प्रतियोगिता आयोजित हुई जिनमें लगभग 57 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

गंगाशहर क्षेत्र से 20 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता प्रभारी मनोज सेठिया एवं मनीष बाफना ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर के लिए कुल 12 प्रतिभागी राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता हेतु चयनित हुए। इसमें से गंगाशहर क्षेत्र से 5 प्रतियोगियों ने परचम फहराया। सभी चयनित प्रतियोगियों का और अणुव्रत समिति, गंगाशहर का अणुव्रत समिति, बीदासर की ओर से मोमेंटो भेंटकर सम्मान किया गया।

वरिष्ठ वर्ग में अरुणोदय विद्या मंदिर की चंचल सोनी निबंध में, कनिष्ठ वर्ग में अर्हम इंग्लिश एकेडमी के भावेश बोथरा कविता में एवं सिद्धि शर्मा भाषण में, पूर्णश्वर विद्या मंदिर से दीपाली गहलोत चित्रकला में, समूह गायन में टीना, जशोदा, मुस्कान, दिव्या और दीपाली अहमदाबाद में आयोजित होने वाले अंतिम राष्ट्रीय स्तरीय चरण में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेंगे।

32वें विकास महोत्सव का सफल आयोजन

राउरकेला।

तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला द्वारा तेरापंथ भवन में विकास महोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल की बहनों के द्वारा मंगलाचरण संगान हुआ।

अध्यक्ष संगीता दूगड़ ने आचार्य श्री तुलसी के जीवन पर आधारित गीतिका के साथ उनका जीवन परिचय दिया। कनक बोथरा ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। सभी बहनों ने मिलकर तुलसी अष्टकम का संगान किया। उपाध्यक्ष विनीता जैन ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा दिए गए अवदानों के बारे में बताया। मंत्री नीतू कोठारी ने उपस्थित महिला मंडल को आभार ज्ञापित किया। मंच का कुशल संचालन विनीता जैन द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 सितम्बर - 05 अक्टूबर, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

भौतिक संपदा से भी अधिक मूल्यवान है संस्कारों की संपदा

मैसूर।

स्थानीय तेरापंथ सभा के तत्वावधान में मैसूर में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वी सिद्धप्रभा जी ने ज्ञानशाला को संबोधित करते हुए कहा कि अभिभावकों के लिए भौतिक संपदा से भी अधिक मूल्यवान संस्कारों की संपदा है। गणाधिपति आचार्य तुलसी की अभिनव देन ज्ञानशाला है, जहाँ बच्चों को आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ प्रशिक्षिकाओं द्वारा व्यावहारिक संस्कार भी प्रदान किए जाते हैं। उन्होंने माता-पिता को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हुए कहा कि कुछ माता-पिता केवल जन्म देकर संतान को भगवान के भरोसे छोड़ देते हैं और ध्यान नहीं देते। कुछ माता-पिता संतान को पढ़ा-लिखाकर केवल धन व भौतिक सुख-सुविधाओं तक सीमित रखते हैं, जबकि सच्चे माता-पिता वे हैं जो अपने बच्चों को संस्कारित करने में जागरूक रहते हैं और समय का नियोजन करते हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी मलययशा जी ने बच्चों को प्रेरणा दी तथा कान्ता नौलखा ने अपने विचार रखे। आगंतुकों का स्वागत सभा के उपाध्यक्ष सुरेश पितलिया ने किया। साधना दक ने आभार ज्ञापन किया और कार्यक्रम का संचालन साध्वी आस्था प्रभा जी ने किया। ज्ञानशाला के नन्हें-मुन्नें बच्चों ने आकर्षक लघु नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम से पूर्व एक भव्य रैली का भी आयोजन किया गया।

भावी पीढ़ी को बनाएं शक्ति-संपन्न

विजयनगर, बैंगलोर।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में बेंगलुरु स्तरीय ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की द्वितीय कार्यशाला का आयोजन अर्हम भवन, विजयनगर में किया गया। इस कार्यशाला में बेंगलुरु के विभिन्न उपनगरों से लगभग 65 प्रशिक्षिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत सामूहिक मंगलाचरण से हुई। ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक माणक चन्द संचेती ने अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रशिक्षिकाओं को ज्ञानशाला की महत्ता और जिम्मेदारी का बोध कराया। बेंगलुरु ज्ञानशाला संयोजिका नीता गदिया ने भी अपने विचार रखे और प्रशिक्षिकाओं का उत्साहवर्धन किया। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि बच्चों को बदलने का सबसे सशक्त माध्यम हमारा अपना व्यवहार है। साध्वी मार्दवश्रीजी ने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि जैसे गुरु रामदास ने शिवा जैसा शिष्य देकर यह सिद्ध कर दिया कि शिष्य के भीतर कितनी अपार ऊर्जा होती है, वैसे ही प्रशिक्षिकाओं का दायित्व है कि वे भावी पीढ़ी को शक्ति-संपन्न बनाकर उसके उज्ज्वल विकास का मार्ग प्रशस्त करें।

मुख्य प्रवचन में साध्वी संयमलता जी ने कहा कि नारी अनेक दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी अपने अमूल्य समय में से बच्चों के संस्कार और निर्माण के लिए कार्य करती है, और यही देश, समाज तथा संघ की महत्वपूर्ण सेवा है। उन्होंने प्रशिक्षिकाओं को प्रेरित करते हुए बताया कि इस कार्य को समर्पण और निष्ठा के साथ करने से ही इसका वास्तविक परिणाम सामने आता है।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में साध्वीश्री द्वारा एक रोचक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विजयी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस कार्यशाला में सम्मिलित होकर प्रत्येक प्रशिक्षिका ने अपने भीतर नए जोश और प्रेरणा का अनुभव किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुख्य प्रशिक्षिका सीमा टेबा ने किया तथा आभार ज्ञापन नगीना मांडोत ने प्रस्तुत किया।

गुणवत्तापूर्ण नींद से करें शरीर और मन को रिचार्ज

बोरावड़।

तेरापंथ महिला मंडल, बोरावड़ के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम 'आओ नींद को अपनी ताकत बनाएं' का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी के मंगलाचरण से हुआ। बहनों ने सामूहिक स्वर में प्रेरणा गीत का संगान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल बोरावड़ की अध्यक्षा ने अपने वक्तव्य में नींद की वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अक्सर हम नींद को समय की बर्बादी मानते हैं, जबकि यह हमारे शरीर और मन को रिचार्ज करने का एक महत्वपूर्ण जरिया है। साध्वी मधुरेखा जी ने बताया कि नींद सिर्फ शारीरिक आराम नहीं है, बल्कि यह हमारे अवचेतन मन को शांत करने और उसे नई दिशा देने का एक अवसर भी है। उन्होंने ध्यान और प्राणायाम के माध्यम से गहरी और गुणवत्तापूर्ण नींद पाने के तरीके सिखाए।

प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। बहनों द्वारा प्रेक्षा ध्यान गीत से मंगलाचरण किया गया।

अध्यक्ष ममता मेहता ने सभी का स्वागत किया और बहनों को भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी पर तेरापंथ प्रबोध सीखने की प्रेरणा दी। साध्वी कलाप्रभाजी ने ताड़ासन, मत्स्यासन, भुजंगासन जैसे आसनों का अभ्यास करवाया और उनके लाभ भी बताए। साध्वी रतिप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रत्येक जीव को नींद की आवश्यकता होती है। स्वस्थ व्यक्ति को 24 घंटों में से 6 से 7 घंटे की नींद पर्याप्त है, जबकि बच्चों और बुजुर्गों के लिए 10 से 12 घंटे की नींद आवश्यक मानी गई है। नींद शारीरिक और मानसिक स्वस्थता प्रदान करती है। नींद के दौरान दिमाग में विचारों का संप्रेषण नहीं होता, जिससे मानसिक आराम मिलता है।

अच्छी नींद के लिए समय पर सोना और समय पर जागना आवश्यक है। देर रात तक जागने से सुबह देर तक उठने की आदत बन जाती है, जिससे आलस्य और प्रमाद के कारण सभी कार्यों में देरी होती है। भोजन के संदर्भ में उन्होंने कहा कि रात में रात्रि-भोजन का त्याग करना चाहिए। साध्वीश्री ने बताया कि सादा भोजन और अच्छी नींद से व्यक्ति अनिद्रा, डिप्रेशन और अजीर्ण जैसे अनेक रोगों से बच सकता है। कई लोग नींद न आने पर गोलियों का सहारा लेते हैं, फिर भी उन्हें नींद नहीं आती। इसके लिए पुस्तक पढ़ना, जाप करना, सोते समय शुभ चिंतन करना जैसी गुड हैबिट्स अपनाने से नींद अपनी पक्की सहेली बन जाती है। साध्वीश्री ने विशुद्धि केंद्र पर जप का अभ्यास भी करवाया।

सफल संचालन पुष्पादेवी बुरड़ ने किया तथा आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष संगीता बुरड़ ने किया। कार्यशाला में बहनों की उपस्थिति उत्साहपूर्ण रही।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट तमिलनाडु राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का समायोजन

'संविधान की धार, मर्यादाओं का हो आधार' विषय पर आधारित हुई प्रतियोगिताएं

किलपॉक, चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति चेन्नई के आयोजन में अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2025 की तमिलनाडु राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन मुनि मोहजीतकुमार जी के सान्निध्य में भिक्षु निलयम किलपाक में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ, जिसके पश्चात महिला सदस्याओं ने अणुव्रत गीत द्वारा मंगलाचरण किया।

अणुव्रत समिति अध्यक्षा एवं एसीसी राष्ट्रीय सहसंयोजिका सुभद्रा लुणावत ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। मंत्री एवं एसीसी तमिलनाडु राज्य प्रभारी कुशल बाँठिया ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2025 की रूपरेखा एवं उद्देश्य की जानकारी दी।

मुनि मोहजीतकुमार जी ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि अणुव्रत उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ना सिखाता है। अणुव्रत के नियम अपनाकर अच्छे चरित्र का निर्माण संभव है और वे भविष्य में राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकते हैं। मुनि जयेशकुमार जी ने अंग्रेजी में उद्बोधन दिया, जबकि माला कातरेला ने तमिल में अपने विचार व्यक्त किए।

इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का मुख्य विषय था 'संविधान की धार, मर्यादाओं का हो आधार'। प्रतियोगिताओं में 5 जिलों — चेन्नई, तिरूवल्लूर, विल्लुपुरम, मदुरै और तिरुवन्नामलाई के 11 स्कूलों से कुल 40 बच्चों ने गायन (एकल एवं समूह), भाषण, कविता, चित्रकला और निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। छात्र कक्षा 6-8 और 9-12 के समूह में प्रतिभागी बने। निर्णायक मंडल में गौतमचन्द सेठिया, डॉ. कमलेश नाहर, दीपमाला भंडारी और मनीषा चौरड़िया शामिल रहे। साथ ही अध्यापकगण एवं अभिभावकों की भी महत्वपूर्ण उपस्थिति रही। किलपाक तेरापंथ सभा, तेयुप और अन्य गणमान्य व्यक्तित्वों को समिति की ओर से सम्मानित किया गया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त सभी विजेताओं को पारितोषिक प्रदान किए गए। इस अवसर पर किलपाक तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक परमार, तेयुप अध्यक्ष राकेश डोसी, महिला मंडल, अणुव्रत समिति पदाधिकारी और अनेक कार्यकर्ताओं की गरिमामय उपस्थिति रही। प्रथम सत्र का संचालन प्रचार प्रसार मंत्री शांति दुधोड़िया ने किया। पारितोषिक वितरण सत्र का संचालन राज्य स्तरीय एसीसी संयोजक सहमंत्री प्रदीप चौरड़िया ने किया।

धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष स्वरूप चन्द दाँती ने प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज़ पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला ज्ञानार्थी शिविर का आयोजन

चेन्नई।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय ज्ञानशाला ज्ञानार्थी शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन, साहुकारपेट में किया गया। शिविर का शुभारंभ साध्वी उदितयशा जी के मंगलाचरण से हुआ।

साध्वीश्री ने शिविरार्थियों को प्रेरणा देते हुए कहा हमें किसी भी अच्छे कार्य के लिए तैयार रहना चाहिए। साध्वीश्री ने स्वयं को तैयार करने तथा मेमोरी पावर बढ़ाने के उपाय भी बताए। साध्वी संगीतप्रभा जी ने प्रेरणा देते हुए कहा – भौतिक सुंदरता को छोड़कर अपने अंदर की सुंदरता को बढ़ाना चाहिए।

साध्वी भव्ययशा जी ने How to Treat & How to Greet विषय पर मार्गदर्शन दिया। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने How to Sit & How to Sleep विषय पर जानकारी दी।

इस त्रिदिवसीय शिविर में ज्ञानार्थियों ने रात्रि भोजन का त्याग, सामायिक पाठ, कंठस्थ, प्रतिक्रमण, द्रव्य सीमा का पालन, अनुशासन आदि धार्मिक व व्यावहारिक गतिविधियों का अभ्यास किया। वक्ता राकेश खटेड़ ने 'जैन होने पर गर्व करें' विषय पर ज्ञानार्थियों को प्रेरित किया। प्रेक्षाध्यान ट्रेनर भारती मुथा ने ध्यान सत्र का संचालन किया। जान्हवी सांड ने ज्ञानार्थियों को Self Defence की जानकारी देते हुए स्वयं की सुरक्षा हेतु कुछ सरल ट्रिक्स सिखाए। अध्यक्ष अशोक खतंग ने ज्ञानार्थियों के मंगल भविष्य की कामना करते हुए शिविर की सफलता हेतु शुभकामनाएँ व्यक्त की। मंत्री गजेंद्र खांटेड का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर में 50 ज्ञानार्थियों की उपस्थिति रही।

व्यवस्था पक्ष में ज्ञानशाला प्रभारी राजेश सांड, सह-प्रभारी अनिल बोथरा, हीरालाल छल्लाणी, मनोज सेठिया, गणेश छल्लाणी एवं प्रशिक्षिकाओं का सराहनीय योगदान रहा। सुंदर व्यवस्था के लिए तेरापंथी सभा एवं ज्ञानशाला परिवार की टीम के प्रति अभिभावकों ने कृतज्ञता व्यक्त की एवं संपूर्ण आयोजन की अत्यधिक सराहना की।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

भुवनेश्वर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा-ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में भुवनेश्वर ज्ञानशाला में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

ज्ञानशाला दिवस की शुरुआत नन्हें मुन्ने ज्ञानार्थियों ने शिवांश काम्प्लेक्स से तेरापंथ भवन तक रैली द्वारा की। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

ज्ञानार्थी पलछिन धाडेवा ने ज्ञानशाला गीत से मंगलाचरण किया। कार्यक्रम में सभाध्यक्ष रणजीतसिंह बैद, पूर्वी ओडिशा प्रांतीय ज्ञानशाला प्रभारी बच्छराज बेताला, युवक परिषद के अध्यक्ष जितेंद्र बैद एवं संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में पधारे हुए सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों का स्वागत ज्ञानशाला संयोजिका संतोष सेठिया ने किया। ज्ञानशाला दिवस पर छोटे छोटे बच्चे विराज बेंगाणी, भव्या पुगलिया, दिवित सेठिया, लक्ष्या पुगलिया, विरव बेताला, मानविक दुगड़, वंशिका सेठिया, स्वरा बेताला, रक्षिका सेठिया ने कविता, भाषण, प्रतिक्रमण पाटियों द्वारा अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। बच्चों को शिशु संस्कार बोध के प्रमाण पत्र और पारितोषिक दिए गए। बच्छराज बेताला ने ज्ञानशाला पर विशेष वक्तव्य दिया। वरिष्ठ प्रशिक्षिका संपत देवी बिनायकिया और प्रशिक्षिका संतोष चोरडिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

नयी प्रशिक्षिकाओं ने भाषण और गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की व्यवस्था ज्ञानशाला सहयोगी रतन मणोत द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन श्रेष्ठ प्रशिक्षिका नयनतारा सुखाणी ने किया।

उपासक सेमिनार का आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर।

डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में उपासक सेमिनार 'एक कदम सेवा की ओर' का आयोजन तेरापंथ भवन, गांधीनगर में किया गया। सेमिनार को संबोधित करते हुए मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि उपासक गुरु इंगित की आराधना करने वाले होते हैं। गुरु दृष्टि की पालना करते हुए पयुर्षण महापर्व के दौरान धर्म आराधना हेतु विभिन्न क्षेत्रों में जाना उपासक की महत्वपूर्ण सेवा है। मुनिश्री ने उपासकों की अनुमोदना करते हुए कहा कि उपासक अपने समय और श्रम का सदुपयोग करते हुए निर्जरा का लाभ उठा रहे हैं। उपासक श्रेणी को गुरुदेव की विशेष कृपा प्राप्त होती है। वे जिनशासन एवं तेरापंथ धर्मसंघ की उत्तम सेवा में समर्पित हैं। उन्होंने आगे कहा कि उपासकों को अपनी सादगी और संयम की छाप छोड़ते हुए सकारात्मक चिंतन के साथ कार्य करना चाहिए, ताकि धर्म आराधना अधिक से अधिक क्षेत्रों में हो सके। वरिष्ठ उपासक महेंद्र दक ने मुनि पुलकित कुमार जी के प्रति सेमिनार आयोजन के लिए कृतज्ञता व्यक्त की। उपासक श्रेणी के सभी सदस्यों ने मिलकर सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। मुनि आदित्य कुमार जी ने अपने विचार साझा किए। सेमिनार में कुल 48 उपासक एवं उपासिकाओं की सहभागिता रही। जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा की तरफ से सभी का सम्मान किया गया। मंत्री विनोद छाजेड़ ने आगामी कार्यक्रमों एवं गुरु दर्शनार्थ संघ की जानकारी दी। पुष्पा सियाल द्वारा कंठी तप आराधना करने पर सभा द्वारा तप अभिनन्दन किया गया।

गुरु दर्शनार्थ संघ यात्रा अहमदाबाद के प्रायोजक परिवार दीपक कातरेला का सम्मान भी किया गया।

स्वर संगम 2025 का आयोजन

चेन्नई।

तेरापंथ समाज की प्रतिभाओं को आगे लाने के उद्देश्य से 'स्वर संगम 2025' का आयोजन हुआ जिसमें तेरापंथ की संघीय संस्था अमृतवाणी द्वारा तेरापंथ भवन ट्रीप्लीकेन में चयनित दक्षिण भारतीय कलाकारों की प्रतियोगिता आयोजित की गई।

प्यारेलाल विनोद कुमार, संजय, सुनील पीतलिया परिवार मांडा चेन्नई के सहयोग से प्रतियोगिता में सहभागी सभी 12 प्रतिभागियों ने प्रतिभा का प्रदर्शन किया। निर्णायक की भूमिका कुलदीप सागर, एकता चोरडिया, हेमंत डूंगरवाल ने अदा की।

प्रतियोगिता में मैसूर से समागत सारिका भंडारी प्रथम स्थान, बेंगलुरु निवासी आदित्य मांडोत द्वितीय स्थान, प्रवीण वेदमूथा चेन्नई तृतीय स्थान पर विजयी रहे। यह तीनों ही प्रतिभागी आगामी राष्ट्रीय स्तर पर अहमदाबाद में आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे। स्वागत स्वर अमृतवाणी अध्यक्ष ललित दूगड़ तथा कार्यक्रम संयोजक एवं अमृतवाणी उपाध्यक्ष विमल चिप्पड ने संयोजकीय वक्तव्य के साथ आभार की रस्म अदा की। प्रायोजक एवं ट्रस्टी प्यारेलाल पितलिया परिवार तथा सहयोगी संस्था ट्रिप्लीकेन ट्रस्ट बोर्ड का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में ट्रस्टी रमेश बोहरा, विजय राज सेठिया, मुकेश बाफना, राजेंद्र भंडारी, मनोज डूंगरवाल, चंद्रेश चिप्पड, प्रवीण बाबेल का सहयोग रहा। इस अवसर पर तेरापंथ समाज चेन्नई की सभी संस्थाओं की महनीय उपस्थिति रही। कुशल संचालन जे गौतम चंद सेठिया द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
29 सितम्बर - 05 अक्टूबर, 2025

सबसे बड़ी सम्पदा होते हैं संस्कार

भायंदर, मुंबई।

'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी द्वितीय के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन भव्य रूप से संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी विद्यावती जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। इसके पश्चात् ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं द्वारा रैली निकाली गई, जिसमें सभा, तेयुप और महिला मंडल की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में मंगलाचरण भायंदर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा किया गया, जबकि सकल श्रावक समाज ने 'अर्हम अर्हम की वंदना' गीतिका प्रस्तुत की। मुख्य प्रशिक्षक मीता गुंदेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वी विद्यावती जी ने अपने पाथेय में प्रशिक्षिकाओं और ज्ञानार्थियों के श्रम की सराहना करते हुए बच्चों को दीक्षा के लिए प्रेरित किया। साध्वी प्रियंवदा जी ने उल्लेख किया कि संस्कार सबसे बड़ी सम्पदा होते हैं और उनके लिए ज्ञानशाला एक श्रेष्ठ उपक्रम है। मुंबई ज्ञानशाला द्वारा प्रेषित विषय 'भिक्षु स्वामी के दृष्टांत या सिद्धांत' पर बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। स्टार्टअप के युग में आचार्य भिक्षु की उपयोगिता पर भायंदर के ज्ञानार्थियों ने प्रभावशाली प्रस्तुति दी। साथ ही, भायंदर के ज्ञानार्थियों ने मधुर गीतिका प्रस्तुत की। 'मोक्ष जंक्शन' पर मीरा रोड के ज्ञानार्थियों ने भी प्रेरणादायक प्रस्तुति दी। मीरा रोड की प्रशिक्षिकाओं ने 'ज्ञान का दीप जलाएं' विषय पर गीतिका प्रस्तुत की। भायंदर सभा अध्यक्ष दिलीप बाफना, संगठन मंत्री विनोद डांगी, तेयुप उपाध्यक्ष ललित भंडारी और महिला मंडल अध्यक्ष संगीता बोथरा ने अपने भावपूर्ण विचार साझा किए। इसके अतिरिक्त भायंदर सभा मंत्री रूप गोठी, तेयुप मंत्री मनोज कच्छारा, भायंदर महिला मंडल अध्यक्ष संगीता बोथरा, विशेष सहयोगी टीम से ममता भंडारी एवं जोन संयोजिका मीता गुंदेचा की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन टेक्नो टीम सदस्य संगीता हिंगड़ द्वारा किया गया।

ग्रंथि विमोचन का पर्व है भगवती संवत्सरी

बालोतरा।

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी एवं साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में भगवती संवत्सरी की आराधना विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में संपन्न हुई। राजेश बाफना ने बताया कि पर्युषण महापर्व के दौरान पूरा भवन अखंड जप की तरंगों से तरंगित होता रहा।

चौबीस घंटे चलने वाले छह दिन के जप अनुष्ठान में सैकड़ों भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। तप मंदाकिनी में अनेक भाई-बहनों ने स्नान कर आत्मा को उज्ज्वल, पवित्र एवं निर्मल बनाया। संवत्सरी महापर्व के एक दिन पूर्व लगभग नब्बे भाई-बहनों की अट्ठाई तप की अनुमोदना की गई।

इसी क्रम में मीना मेहता ने प्रखर तप, बाबूलाल सालेचा ने कंठी तप, आयुषी भंडारी ने ग्यारह, मयंक वेद मुथा ने नौ, आयुषी जीरावला, प्राची संकलेचा, अंतिमा गोलेछा एवं बालक आर्यन ने अट्ठाई तप का साध्वीश्री से प्रत्याख्यान किया।

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवती संवत्सरी का महापर्व आत्मावलोकन का पर्व है, ग्रंथि विमोचन का पर्व है, आत्मा को विशुद्ध एवं विशुद्धतर बनाने का उत्सव है। राग-द्वेष की गांठों को खोलकर हल्का होने का यह उत्तम अवसर है। साध्वीश्री ने संवत्सरी के इतिहास का विश्लेषण करते हुए गणधरवाद की सारगर्भित प्रस्तुति दी।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा— "संवत्सरी महापर्व ऋजुता व मृदुता का महापर्व है। अष्ट की उपासना, वीतरागता की साधना एवं आत्मआराधना का पर्व है। यह आत्म-संपदा से संपन्न बनने का समय है—बाहर से लौटकर भीतर की ओर दृष्टिपात करने का अवसर है। आत्मा को जानने व समझने का यह स्वर्णिम अवसर है।"

साध्वीश्री ने महासती चंदनबाला की रोचक कथा का प्रभावोत्पादक शैली में प्रस्तुतीकरण किया एवं तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा का वाचन किया। साध्वीश्री ने क्षमायाचना के दिन 'खमतखामणा' के महत्व को प्रतिपादित करते हुए निशल्य बनने की प्रेरणा दी। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने तीर्थंकर चरित्र की व्याख्या की।

साध्वी ध्यानप्रभाजी ने निन्हववाद का सटीक विश्लेषण किया। साध्वी सुधाप्रभाजी ने जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों का प्रभावी शैली में प्रतिपादन किया। साध्वी समत्वयशाजी ने कल्पसूत्र का वाचन किया। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने भगवान महावीर के साधना काल की रोचक घटनाओं को सुंदर अभिव्यक्ति दी।

'खमतखामणा' का दृश्य भी बड़ा ही भावपूर्ण एवं निराला था। सभाध्यक्ष महेंद्र बैद मुथा ने संपूर्ण श्रावक समाज एवं सभी संस्थाओं की ओर से गुरुदेव, साध्वीवृंद एवं समस्त समाज से खमतखामणा की। सभा के सहमंत्री राजेश जैन ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

विकास के शिखर पुरुष थे गुरुदेव तुलसी

चंडीगढ।

आचार्य तुलसी विकास पुरुष थे। वे सभी को साथ लेकर चलते थे। उन्होंने मर्यादा को कायम रखते हुए समाज की कुरीतियों को दूर करने का कार्य किया। आचार्य तुलसी अनेक बार कहा करते थे – "धर्मगुरु तो आप मुझे कहें या न कहें, लेकिन मैं साधक हूं और समाज-सुधारक हूं।" उनकी साधना व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं थी। उन्होंने अध्यात्म और साधना को सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित करने का महनीय कार्य किया।

गुरुदेव तुलसी और विकास एक-दूसरे के पूरक थे। विकास के माध्यम से अध्यात्म की उर्मियों को फैलाना आचार्य तुलसी का परम लक्ष्य था और उन्होंने इस लक्ष्य को सफलतापूर्वक साकार किया। ये शब्द मुनि विनयकुमारजी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन के तुलसी सभागार में 32वें विकास महोत्सव की सभा को संबोधित करते हुए कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा – आचार्यश्री की साधना और क्षमताओं का जीवंत इतिहास है। इस इतिहास को एक सूत्र में पिरोना और इसकी विशद विवेचना करना बहुत कठिन कार्य है।

संक्षिप्त खबर

भिक्षु भजन संध्या में भक्ति और भावों का संगम

गंगाशहर। आचार्य भिक्षु के 300वें जन्म शताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर द्वारा भव्य भिक्षु भजन संध्या का आयोजन किया गया। तेयुप सहमंत्री कुलदीप छाजेड़ ने बताया कि इस अवसर पर चेन्नई से पधारे सुप्रसिद्ध गायक भाई राकेश मांडोत ने मुख्य कलाकार के रूप में अपनी सुरीली आवाज़ से कार्यक्रम को भक्ति रस में रंग दिया। मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु के भजनों के माध्यम से हमें उनके जीवन, उनके त्याग और आदर्श चरित्र को समझने का प्रयास करना चाहिए। तेयुप गंगाशहर के भजन संध्या प्रभारी संगीत बोथरा ने बताया कि कार्यक्रम में तेयुप के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य तथा बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे। तेरापंथ युवक परिषद की ओर से राकेश मांडोत का पताका पहनाकर एवं साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का समापन मुनि श्रेयांश कुमार जी के मंगल पाठ से हुआ।

तेरापंथ किशोर मंडल का गठन

सरदारपुरा। तेरापंथ युवक परिषद् सरदारपुरा के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल का गठन विधिवत रूप से हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से हुई। तत्पश्चात तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा के अध्यक्ष मनसुख संचेती ने संयोजक तन्मय बाफना को और उप संयोजक नितिन चोपड़ा को नियुक्त किया। इस अवसर पर सभा के मंत्री महावीर चोपड़ा, किशोर मंडल प्रभारी सतीश बाफना, निरंजन तातेड, भूपेश, योगेश, विनय, प्रशांत मेहता एवं किशोर मंडल के सदस्य मौजूद रहे।

पृष्ठ 1 का शेष

जिन द्वारा आख्यात...

मूल्यवत्ता बनाए रखने में शरीर का भी योगदान है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने तीन शरीर बताए हैं – स्थूल शरीर, यश शरीर और धर्म शरीर। जिस व्यक्ति का धर्म शरीर पुष्ट हो जाता है, प्रथम दो शरीर स्वतः ही पुष्ट हो जाते हैं। अतः हमें इस शरीर पर विशेष ध्यान देना चाहिए। क्षमा, सरलता, विनम्रता, अभय, मैत्री आदि गुणों से धर्म शरीर पुष्ट होता है; हमें इन गुणों के विकास पर ध्यान देना चाहिए।

आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रामेन डेका पहुंचे। उन्होंने आचार्यश्री को वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

आचार्यश्री ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि हम जैन धर्म के अनुयायी हैं। हमारा साधुता का जीवन बहुत उच्च कोटि का होता है। हम अपनी यात्रा में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा दे रहे हैं। ये तीनों यदि लोगों के जीवन में रहें, तो जीवन अच्छा हो सकता है। देश और राज्य में नैतिक मूल्य बने रहें। राज्यपाल महोदय का भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक संदर्भों में खूब विकास होता रहे – यह काम्य है।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रामेन डेका ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि भले ही जैन श्वेतांबर तेरापंथ की संख्या छोटी है, किन्तु देश की अर्थव्यवस्था और धार्मिक क्षेत्र में आपका योगदान बहुत बड़ा है। आप लोग अहिंसा में विश्वास करते हैं। आचार्यश्री जन-जन को अहिंसा और नशामुक्ति की प्रेरणा दे रहे हैं। हम सभी को अच्छे मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए, जिससे समाज और देश का विकास हो सके।

आचार्यश्री राज्यपाल महोदय से वार्तालाप के लिए पधारे। तब तक साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि धर्म का आचरण व्यक्ति को तब करना चाहिए जब इंद्रियां क्षीण न हों, शरीर रोगग्रस्त न हो और शरीर पर बुढ़ापा आक्रमण न करे। धर्म का चिंतन करना चाहिए। कई लोग वृद्धावस्था में धर्म करने की बात करते हैं, पर कौन जानता है कि वृद्ध बनेंगे या नहीं। अतः हमें धर्म का प्रारंभ स्वस्थ अवस्था में ही कर देना चाहिए।

मुनि मदनकुमारजी ने तपस्या की जानकारी दी। कांकरियाण-मणिनगर ज्ञानशाला की संयोजिका सावित्री लूणिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी और ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। तुलसी अमृत निकेतन कानोड़ के संचालक ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कन्या कार्यशाला 'आरोहण' का आयोजन

पूर्वी दिल्ली।

ओसवाल भवन (विवेक विहार - पूर्वी दिल्ली) के प्रांगण में कन्याओं के सर्वांगीण विकास हेतु आयोजित आरोहण कार्यशाला में पूर्वी दिल्ली क्षेत्र की 55 कन्याएं सहभागी बनीं, जिनकी आयु लगभग 14 वर्ष से 30 वर्ष के बीच थी। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ सुबह 9 बजे बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदित कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मुनिश्री ने कार्यशाला के विषय को अपने प्रवचन में समाहित करते हुए कन्याओं को उद्बोधन देते हुए कहा कि वे अपनी जीवन शैली को सही दिशा देकर, अंतर्मन में बदलाव लाते हुए अपने लक्ष्य तक आरोहण कर सकती हैं। मुनिश्री ने दो 'S' का सूत्र देते हुए समझाया कि जीवन में दो बातें अत्यंत आवश्यक हैं - संस्कार और सम्यक् ज्ञान। इसके साथ ही कृतज्ञ भाव का होना भी उतना ही जरूरी है, तभी जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है। कृतज्ञता का भाव सर्वप्रथम अपने प्रति, तत्पश्चात परिवार के प्रति और अंततः अपने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति होना चाहिए।

मुनिश्री ने संपूर्ण विषय को कहानी के माध्यम से अत्यंत रोचकता के साथ कन्याओं को समझाया और प्रेरणा दी कि जीवन के प्रत्येक पहलू पर आगे बढ़ना है। चाहे कैसी भी स्थिति आ जाए, अपने संस्कार कभी विकृत नहीं होने चाहिए। आपका कार्य और आचरण ऐसा हो कि विकृत संस्कार वाले भी आपके संपर्क में आकर संस्कारी बन जाएं। कार्यक्रम से पूर्व कन्या मंडल की कन्याओं ने भिक्षु स्वामी की आराधना में गीतिका का संगान कर मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात पूर्वी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष मंगला कुंडलिया ने मुनिश्री के समक्ष अन्य पदाधिकारियों के साथ कार्यशाला के बैनर का अनावरण किया और अपने स्वागत वक्तव्य में आरोहण शब्द की व्याख्या करते हुए इस कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जनों का स्वागत किया। कार्यशाला के द्वितीय सत्र में मुनि उदित कुमार जी ने स्मरण शक्ति, ज्ञान वृद्धि और सर्वांगीण विकास हेतु ध्यान एवं मंत्रों का प्रभावशाली प्रयोग करवाया। इसके पश्चात करियर काउंसलिंग का सत्र सीए प्रियंका जैन और सीए आदित्य जैन ने अपने विशिष्ट अंदाज में लिया। उन्होंने कन्याओं को उनके करियर संबंधी प्रश्नों के उत्तर भी प्रदान किए।

अगला सत्र मैनेजमेंट गेम्स का था, जिसे अरुण सेठिया ने बड़ी कुशलता से संचालित किया और बच्चों को खेल-खेल में प्रबंधन के गुर सिखाए। इसके पश्चात मुनिश्री के सान्निध्य में आयोजित ओपन डिस्कशन सत्र में कन्याओं ने अपने विचार और जिज्ञासाएं खुलकर प्रस्तुत कीं। मुनिश्री ने उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुना और मार्गदर्शन प्रदान किया। अंतिम सत्र पुरस्कार वितरण का था। इसमें खेलों और प्रतियोगिताओं के विजेताओं के साथ-साथ कार्यक्रम के प्रशिक्षकों को भी ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दूगड़, उपाध्यक्ष रणजीत भंसाली, शाहदरा सभा अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष पवन श्यामसुखा तथा मंडल की परामर्शक लता डोसी की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री दीपिका नाहटा ने किया। कार्यशाला के आयोजन में कन्या मंडल प्रभारी शिल्पा बाफना और सह प्रभारी सीमा नाहटा का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

वीतरागता की ओर उठे कदम वीतराग बनकर ही हों कृतार्थ

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में बालोतरा की दीक्षार्थिनी बहन मुमुक्षु राजुल खाटेड़ एवं मुमुक्षु साधना बांठिया का मंगलभावना समारोह एवं वर्धापन संयम का कार्यक्रम तेरापंथी सभा बालोतरा के तत्वावधान में आयोजित हुआ। मंगलभावना समारोह की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारी आत्मा में एक वैराग्यरूपी सुघोषा घंटा है। जब वह बजता है तो कोई विरल आत्मा उस नाद को सुनकर वैराग्य के महापथ पर प्रस्थित होती है। उन विरल आत्माओं में दो नाम जुड़ रहे हैं – मुमुक्षु राजुल और मुमुक्षु साधना। ये दोनों संयमी आत्माएं संयम की पतवार हाथ में लेकर भवसागर के पार जाने के लिए कुशल खेवैया, तारणहार आचार्य महाश्रमणजी के श्रीचरणों में अपना जीवन समर्पित करने के लिए कटिबद्ध हैं। ये संयम के रथ पर आरूढ़ होकर दीक्षा लेने वाली हैं। दीक्षा केवल वेश परिवर्तन नहीं, हृदय परिवर्तन है। यह दिखावा नहीं, दर्शन है। दीक्षा प्रदर्शन नहीं, प्रेरणा है। तेरापंथ की दीक्षा अपने आपको आनंद से जोड़ने का उत्सव है। मैं यही मंगलकामना करती हूँ कि श्रीचरणों में अपना सर्वस्व समर्पण कर पल-पल आनंद की अनुभूति करें। वीतरागता की ओर उठे ये कदम वीतराग बनकर ही कृतार्थ हों। दीक्षार्थिनियों के माता-पिता और पारिवारिकजन भी धन्यता का अनुभव कर रहे हैं कि उनके परिवार का हीरा तेरापंथ के कोहिनूर से आभामंडित होने के लिए चरणन्यास कर रहा है। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कहा कि तेरापंथ की दीक्षा मर्यादा, अनुशासन और समर्पण की दीक्षा है। गुरुचरणों में सर्वात्मना समर्पित रहकर नव-विकास करना है। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा कि सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की ओर बढ़ते इन कदमों का हम स्वागत करते हैं। धर्मसंघ में दीक्षित होकर प्रभु महाश्रमण रूपी कल्पतरु की छांव में साधना कर अभ्युदय के पथ का वरण करना है। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कहा कि संघ-माली से सिंचन पाकर संयम-पुष्प बनकर हर पल साधना की सुवास से सुवासित रहना है। साध्वी समत्वयशाजी ने सुमधुर स्वरों में अपने भाव प्रस्तुत किए। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु राजुल ने कहा कि मेरे वैराग्यरूपी अंकुर को सैकड़ों चारित्रात्माओं ने सिंचित किया है। मेरे संसार पक्षीय भ्राता मुनि ध्रुवकुमारजी ने मेरे वैराग्य को पुष्ट किया है। इस दीक्षा आदेश काल में प्रबुद्ध साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य ने मुझे नई ऊर्जा प्रदान की है। मैं पूरे बालोतरा समाज एवं अपने पारिवारिक जन के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु साधना ने कहा कि मुझे लगा संसार का मार्ग कर्मबंध का रास्ता है और दीक्षा बंधन-मुक्ति का उपाय। संयम जीवन लाभ का सौदा है। साध्वी अणिमाश्रीजी का सान्निध्य मेरे जीवन का स्वर्णिम अध्याय है। मैं संयम की साधना करती हुई निरंतर गुरु इंगितानुसार आगे बढ़ती रहूँ, यही मंगलकामना है। सभाध्यक्ष महेंद्र वेदमुथा, महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्ष निर्मला संकलेचा और तेयुप अध्यक्ष संदीप रेहड़ ने शुभकामनाएं प्रेषित कीं। पारिवारिक जन सोहनराज जैन, मीनाक्षी खाटेड़ और प्रेक्षा जैन ने अपने भाव व्यक्त किए। राजुल बाई के पारिवारिक जन ने गीत के माध्यम से अपनी लाडली की वर्धापना की। महिला मंडल और कन्यामंडल ने रोचक आरती की प्रस्तुति दी।

बोलती किताब

सुखी बनो

किसके जीवन में समस्याएं नहीं आती हैं ? बड़े-बड़े महापुरुषों के जीवन में भी समस्याएं आती हैं । हम भगवान महावीर को देखें, गौतम बुद्ध को देखें, राम को देखें, कठिनाइयां तो जीवन में आई हैं परन्तु महापुरुष वह है जो कठिनाइयों के आने पर भी शांत रहता है, दुःखी नहीं बनता । अपने मन को प्रशिक्षित कर रखता है कि मुझे दुःखी नहीं बनना है । ऐसा व्यक्ति महानता के शिखर पर आरोहण कर सकता है । संस्कृत साहित्य में कहा गया है-

यस्य त्रिवर्गशून्यानि दिनानि यान्ति यान्ति च ।
स लोहकारभस्त्रैव श्वसन्नपि न जीवति ।।

जिस प्रकार हाथी कीचड़ में फंस जाता है तो उसका निकलना कितना भारी होता है । उसी प्रकार यह आसक्ति भी एक प्रकार का कीचड़ है । उससे निकलना बहुत मुश्किल होता है । एक गृहस्थ संसार में रहता है, घर-परिवार में रहता है । उसे अनेक प्रकार के कार्य करने होते हैं । व्यापार भी करना होता है । रसोई आदि भी बनानी होती है । इन सारे कार्यों को करते हुए भी गृहस्थ अपने आपको निर्लिप्त रखने का प्रयास करे । आदमी अनासक्त जीवनशैली को स्वीकार कर लेता है तो काफी समाधिपूर्ण जीवन जी सकता है । यदि भीतर में अनासक्ति होगी तो भोग भी ज्यादा नहीं होंगे । भोग ज्यादा तभी होते हैं जब भीतर में उनके प्रति आकर्षण होता है । इसलिए आसक्ति को छोड़ने का अभ्यास करने के लिए भोग का त्याग भी आवश्यक होता है ।

प्रेक्षाध्यान की साधना अलिप्तता की साधना है । प्रेक्षा का तात्पर्य है केवल देखना । राग-द्वेष न करना, यह साधना अनासक्ति को पुष्ट करने का एक तरीका है । हम परम को पाने के लिए, परम की भूमिका पर आरोहण करने के लिए अनासक्ति का पथ स्वीकार करें । इस पथ पर चलकर हम स्वयं परम बन जाएंगे । अभी हम अपरम हैं । अपरमता से परमता को प्राप्त हो जाएंगे । संस्कृत में ठीक कहा गया **दीर्घं पश्यतु मा ह्रस्वम्** । हम दीर्घ को देखें, छोटी बात को न देखें । लक्ष्य बड़ा बनाएं, छोटा न बनाएं । परम की ओर हमारी दृष्टि हो, न कि अपरम की ओर हो । हम परमदर्शी बनें । परमदर्शी बनने के लिए साधना की अपेक्षा है । परम की दिशा में गतिमान बनें, प्रगतिमान बनें, यह हमारे लिए कल्याणकारी होगा ।

हमारी दुनिया में कुछ श्रेष्ठ लोग होते हैं, कुछ मध्यम या सामान्य स्थिति के लोग होते हैं और कुछ अधम स्थिति के लोग भी मिल जाते हैं । यह दुनिया बहुरंगी है । बहुरत्ना वसुन्धरा धरती में अनेक प्रकार के रत्न हैं तो कुछ कंकर भी हैं । एक समूह या समाज जहां होता है वहां कुछ व्यक्ति बहुत अच्छे मिल सकते हैं तो कुछ व्यक्ति सामान्य की रेखा से नीचे भी मिल सकते हैं । सामान्य की रेखा से नीचे का मतलब है जिनमें स्थिरता की कमी है, शालीनता की कमी है, सभ्यता की कमी है, विनयशीलता भी नहीं है, जिनमें ज्ञान या समझ का भी अभाव है और जिनकी वृत्तियों में उत्तेजना का प्राबल्य है । जिस प्रकार समुद्र में अच्छी चीजें मिलती है तो अवांछनीय और अनपेक्षित चीजें भी मिल सकती है । उसी प्रकार एक समूह में सब कुछ समान नहीं होता, कुछ बातों में समानता हो सकती है तो कुछ बातों में असमानता भी देखने को मिलती है । परन्तु श्रेष्ठ व्यक्तियों को देखकर मध्यम स्थिति वाले व्यक्ति स्वयं में श्रेष्ठता का विकास कर सकते हैं ।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 2 का शेष

ऊनोदरी के अभ्यास...

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने रहाटकर एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की नवीन टीम को प्रेरणा एवं आशीर्वचन प्रदान किए।

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने इस संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि जैन श्वेतांबर तेरापंथ की परंपरा लगभग 265 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई और तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु हुए। उनकी आचार्य परंपरा में नवम आचार्य श्री तुलसी हुए, जिन्होंने महिला समाज की उन्नति की नींव रखी। आज महिलाओं में शिक्षा व ज्ञान का विकास हुआ है और वे संस्था का भी प्रतिनिधित्व कर रही हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आचार्यश्री तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। महिलाओं के पास परिवार को संभालने और संवारने की विशेष जिम्मेदारी होती है, अतः इनमें सहिष्णुता, संस्कार, शिक्षा व शक्ति रहे तो अच्छी बात हो सकती है। आचार्यश्री ने निवर्तमान अध्यक्ष सरिता डागा व नव मनोनीत अध्यक्ष सुमन नाहटा को मंगल पाठ सुनाया।

इस दौरान अ.भा.ते.म.मं. के नए नेतृत्व का शपथ ग्रहण समारोह भी हुआ। इन समस्त कार्यक्रमों का संचालन निवर्तमान महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने किया।

प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से करें कषायों को उपशांत : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
15 सितम्बर, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि कई मनुष्य ऐसे होते हैं, जिन्हें कुछ वचन से कठोर कह दिया जाए तो वे कुपित हो जाते हैं। जल्दी गुस्सा आ जाना मनुष्य की एक कमजोरी होती है। कई लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें बहुत जल्दी गुस्सा नहीं आता। जिनके जीवन में मोहनीय कर्म का प्रभाव ज्यादा होता है, वे अतिशीघ्र गुस्से में आ जाते हैं। जिनकी क्रोध की प्रकृति शांत हो गई है, वे बड़े शांत होते हैं। जो व्यक्ति गुस्से में नहीं जाता, जिसके भीतर उपशम की चेतना पुष्ट होती है, वह उसके लिए बहुत ही अच्छी बात हो सकती है। साधु को शांत होना अपेक्षित है, परन्तु कभी-कभी साधु भी गुस्से में आ जाता है जब उनकी साधना अपरिपक्व होती है। साधु को शांत रहना चाहिए क्योंकि संत वह होता है जो शांत रहता है। गुरु, शिष्य को कभी कुछ कड़ा कहते हैं तो कई शिष्य-शिष्याएं इतने विनीत होते हैं कि वे गुरु की डांट को भी विनय भाव से स्वीकार करते हैं। हम सभी में सहिष्णुता का भाव होना चाहिए। कई बार छोटों को ही नहीं, बड़ों को भी सहन करना पड़ सकता है। सुनने के बाद भी धैर्य और शांति में रहना साधना की बात हो सकती है।

गृहस्थ जीवन में भी सहन करना आवश्यक होता है। व्यक्ति परिवार में रहता है। घर में बच्चे, बड़े, युवा आदि सभी तरह के लोग होते हैं। परिवार में कभी मौके पर कहना भी होता है और सहना भी होता है, फिर भी शांति से रहने का प्रयास करना चाहिए। जहां तक संभव हो सके, समन्वय रखने का प्रयास करना चाहिए। जिसे भी गुस्सा आता है, उसे अपने गुस्से को शांत रखने का प्रयास करना चाहिए।

प्रेक्षाध्यान में दीर्घ श्वास प्रेक्षा के प्रयोग से गुस्से को शांत किया जा सकता है। इसके लिए प्रयोग में निरंतरता होनी चाहिए। प्रेक्षाध्यान के द्वारा अन्य कषायों - मान, माया, लोभ को भी शांत किया जा सकता है। इसके लिए जीवन में प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करते रहने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव की मंगल सन्निधि में आज प्रेक्षा ध्यान सम्मेलन का मंचीय कार्यक्रम हुआ। प्रेक्षाध्यान से जुड़ी हुई चारों संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा अपनी विचाराभिव्यक्ति दी गई। प्रेक्षा ध्यान एकेडमी के अध्यक्ष भैरूलाल चौपड़ा, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली के अध्यक्ष के.सी. जैन व प्रेक्षा इंटरनेशनल के मंत्री गौरव कोठारी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

आचार्यश्री ने इस संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि वर्तमान में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष चल रहा है। इन वर्षों में प्रेक्षाध्यान का काफी विकास हुआ है। विदेशों में भी प्रेक्षाध्यान के ट्रेनर जाते हैं। प्रेक्षाध्यान के विकास में चारों संगठनों का योग है। संगठनों को अपने कार्य की समीक्षा भी करनी चाहिए कि वास्तव में हमने पिछले वर्षों में कितनी प्रगति की है। समीक्षा करके यथोचित इस कार्य में और अधिक गति का प्रयास किया जा सकता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मोह की मूढ़ता से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
16 सितम्बर, 2025

वीतराग साधक महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वीर भिक्षु समवसरण में 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि व्यक्ति अहंकार में चला जाता है। एक साधु जिसने आगम नहीं पढ़े हैं, साधना की परिपक्वता कम है, वह अहंकार में भी जा सकता है। किसी ने साधु की प्रशंसा कर दी, उसकी विशेष बड़ाई कर दी तो वह अहंकार में जा सकता है। अहंकार सुन्दरता का, ज्ञान का, बल का, वक्तव्य का आदि किसी भी विषय का हो सकता है। व्यक्ति को ज्ञान होने पर वह मौन रखे तो बड़ी बात हो सकती है।

बहुत पढ़ा-लिखा, अनेक विषयों का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति यदि मौन रहता है तो उसके ज्ञान की अच्छी उपलब्धि होती है। व्यक्ति को अपने ज्ञान का दिखावा नहीं करना चाहिए, प्रशंसा पाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार शक्ति होने पर भी क्षमा का भाव रखना बहुत अच्छी बात होती है। दान देने वाले में भी प्रशंसा की इच्छा नहीं होनी चाहिए। संस्कृत में कहा गया है कि ज्ञान होने पर भी मौन रखना, शक्ति होने पर भी क्षमा रखना और दान देकर भी दिखावा नहीं करना — ये तीनों बातें व्यक्ति के बड़प्पन की द्योतक होती हैं।

शास्त्र में कहा गया है कि जो व्यक्ति इन सभी चीजों में अहंकार करता है, वह मोह से मूढ़ हो जाता है। किसी व्यक्ति के जीवन में सत्ता आए, बल आए, विद्या आए, धन आए अथवा रूप आदि आए — किसी भी प्रकार की विशेषता के अहंकार से बचने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति किसी भी प्रकार का अहंकार करता है, वह मानो मोह से मूढ़ हो जाता है।

मोह की मूढ़ता से व्यक्ति को बचने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति में प्रशंसा प्राप्त करने की भावना भी हो सकती है, परन्तु प्रशंसा से अहंकार में चले जाना मूढ़ता की बात हो जाती है। तपस्या का भी अहंकार नहीं करना चाहिए। व्यक्ति को अपने जीवन में किसी भी प्रकार के अहंकार से बचने का प्रयास करना चाहिए।

आज आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित तत्त्व प्रचेता/ तेरापंथ प्रचेता कार्यशाला शुरू हुई। इस संदर्भ में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना की निदेशक पुष्पा बैंगानी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्य प्रवर ने कार्यशाला के संदर्भ में आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि महिला मंडल द्वारा चलाया जा रहा यह कार्यक्रम बहुत ही उपयोगी और गरिमापूर्ण है। चारित्रात्माएं भी इस कार्यक्रम से जुड़कर अपने ज्ञान को वृद्धिगत करती हैं। इससे अनेक व्यक्तियों में तत्त्वज्ञान का अच्छा विकास हो रहा है। इससे जुड़े हुए सभी में तत्त्वज्ञान का अच्छा विकास होता रहे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

निराशा और मुनि-युगल की अभ्यर्थना

विरोध का बवंडर और आक्रोश का तूफान। झंझावात से गुजरते-गुजरते एक बार आचार्य भिक्षु का मन निराशा से भर गया। उन्होंने सोचा– 'मेरे तत्त्व को कौन स्वीकारेगा? कौन श्रावक बनेगा और कौन साधु बनेगा? चारों ओर गहरे अज्ञान का वातावरण है।'

वे व्यक्तिगत साधना के पथ पर चल पड़े। एकान्तर तप (एक दिन उपवास, एक दिन आहार) शुरू कर दिया। चिलचिलाती धूप में नदी की बालू में लेटकर आतापना लेने लगे। सहवर्ती साधुओं ने भी आचार्य भिक्षु का अनुगमन किया।

महीनों तक यह क्रम चलता रहा। एक दिन मुनि थिरपालजी और मुनि फतहचंदजी आचार्य भिक्षु के सामने उपस्थित हुए। वे बद्धांजली होकर बोले– 'गुरुदेव! आप बुद्धिमान् हैं। आपमें क्षमता है। आप भगवान महावीर की वाणी की प्रभावना कर सकते हैं। आप शरीर को सुखाने वाली तपस्या का मार्ग न चुने। वह हम करेंगे। आप धर्म का उद्योत करें। स्वयं तरें और जनता को तारें।'

मुनि युगल की प्रार्थना आचार्य भिक्षु के अन्तःकरण को छू गई। निराशा में आशा का संचार हुआ। बादल छंट गये। सूर्य फिर अपनी हजार किरणों के साथ भूमण्डल को प्रकाशित करने लगा। न्याय और नीति का प्रकाश उस सघन अन्धकार को चीर जन-जन के मानस में प्रतिष्ठित हो गया।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

अस्तेय

अदत्त वस्तु का ग्रहण करना स्तेय कहलाता है। इससे विरत होना अस्तेय कहलाता है। अर्थात् स्वामी की अनुमति के बिना अल्प मूल्य अथवा बहुमूल्य वस्तु का ग्रहण करना अथवा उपभोग करना चोरी की श्रेणी में आता है। साधु के लिए तो यह सर्वथा त्याज्य ही होता है। श्रावक वर्ग के लिए स्थूल रूप में त्याग करने की प्रेरणा दी जाती है। जैसे दीवार में सेंध लगाना, ताला आदि तोड़कर, लॉकर आदि तोड़कर चोरी करना, किसी के अधिकार का हनन करना अथवा उसके हक का उसको नहीं देना जैसे किसी ने कोई वस्तु गिरवी रखी है, किन्तु मूल मालिक को वापस नहीं सौंपना। लेन-देन में फेर बदल करना। यह सब स्थूल अदत्तादान के अन्तर्गत आता है। एक बारहव्रती श्रावक के लिए यह अनिवार्य होता है। किंतु यदि मौलिक दृष्टि से हम सोचें तो अस्तेय व्रत जितना एक साधु के लिए होता है अथवा एक श्रावक के लिए उपयोगी है उतना ही अन्य के लिए आवश्यक है। इसे केवल धार्मिक दृष्टि कोण से न देखा जाए यह एक व्यवहारिक शिक्षा है जो समान रूप से सभी के लिए कल्याणकारी है।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह चौदह नियम चितारने का प्रयास करें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

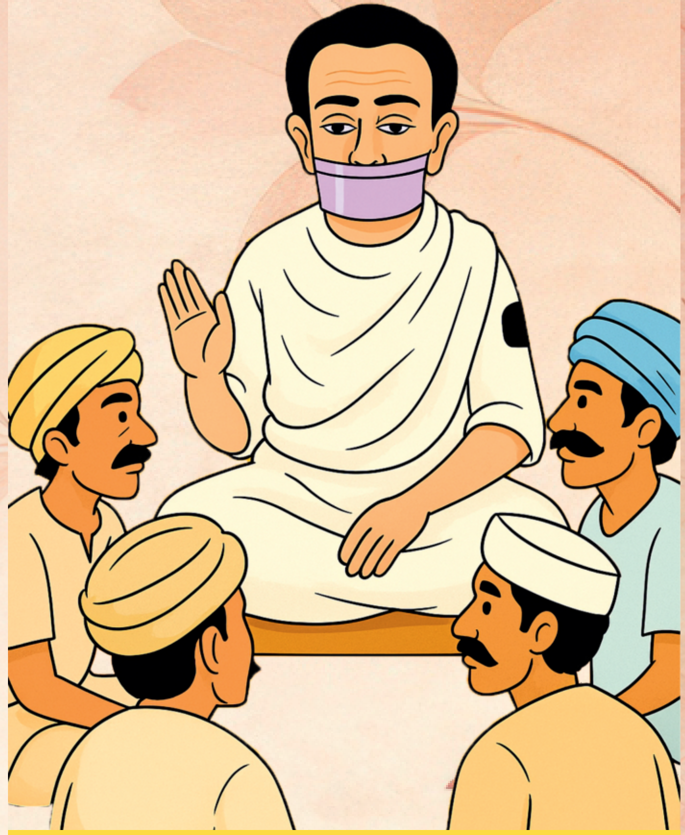

आसोजी! जी रहे हो?

मांढा में स्वामीजी रात को व्याख्यान दे रहे थे। आसोजी नींद बहुत ले रहे थे। तब स्वामीजी ने कहा– 'आसोजी! नींद आ रही है?'

आसोजी बोले– 'नहीं महाराज।'

बार-बार पूछा– 'नींद आ रही है?'

उसने बार-बार कहा– 'नहीं, महाराज!'

तब स्वामीजी ने उसके असत्य को प्रगट करने के लिए अपनी प्रत्युत्पन्नमति (Witty) का प्रयोग करते हुए पूछा– 'आसोजी। जी रहे हो?'

आसोजी बोले– 'नहीं, महाराज!'

क्या आप जानते हैं?

जिन पैकेटबंद पदार्थों व मंजन आदि पर लाल रंग का वृत्त (चिह्न) हो, वे अखाद्य होते हैं और जिन पर हरे रंग का वृत्त हो, वे खाद्य होते हैं। जिन पर लाल व हरा दोनों न हो, वे संदेहास्पद होते हैं। इसलिए जिन पर हरे रंग का चिह्न हो, वे ही चारित्रात्मा के लिए ग्राह्य होते हैं। किन्तु जिन पर लाल चिह्न हो अथवा लाल व हरा दोनों चिह्न न हो, वे पैकेटबंद पदार्थ चारित्रात्मा के लिए ग्राह्य नहीं हैं। श्रावक को भी उनके भक्षण से बचना चाहिए।

वीतरागता की ओर हो जाए दृष्टि : आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने प्रदान किए अलंकरण व पुरस्कार

कोबा, गांधीनगर।
18 सितम्बर, 2025

आगम वेत्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर के दर्शन में परिषहों को जीतने, अहिंसा, संयम और तप की बात है। उस दर्शन के प्रति आकर्षण हो जाए, इस वीतराग दर्शन के प्रति दृष्टि लग जाए। व्यक्ति की दृष्टि कहां है, यह महत्त्वपूर्ण बात होती है। दृष्टि सम्यक् है या मिथ्या? व्यक्ति का आकर्षण आत्मा की ओर है या पदार्थों की ओर? आध्यात्मिकता की ओर रूझान है या भौतिकता की ओर? सम्यक् दृष्टि होना बड़ी उपलब्धि की बात है। जिस जीव को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई है, उस जीव का मोक्ष जाना सुनिश्चित हो जाता है।

सम्यक्त्व और चारित्र की यदि तुलना करें तो ज्यादा महत्त्व सम्यक्त्व का है, क्योंकि सम्यक्त्व स्वतंत्र रह सकता है, परन्तु चारित्र स्वतंत्र नहीं रह सकता। चारित्र को सम्यक्त्व की अनिवार्यता होती है। बिना सम्यक्त्व के चारित्र नहीं हो सकता, परन्तु चारित्र के बिना सम्यक् दर्शन रह सकता है। चतुर्थ गुणस्थान में चारित्र नहीं है, पर सम्यक् दर्शन होता है और इस गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व भी हो सकता है।

गृहस्थ जीवन में सावद्य कार्य भी करने पड़ सकते हैं, परन्तु दृष्टि सम्यक् रहे। लक्ष्य मोक्ष है और मोक्ष के लिए पुरुषार्थ करना है। मुमुक्षु भाव होना चाहिए।

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि 9 दिसम्बर सन् 2025 को पौष कृष्णा पंचमी के दिन गुरुदेव तुलसी की दीक्षा को एक सौ वर्ष पूरे होने वाले हैं। वि.सं. 1982 में लाडनूं में पूज्य कालूगणी ने बालक तुलसी को मुनि दीक्षा प्रदान की थी। आचार्य तुलसी की दीक्षा के एक सौ वर्ष पूर्ण होने के संदर्भ में साधु-साध्वियां 'मुमुक्षु के महत्त्व' को व्याख्यायित करने का प्रयास करें और मुमुक्षु बनने की प्रेरणा भी प्रदान करें। ज्ञानशाला के बच्चों के माध्यम से भी इस विषय पर प्रस्तुतियां की जा सकती हैं कि गुरुदेव तुलसी ने दीक्षा किस प्रकार ली और किस प्रकार विकास किया।

मोक्ष पाने की भावना मुमुक्षा होती है। आगम में कहा गया है कि मोक्ष की ओर दृष्टि हो जाए, वीतरागता और आध्यात्मिकता की तरफ दृष्टि हो जाए, तन्मूर्ति बन जाए, उसी को सामने रखे, उसकी स्मृति में एकरस हो जाए और चित्त को उसमें नियोजित कर दे। बाहर के कार्य करते हुए भी भीतर में मोक्ष की ओर आगे बढ़ने की भावना रहे, ऐसी सम्यक् दृष्टि बन जाए। भौतिकता में रहते हुए भी आध्यात्मिकता की ओर दृष्टि रखें। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल भी मुमुक्षु बनाने की दिशा में प्रयास करे। साधु-साध्वियां, समणियां भी इस दिशा में प्रयास करें। अध्यात्म का जो भी कार्य हाथ में लें, उसके प्रति समर्पण का भाव होना चाहिए तो वह कार्य अच्छा सम्पन्न हो सकता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अधिवेशन के सहभागीगणों को भी प्रेरणा प्रदान करते हुए गुरुदेव ने फरमाया कि जो भी दायित्व मिले, उसके प्रति पूर्ण रूप से समर्पण और निष्ठा का भाव रखना चाहिए। वर्तमान पदाधिकारियों का कार्यकाल समाप्ति पर है, आगे जिन्हें भी जिम्मेदारी प्राप्त हो, उन्हें धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। जाने वालों में संतोष और आने वालों में उत्साह रहना चाहिए। हमारे भीतर सत्कार्यों, अध्यात्म और आत्मा के प्रति एक समर्पण का भाव रहे ताकि हम मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकें।

साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सबसे बड़ी शक्ति त्याग की शक्ति होती है, क्योंकि त्यागी छोड़ने का प्रयास करता है और भोगी बटोरने का प्रयास करता है। त्याग की शक्ति के सामने अन्य शक्तियाँ टिक नहीं सकतीं। जिस व्यक्ति के भीतर प्रत्याख्यान की चेतना जाग जाती है, वह आश्रव द्वारों को रोक देता है और समर्थ हो जाता है। हमारे भीतर भी प्रत्याख्यान की चेतना जागनी चाहिए। साध्वीवर्याजी ने 'सुमंगल साधना' की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

परम पूज्य आचार्य प्रवर की सन्निधि में आज अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के 50वें त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन 'ऊर्ध्वारोहण' का शुभारंभ हुआ। अधिवेशन के मंचीय उपक्रम के संदर्भ में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा रजनी दूगड़ को इस वर्ष का 'श्राविका गौरव' अलंकरण प्रदान किया गया। उनके अभिनन्दन पत्र का वाचन ट्रस्टी आरती कठौतिया ने किया। 'सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार' के अन्तर्गत दिवा जैन बैंगानी तथा निधि राखेचा को सम्मानित किया गया। इनके अभिनन्दन पत्र का वाचन क्रमशः ट्रस्टी ज्योति जैन व ट्रस्टी कल्पना बैद द्वारा किया गया। सभी पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में मंगल प्रेरणा प्रदान की।

परम पूज्य गुरुदेव ने इस संदर्भ में पावन आशीष प्रदान करते हुए कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से अलंकरण व पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। श्रद्धा, सेवा आदि की भावना बनी रहे। अपने जीवन को त्याग, संयम और साधना से अच्छा बनाने का प्रयास होना चाहिए। त्याग और संयम आदि मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से आते हैं, जबकि प्रतिभा ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त होती है। अपनी बुद्धि का सदुपयोग होना चाहिए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल खूब धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नयन करता रहे। आज के संदर्भित कार्यक्रम का संचालन अभातेममं की महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : झलकियां

आचार्य प्रवर के श्री चरणों में राजनीति जगत के व्यक्तित्व

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।